सामाजिक विज्ञान (भाग–1)

(इतिहास एवं नागरिक शास्त्र)

कक्षा 7

सत्र 2021–22

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

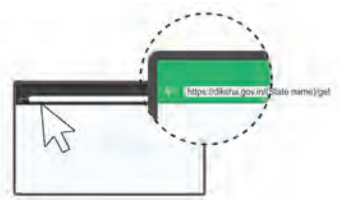

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

नि:शुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष–2021

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग

छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र, रायपुर
श्री सी.एन. सुब्रह्मण्यम, श्री अरविंद सरदाना, श्री संजय तिवारी,
श्री गौतम पाण्डेय, श्री राममूर्ति शर्मा, एकलव्य, (म.प्र.) एवं
डा.किशोर कुमार अग्रवाल रायपुर

M8HUHP

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

समन्वयक

उपेन्द्र सिंह क्षत्री, ख्रीस्टीना बखला

सम्पादक मण्डल

शिव कुमार वर्मा, उपेन्द्र सिंह क्षत्री, डॉ. सुखदेवराम साहू

लेखक समूह

इतिहास

डॉ. सुखदेव राम साहू, सच्चिदानन्द शास्त्री, श्रीमती ज्योति धारकर, डॉ. ऐहतेशाम रहीम खान,
डॉ. नरेन्द्र पर्वत, मेघलता बंजारे, पंचराम चतुर्वेदी

नागरिक शास्त्र

कृष्णा नन्द पाण्डेय, शोभनाथ तिवारी, डॉ.नागरत्ना गणवीर, रघुनंदन लाल वर्मा, डॉ. प्राची शर्मा,
डॉ. खिलेश्वरी साव, अमृतलाल साहू, भारती दुबे, भूमिका शर्मा

आवरण एवं पृष्ठ सज्जा

रेखराज चौरागड़े (डिजाइनर)

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, अजय सक्सेना, समीर श्रीवास्तव

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

विद्यालय में बालक का सामाजिक विकास होता है। विद्यालय छात्र को समाज के साथ समुचित संबंध कायम करने में सहयोग करता है किन्तु सामाजिक जीवन से जुड़े कई प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं। जिनका उत्तर देने व छात्र को संतुष्ट करने का कार्य सामाजिक विज्ञान विषय करता है। पूर्व में प्रचलित पाठ्य सामग्री को वर्तमान में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने का कार्य राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर ने किया है।

इस लेखन में एकलव्य संस्थान होशंगाबाद, देवास (म.प्र.) एवं छत्तीसगढ़ के लेखकों ने अपनी लेखनी से योगदान किया। स्त्रोत व्यक्तियों के सहयोग द्वारा क्रमबद्ध रूप से गोष्ठियों, कार्यशालाओं और आपसी विचार–विमर्श द्वारा इस पुस्तक को साकार रूप प्रदान किया गया। कक्षा 7वीं हेतु इस पुस्तक में इतिहास एवं नागरिक शास्त्र के पाठों का समावेश किया गया है। इन पाठों को नवाचारी विधा से प्रस्तुत किया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इसे पूर्ण करने में विभिन्न विशेषज्ञों एवं संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ है। डॉ, प्रमिला कुमार के आलेख, डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र विभागाध्यक्ष (इतिहास) रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. श्याम सुन्दर त्रिपाठी (से.नि. सहा.प्रा.), डॉ. श्रीमती निरूपमा शर्मा (से.नि. प्राचार्य), सुश्री शोभा बाजपेयी, शा. मा. शाला, उड़ा, हरदा (म.प्र.) तथा संचालक, केन्द्रीय भू–जल बोर्ड, रायपुर, ग्राम पंचायत विभाग, लघु उद्योग एवं स्थानीय उद्योगपतियों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। आशा है यह पाठ्य पुस्तक बच्चों, पालकों और शिक्षकों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक लेखक मण्डल एवं विभिन्न संस्थानों के प्रति परिषद् आभारी है। इस पुस्तक के संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से अपनी बात

शिक्षा सोद्देश्य आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। जब उद्देश्य बदलता है तो शिक्षण की विषय वस्तु शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन में भी परिवर्तन करना पड़ता है। वर्तमान में शिक्षा को एक सहज प्रक्रिया के रुप में माना जा रहा है। बालक खेल खेल एवं आनंददायी वातावरण में सीख सकें। अवधारणाओं की समझ शिक्षकों में विकसित की जा रही है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए कक्षा 7 वीं की यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

शिक्षा के क्षेत्र में अब नवीन प्रयोग हो रहे हैं। क्रियात्मक अनुसंधान की योजनाएं अब क्रियान्वित कर समाधान निकाला जा रहा है। वर्तमान परिवेश में बालक काफी कुछ मीडिया से सीख रहा है अतः आवश्यकता महसूस हुई की वर्तमान परिपेक्ष्य में बालक के जिज्ञासानुकूल पाठ्यक्रम निर्मित किया जाए। इसी तारतम्य में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने एक सार्थक प्रयास किया है। एकलव्य होशंगाबाद, देवास (म.प्र.) एवं छत्तीसगढ़ के स्थानीय अधिकारियों लेखकों और संगठन के सहयोग से यह कार्य अल्प अवधि में पूर्ण किया गया है।

इसमें विषयवस्तु को समझने के लिए निर्देश दिये गए है। चित्र देखिये, तुलना कीजिए आदि के द्वारा स्थानीय परिवेश से जोड़ने का प्रयास भी किया गया है। आवश्यकतानुसार प्रश्नों को भी समाहित किया गया है। इन पाठों को बोझिल होने से बचाने तथा रोचक बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

पुस्तक में प्रत्येक पाठ का पूर्व के पाठों से संबंध है। पाठों में मूल्य शिक्षा, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण तथा राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं को बताने का सार्थक प्रयास किया गया है।

छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक धरोहर एवं सामाजिक व सांस्कृतिक परंपराओं का यथोचित समावेश किया गया है। सामाजिक भूगोल के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के चयनित संदर्भों की चर्चा की गई है।

कई उद्देश्यों में विचारात्मक एवं समस्यात्मक प्रश्न भी दिये गये हैं। ये बालक की जिज्ञासा को शांत करते हैं एवं चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं। अपने स्तर पर आप भी इस प्रकार से प्रश्न तैयार करायें तथा जो तथ्य समाहित नहीं हो पाये हैं उन्हें छात्र हित में बनाने का प्रयास कीजिये।

आशा है आप प्रदेश के बच्चों की नई अवधारणाओं व जिज्ञासाओं को शांत करने में सक्षम होंगे। आप अपने नवीन विचार अवश्य भेजें ताकि आगामी प्रकाशन में समुचित सुधार कर सकें।

धन्यवाद।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय सूची

इतिहास		**1–48**
	पुनरावृत्ति	1–3
1.	छोटे–छोटे राज्यों का विकास	4–9
2.	जीवन में आया बदलाव	10–15
3.	दिल्ली सल्तनत की स्थापना	16–20
4.	दिल्ली सल्तनत का विस्तार	21–27
5.	सल्तनत कालीन जन–जीवन	28–31
6.	मुगल साम्राज्य की स्थापना	32–39
7.	विरोध और विद्रोह का समय	40–43
8.	मुगलकालीन जन–जीवन	44–48
नागरिक शास्त्र		**49–118**
1.	देश और राज्य	49–57
2.	राज्य की सरकार भाग–एक	58–70
3.	राज्य की सरकार भाग–दो	71–75
4.	उद्योग एक परिचय	76–84
5.	छत्तीसगढ़ के छोटे एवं बड़े उद्योग	85–94
6.	सामान्य चेतना	95–100
7.	समाज और महिलाओं की भूमिका	101–107
8.	मीडिया और विज्ञापन	108–113
10.	ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग	114

सीखने के प्रतिफल

सुझाए गए शैक्षणिक प्रकियाएँ **(Suggested Pedagogical Processes)**	अधिगम परिणाम **(Learning Outcomes)**
	शिक्षार्थी ये कर पाएँगे –
• अर्थपूर्ण स्पष्टीकरण और उपयुक्त संसाधनों का उपयोग करते हुए प्रमुख अवधारणाओं जैसे पारिस्थितिकी तंत्र, वातावरण, आपदाएँ, मौसम, जलवायु, जलवायु क्षेत्रों आदि को समझना।	SST701. आरेख में पृथ्वी के प्रमुख आंतरिक परतों चट्टानों के प्रकार, वायुमंडल की परतों को इंगित करता है।
• पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनके अवलोकन और अनुभवों पर चर्चा करना और साझा करना। उदाहरण विभिन्न पारिस्थितिक तंत्र/जलवायु क्षेत्रों में प्राकृतिक और मानव निर्मित वातावरण, वनस्पतियों और जीवों के घटकों, प्रदूषण के प्रकार, उनके परिवेश में ताजे पानी के स्रोत आदि।	SST702. विश्व मानचित्र या ग्लोब पर विभिन्न जलवायु क्षेत्रों का वितरण और सीमा निर्धारित करता है।
• ऐतिहासिक स्थानों/राज्यों, जलवायु क्षेत्रों और अन्य संसाधनों की पहचान करने के लिए दुनिया के नक्शे का उपयोग।	SST703. भूकंप, बाढ़, सूखे आदि आपदाओं की स्थिति में किए जाने वाले निवारक कार्यों को समझता है।
• पृथ्वी की आंतरिक रचना विभिन्न प्रकारों के भू आकृतियों का निर्माण, समुद्र में पानी की गति आदि को समझने के लिए आरेख/मॉडल/ दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना।	SST704. विभिन्न कारकों/घटनाओं के कारण स्थलाकृतियों के गठन का वर्णन करता है।
• आस–पास से विभिन्न प्रकार की चट्टानों के नमूने को इकट्ठा करना और उसकी पहचान कराना।	SST705. वायुमंडल की संघटन और संरचना बताता है।
• भूकंप या अन्य आपदाओं के लिए नकली ड्रिल (Mock drill) में भाग लेना।	SST706. पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके बीच क संबंध का वर्णन कर पाता है।
• प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों कारकों पर विचार करना जो सूनामी, बाढ़, भूकंप आदि जैसी आपदाओं का कारण बनती हैं। इससे बचाव का पूर्वाभ्यास करना।	SST707. अपने परिवेश में प्रदूषण में योगदान करने वाले कारकों का विश्लेषण करता है और इसे रोकने के उपायों की समीक्षा करता है।
• दुनिया के विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों में लोगों के जीवन में समानताएँ और अंतरों की चर्चा कराना।	SST708. जलवायु, भू–आकृति आदि विभिन्न कारकों के कारण वनस्पतियों और जीवों में विविधता होती हैं इसे समझता है।
• पुस्तकों व आस–पास उपलब्ध इतिहास के विभिन्न स्रोतों की पहचान – उदाहरण स्वरुप पांडुलिपियों/ नक्शे/ चित्रों/ पेंटिंग/ ऐतिहासिक स्मारकों/ फिल्मों, जीवनी, नाटकों, दूरदर्शन, लोक नाटक आदि की मदद से पुराने समय की व्याख्या करना।	SST709. आपदाओं और आपदाओं के कारकों को समझता है।
• नए राजवंशों के उद्भव के बारे में जानना और इस समय के महत्वपूर्ण घटनाओं को एक समय सारणी में अंकित करना।	SST710. वायु, जल, ऊर्जा, वनस्पति और जीव जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की जरूरत के प्रति संवेदनशीलता है।
• रजिया सुल्तान, अकबर आदि के समय की प्रमुख घटनाओं का अभिनय करना/नाटक करना।	SST711. अलग–अलग जलवायु क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन के बीच अंतरसंबंध को प्रदर्शित करता है।
	SST712. कारकों का विश्लेषण करता है जो विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करते हैं।
	SST713. इतिहास में विभिन्न अवधि का अध्ययन करने के लिए प्रयुक्त स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करता है।
	SST714. मध्यकाल के दौरान विभिन्न स्थानों में होने वाली महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं में आपसी संबंध देख पाता है।
	SST715. आदिवासी, खानाबदोश चरवाहा और बंजारा आदि के आजीविका के पैटर्न और क्षेत्र के भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध की व्याख्या करता है।
	SST716. मध्य काल के दौरान सामाजिक–राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करता है।

- मध्ययुगीन काल में समाज में हुए परिवर्तनों पर गौर करना और वर्तमान समय के साथ तुलना करना।
- परियोजनाएँ तैयार करना – राजवंशों/राज्यों/ जैसे खिलजियों, मुगल के प्रशासनिक सुधारों और उस समय की वास्तु शिल्प विशेषताओं आदि पर।
- संतों के भजन, कीर्तन या कव्वाली के माध्यम से नए धर्मों व विचारों के आंदोलनों में योगदान करने वाले कारकों पर विचार करना, दरगाह/गुरुद्वारा/ भक्ति या सूफी संतों से जुड़े मंदिर में जाना और विभिन्न धर्मों के मुख्य विचारों पर चर्चा करना।
- लोकतंत्र, समानता, राज्य सरकार, जेंडर, मीडिया और विज्ञापन की अवधारणाओं पर चर्चा में भाग लेना।
- संविधान, प्रस्तावना, समानता के अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष के महत्व पर तस्वीर के साथ पोस्टर तैयार करना।
- नक्शे में राज्य/केंद्रशासित प्रदेश की विधानसभा क्षेत्र को पहचानना।
- नकली चुनाव और युवा सम्मेलन का आयोजन करना।
- मीडिया की भूमिका के बारे में वाद–विवाद (debate) आयोजित करना।
- लोकतंत्र में समानता, बालिकाओं से भेदभाव जैसे–मुद्दों के बारे में गीतों और कविताओं के साथ अभिनय करना।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं और महिलाओं के जीवन स्तर के बारे में मौखिक और लिखित रूप में विचारों को व्यक्त करना।
- बेहतर समाज के लिए काम करने वाली महिलाओं के बारे में मौखिक और लिखित प्रस्तुतियाँ तैयार करना।
- राज्य सरकार द्वारा चुनिंदा मुद्दों पर (जैसे–स्वास्थ्य, भोजन, कृषि, सड़क) किए गए कार्य के बारे में अखबार से कोलाज तैयार करना और स्थानीय विधायक द्वारा किए गए कुछ सार्वजनिक कार्यों की सूची तैयार करना।
- जोड़ी या समूह में पानी और ऊर्जा को बचाने की आवश्यकता के बारे में परियोजना तैयार करना।
- स्वच्छता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा के बारे में जागरुकता के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।
- अपने इलाके में राज्य सरकार के किसी भी कार्यालय (जैसे बिजली कार्यालय) का भ्रमण कराना और उसके कामकाज को देखना तथा संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना।
- परिभ्रमण के माध्यम से स्थानीय बाजारों के बारे में केस अध्ययन और परियोजनाएँ बनाना।

SST717. खिलजी, तुगलक, मुगल आदि विभिन्न राज्यों में संचालित सैन्य नियंत्रण के लिए प्रशासनिक व्यवस्था और रणनीति का विश्लेषण कर पाता है।

SST718. विभिन्न शासकों की नीतियों के बीच तुलना कर पाता है।

SST719. उदाहरणों के साथ मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शैली और तकनीक में विशिष्ट विकास का वर्णन करता है।

SST720. उन कारकों का विश्लेषण करता है जिससे नए धार्मिक विचार और आंदोलन (भक्ति और सूफी) उभरे।

SST721. भक्ति और सूफी संतों की कविता से तत्कालीन समाज के बारे में निष्कर्ष निकालता है।

SST722. लोकतंत्र में समानता के महत्व को स्पष्ट कर पाता है।

SST723. राजनैतिक समानता, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के बीच में अंतर करता है।

SST724. समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करता है।

SST725. स्थानीय सरकार और राज्य सरकार के बीच अंतर कर पाता है।

SST726. विधानसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करता है।

SST727. राज्य की विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचानता है और स्थानीय विधायक का नाम जानता है।

SST728. समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं से होने वाले भेदभावों के कारणों और परिणामों की व्याख्या कर पाता है।

SST729. समाज के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं की पहचान कर पाता है।

SST730. उचित उदाहरणों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं पर मौखिक एवं लिखित रूप में विचार अभिव्यक्त कर पाता है।

SST731. समाचार पत्रों से उचित उदाहरण के साथ मीडिया के कामकाज की व्याख्या करता है।

SST732. विज्ञापन की रचना करता है।

SST733. विभिन्न प्रकार के बाजारों में अंतर करता है।

SST734. यह चिन्हांकित करता है कि कैसे माल विभिन्न बाजारों से गुजरता है।

विषय–सूची (Contents)

क्रमांक	अध्याय	LOs	पृष्ठ क्र.
	इतिहास		
1.	छोटे–छोटे राज्यों का विकास	SST713	4-9
2.	जीवन में आया बदलाव	SST714,SST715	10-15
3.	दिल्ली सल्तनत की स्थापना	SST718	16-20
4.	दिल्ली सल्तनत का विस्तार	SST717,SST718	21-27
5.	सल्तनत कालीन जन–जीवन	SST719,SST720,SST721	28-31
6.	मुगल साम्राज्य की स्थापना	SST717,SST718	32-39
7.	विरोध और विद्रोह का समय	SST718	40-43
8.	मुगलकालीन जन–जीवन	SST716,SST717,SST718	44-48
	नागरिक शास्त्र		
1.	देश और राज्य	SST727	49-57
2.	राज्य की सरकार भाग–एक	SST725,SST726,SST727	58-70
3.	राज्य की सरकार भाग–दो	SST726,SST727	71-75
4.	उद्योग एक परिचय	SST733	76-84
5.	छत्तीसगढ़ के छोटे एवं बड़े उद्योग	SST734	85-94
6.	सामान्य चेतना	SST723,SST724,SST728	95-100
7.	समाज और महिलाओं की भूमिका	SST728,SST729,SST730	101-107
8.	मीडिया और विज्ञापन	SST731,SST732	108-113
9.	ट्रांस जेण्डर/थर्ड जेण्डर	SST722	114
	भूगोल		
1.	पर्यावरण	SST706,SST707	1-6
2.	हमारी पृथ्वी के अंदर	SST701	7-11
3.	हमारी बदलती पृथ्वी	SST703,SST704,SST709	12-19
4.	वायु	SST705,SST706,SST707,SST710	20-29
5.	जल	SST703,SST706,SST707,SST710	30-38
6.	प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन	SST702,SST708,SST710,SST712	39-46
7.	माननीय पर्यावरण – बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार	SST712	47-54
8.	मानव–पर्यावरण अन्योन्यक्रिया – उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्ण प्रदेश	SST706,SST711,SST712	55-64
9.	शीतोष्ण घासस्थलों में जीवन	SST711,SST712	65-70
10.	रेगिस्तान में जीवन	SST711,SST712	71-77

KHLV5H

KHVR75

KX5H8S

HP38QL

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

क्र.	अध्याय	उप–विषय	लर्निंग आउटकम्स	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
				याद करना, स्मरण करना, खोजना, लेबल लगाना वर्णन करना	समझना, व्याख्या कर पाना, संक्षेप करना, सुमेलित करना	लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना	मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1.	छोटे–छोटे राज्यों का विकास	प्रमुख राजवंश – चोल, प्रतिहार, राष्ट्रकुट	713	चोल, प्रतिहार, राष्ट्रकुट राजवंशों के बारे में जान पाते है।	विभिन्न राजवंशों के कार्य, शासन व प्रशासन को समझ पाते है।	विभिन्न राजवशों के स्थापत्य कालों की तुलना करते हैं।	राजवंशों के शासन नीति की समीक्षा करते है।
2.	जीवन में आया बदलाव	जंगल, गांव व शहर के लोगों के जीवन में बदलाव व व्यापार भक्ति आंदोलन	714, 715	गांव, शहर के लोगों के जीवन में आये बदलाव को जानते हैं।	गांव व शहर के व्यापार व्यवस्था को समझते है।	बौद्ध काल एवं मध्य काल के आध्यात्मिक प्रभाव में अंतर करते है।	मध्य काल के मंदिर एवं स्थापत्य कला का विश्लेषण करते है।

भोरमदेव मंदिर, कबीरधाम (कवर्धा)

इतिहास

पुनरावृत्ति

पिछली कक्षा में आपने पढ़ा...

चित्र–1 आदि मानव

आदि मानव पत्थरों एवं लकड़ी के औजारों से शिकार करते थे। वे कंदमूल, फल और माँस खाकर अपना जीवन बिताते थे।

कुछ समय बाद उन्होंने खेती करना शुरू किया और स्थायी रूप से एक जगह बसने लगे। इसके बाद सिंधुघाटी में शहर बसे जहाँ की सड़कें चौड़ी और सीधी थीं। सिंधुघाटी के शहरों में अच्छे कारीगर भी रहते थे, जो ताँबा, एवं काँसा जैसे धातुओं से औजार, बर्तन और मूर्तियाँ बनाते थे।

सिंधुघाटी के शहरों के नष्ट हो जाने के बाद सिंधु, सतलज, झेलम, व्यास और सरस्वती आदि नदियों के किनारे आर्य संस्कृति विकसित हुई। इस क्षेत्र को सप्तसिन्धु प्रदेश कहते थे। वे संस्कृत भाषा बोलते थे। आर्यों का मुख्य काम पशुपालन था। ये समय–समय पर अपने देवी देवताओं के लिए यज्ञ भी करते थे। उन्होंने ऋग्वेद नामक ग्रंथ की रचना की।

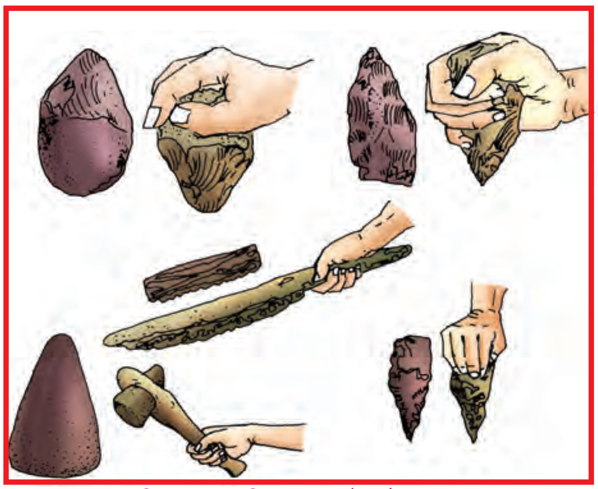

चित्र–2 आदि मानव के औजार

बाद में गंगा यमुना नदी के किनारे आर्य संस्कृति का विस्तार हुआ। अब वे मुख्य रूप से खेती करने लगे और गाँवों में रहने लगे। इस प्रकार जनपद बने। अब जन के मुखिया राजा कहलाने लगे तथा उसके रिश्तेदार और सहयोगी राजन्य कहलाते थे। वे खेती करने वाले गृहपतियों से भेंट लेने लगे। वे बड़े–बड़े यज्ञ करते थे। आज से लगभग 2600 वर्ष के पहले 16 महाजनपद बने। इनमें कोशल, वत्स और मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद थे। महाजनपदों में कुछ राजतंत्र और कुछ गणतंत्र शासन वाले थे। महाजनपद काल में धातु के सिक्कों का प्रचलन हुआ और व्यापार का विकास भी हुआ।

गाँव धीरे–धीरे नगरों का रूप लेने लगे। इनमें उज्जैन, पाटलीपुत्र, वैशाली महानगर कहलाते थे। इन्हीं दिनों स्वामी महावीर एवं भगवान बुद्ध हुए जिन्होंने जैन धर्म और बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ दीं।

चित्र–3 सिंधुघाटी सभ्यता की मुहरें

कालांतर में यूनान के राजा सिकंदर ने उत्तर पश्चिम क्षेत्र पर आक्रमण किया।

इसके बाद मौर्य साम्राज्य बना। इसी वंश में सम्राट अशोक हुए जिन्होंने युद्ध के बदले धर्म एवं सद्व्यवहार के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीतने की कोशिश की। उन्होंने अपनी प्रजा तक अपने विचार पहुँचाने के लिए पत्थर के खम्भों एवं चट्टानों पर संदेश खुदवाए।

चित्र–4 अशोक का स्तंभ, सारनाथ

सम्राट अशोक के कई सौ साल के बाद मगध राज्य में गुप्त वंश का शासन स्थापित हुआ। इस वंश के एक प्रमुख शासक समुद्रगुप्त थे। उन्होंने अपने राज्य विस्तार के लिए दो प्रकार की नीतियाँ अपनाई। आर्यावर्त के राज्यों को हराकर अपने राज्य में मिला लिया तथा दक्षिणापथ के राजाओं को हराकर उनका राज्य उन्हें लौटा दिया। गुप्त वंश की समाप्ति के पश्चात् कई छोटे–छोटे राज्य बने, उनमें कन्नौज के राजा हर्षवर्धन प्रसिद्ध थे।

उन दिनों छत्तीसगढ़ क्षेत्र को दक्षिण कोसल कहा जाता था जिसकी राजधानी श्रीपुर (सिरपुर) थी। वहाँ के प्रसिद्ध राजा महाशिव गुप्त बालार्जुन थे। पुरातत्वविद् एवं इतिहासकारों ने इस युग को छत्तीसगढ़ का स्वर्ण युग कहा है। सिरपुर में ईंट का बना प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर इसी समय का है। सर्वधर्म समभाव तद्युगीन विशेषता थी।

चित्र–5 सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर

1 छोटे–छोटे राज्यों का विकास

(सन् 650 ई. से 1200 ई.)

KXEIAF

सन् 647 में राजा हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई। उसके बाद आने वाले 600 वर्षों तक भारत में कोई भी बड़ा राज्य नहीं बना और पूरे भारत में कई छोटे–छोटे राज्य बन गए। ऐसा क्यों हुआ? ये छोटे–छोटे राज्य कहाँ से आए? इस समय के प्रमुख राजा कौन–कौन थे? उनकी शासन व्यवस्था कैसी थी? ये सभी बातें हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

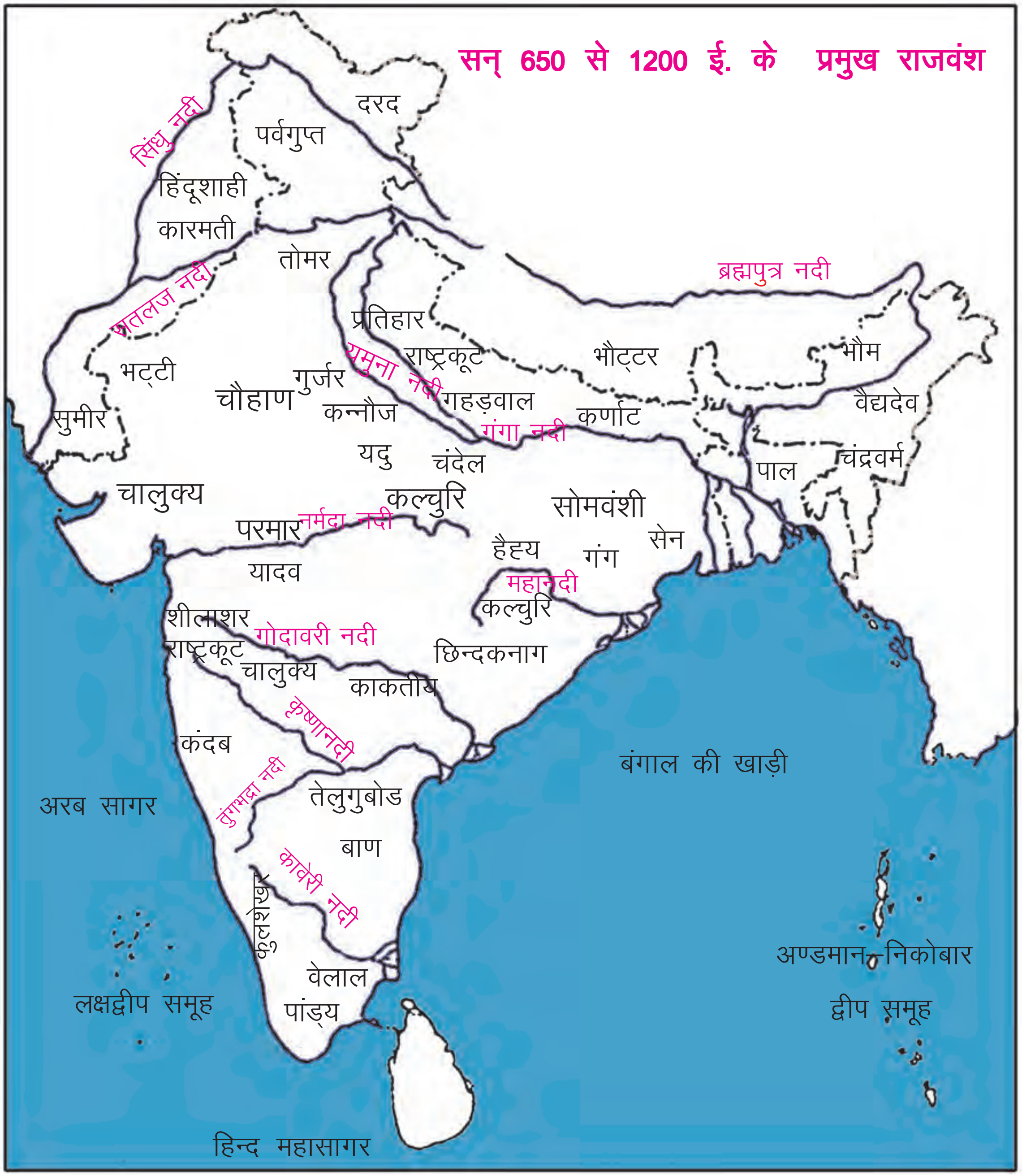

मानचित्र–1.1

मानचित्र 1.1 को ध्यान से देखें। इस काल में कितने सारे छोटे–छोटे राजवंश बन गए थे इनमें अपने छत्तीसगढ़ क्षेत्र के राजवंशों को पहचानकर उनके नाम बताइए।

नये राजा और राजवंश कैसे बने?

सन् 650 के आसपास के प्राप्त शिलालेखों और ताम्रपत्रों से पता चलता है कि इस समय भारत में कई शक्तिशाली राजा हुए, जिन्होंने अपने आस–पास के इलाकों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था। लेकिन बाद में इन राजाओं के उत्तराधिकारी उतने योग्य नहीं हुए। इस कारण उनके राज्यों के अधिकारी (प्रांत प्रमुख, सेनाप्रमुख आदि) अपने इलाकों में ज्यादा आजादी से शासन करते थे और धीरे–धीरे उस राजा की अधीनता मानने से भी इन्कार करने लगे। उदाहरण के लिए पश्चिम भारत के एक राज्य में राष्ट्रकूट वंश का शासन था, जो पहले चालुक्य राजाओं के कर्मचारी थे। परन्तु 8वीं सदी में उन्होंने अपनी ताकत बढ़ाकर अपने आपको स्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित कर लिया।

कभी–कभी ऐसा भी हुआ कि किसी शक्तिशाली योद्धा ने अपने साथियों के साथ कमजोर कबीलों और बस्तियों पर आक्रमण कर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। आगे चलकर उसने दूसरे इलाकों से ब्राह्मणों, व्यापारियों और किसानों को बुलाकर वहाँ बसाया और खुद को वहाँ का राजा घोषित कर लिया। उदाहरण के लिये राजस्थान में जोधपुर के पास घटियाला से मिले एक शिलालेख से पता चलता है कि इस क्षेत्र में प्रतिहार वंश के लोगों का शासन इसी तरह स्थापित हुआ था। जबलपुर के निकट त्रिपुरी राज्य के कल्चुरियों ने छत्तीसगढ़ में अपना शासन स्थापित किया।

राजा और राज्य बनने के कुछ और भी तरीके थे, जैसे कुछ परिवारों ने जमीन के बड़े–बड़े टुकड़ों पर अधिकार कर लिया। उन जमीनों से अच्छी फसलें प्राप्त करने के लिए सिंचाई के नये साधन जैसे कुएँ, तालाब, बावड़ी आदि बनवाए। इससे फसलें अच्छी होने लगीं और वे संपन्न होने लगे। धीरे–धीरे उन इलाकों के लोगों पर उनका दबदबा बढ़ता गया और लोग उनकी बातें मानने लगे। इन परिवारों ने अपने को श्रेष्ठ और ऊँचा सिद्ध करने के लिए अपने वंश का संबंध देवताओं व ऋषियों से जोड़ा। उदाहरण के लिए बंगाल में पालवंश एवं मध्यभारत में कल्चुरियों का उत्थान कुछ इसी तरह हुआ था।

अगर आज इस प्रकार कोई राजा बनना चाहे तो क्या लोग उसे राजा मान लेंगे?

ब्राह्मणों और भाटों की भूमिका

इन ताकतवर परिवारों को राजवंश के रूप में स्थापित करने और राज्य की व्यवस्था बनाने में ब्राह्मणों ने बड़ी सहायता की। उन दिनों धर्म, ज्ञान और राजकाज चलाने के ज्ञाता के रुप में ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसलिए उत्तर और दक्षिण दोनों ही क्षेत्रों के राजाओं ने गंगा–यमुना तट पर बसे ब्राह्मणों को अपने राज्य में बसाया।

राजा ब्राह्मणों को कभी–कभी पूरे गाँव–के–गाँव या फिर गाँवों से प्राप्त होनेवाला संपूर्ण लगान दान में दे देते थे। इन आदेशों को प्रमाण के रूप में रखने के लिए इन्हें ताम्रपत्र पर

खुदवाया जाता था। ब्राह्मण राजाओं की वंशावली बनाते थे, जिनमें उन्हें चंद्र, सूर्य या किसी महान ऋषि का वंशज बताया जाता। साथ ही समाज में राजा की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए ब्राह्मण उनसे राजसूय, अश्वमेध जैसे यज्ञ भी करवाते थे। छत्तीसगढ़ में कल्चुरि शासक रत्न देव तृतीय का ऐसा एक दान देनेवाला ताम्रपत्र हमें प्राप्त हुआ है।

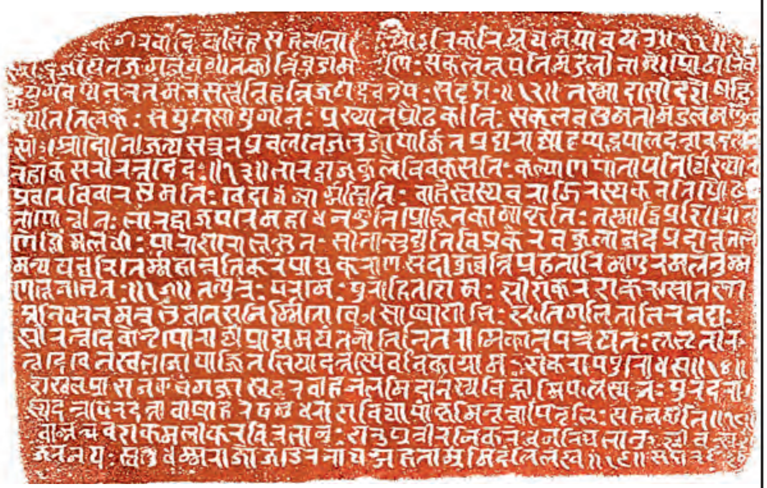

चित्र–1.1 रतनपुर के राजा रत्नदेव तृतीय का दानपत्र, (12वीं सदी), खरौद शिलालेख जिसमें दान का उल्लेख है।

भाटों ने भी राजवंशों को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युग में समूचे उत्तर भारत में भाट परम्परा दिखाई देती है। भाट दरबारी कवि होते थे जो स्थानीय भाषा में राजा व उसके पूर्वजों की प्रशंसा में गीत गाकर राजा एवं उसके वंश के प्रति लोगों के मन में श्रद्धा और गर्व के भाव जगाते थे। छत्तीसगढ़ में चारण कवि की परंपरा थी।

खैरागढ़ के राजा लक्ष्मीनिधि राय के दरबार में कवि दलराम राव थे। इन्होंने अपनी कविताओं में राजा की प्रशंसा के साथ ही पहली बार 'छत्तीसगढ़' नाम का प्रयोग किया था।

अधिपति राजा और सामंत राजा

KXNEC3

राजाओं की संख्या बढ़ने से भूमि और अधिकार क्षेत्र के विस्तार को लेकर अनेक युद्ध हुए। इन दिनों जो राजा हार जाते उन्हें आमतौर पर अपने राज्य वापस मिल जाते थे पर बदले में उन्हें विजयी राजा की कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था, कि विजयी राजा उसका स्वामी है। विजयी राजा अधिपति कहलाता था किन्तु पराजित राजा उसका सामन्त कहलाता था। यह दिखाने के लिए कि वह किसी राजा का अधीन है, पराजित राजा को अपने नाम के आगे यह बात लिखनी पड़ती थी, जैसे– "परमभट्टारक परमेश्वर महाराजाधिराज श्री भोज देव के चरणों में रहनेवाले महासामंत श्री क्षितिपाल"। इसके अतिरिक्त सामन्त अपने अधिपति के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसके पास समय–समय पर मूल्यवान भेंट भी भेजते थे। साथ ही जब भी अधिपति राजा कोई युद्ध लड़ रहा होता तो सामंतों को उसकी सहायता के लिए अपनी सेना लेकर जाना पड़ता था।

पराजित राजाओं को उनके राज्य वापस लौटा देने से विजयी राजा को क्या लाभ होता था?

प्रमुख राजवंश

सन् 800 ई. से लगभग 1000 ई. तक उत्तर, पूर्वी और मध्यभारत दक्षिण में तीन बड़े प्रभावशाली राजवंश बने। उत्तर भारत में प्रतिहार वंश, पूर्वी भारत में पाल वंश और दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश।

इन तीन वंशों के राजा कन्नौज पर अधिकार करने और उत्तरी भारत पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए आपस में लगभग 200 वर्षों तक लड़ते रहे और इसी कारण तीनों राज्यों की शक्ति भी नष्ट हो गई।

1. मानचित्र–1.1 में देखें पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट राजवंश भारत के किन क्षेत्रों में थे ?
2. मानचित्र में कन्नौज कहाँ पर स्थित है ? पहचानें।
3. ये राजवंश कन्नौज पर अधिकार करने के लिए क्यों युद्ध कर रहे थे ?

छत्तीसगढ़ में कल्चुरि वंश (हैहयवंश) के राजा राज्य कर रहे थे। इनमें कलिंगराज रत्नदेव, जाजल्लदेव आदि प्रमुख हैं। सन् 1000 ई. के आस–पास कलिंगराज ने समूचे दक्षिण कोसल पर अधिकार कर लिया। उसने तुम्माण नगर में अपनी राजधानी स्थापित की और लंबे समय तक स्वतंत्रतापूर्वक शासन किया। इसी वंश के रत्नदेव ने महाकोसल क्षेत्र में रतनपुर को राज्य की नई राजधानी बनाया। उन दिनों महाकोसल के क्षेत्र में रतनपुर की बराबरी का कोई शहर नहीं था।

कल्चुरि वंश के राजा अपने आपको 'राजपूत' कहते थे। इनके अतिरिक्त इस काल में भारत के दूसरे इलाकों में भी, विशेषकर उत्तर, उत्तर–पश्चिम व मध्य भारत में, कई राजपूत राजवंश प्रभावी हुए। इनमें से कुछ प्रमुख थे– चौहान, तोमर, परमार, गुर्जर, प्रतिहार, आदि। इन राजवंशों की विशेषता यह थी कि प्रत्येक वंश की कई शाखाएँ अलग–अलग जगहों पर राज्य करती थीं।

इस समय मध्य भारत में परमार वंश के राजाओं का शासन था। इस वंश के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध था– राजा भोज। भोज ने सन् 1000 ई. से 1035 ई. तक शासन किया। अपनी शक्तिशाली सेना के कारण ही वह एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ था। भोज एक पराक्रमी राजा होने के साथ–साथ विज्ञान, साहित्य और वास्तुकला में भी गहरी रुचि रखता था।

चित्र–1.2 रत्नदेव के शासन काल के सिक्के (12वीं सदी)

इसी समय मध्य एशिया का एक शक्तिशाली शासक हुआ जिसका नाम था महमूद गजनवी। उसने सन् 1000.ई. से 1025 तक बार–बार उत्तर–पश्चिम भारत के राज्यों पर आक्रमण किया और धन लूटकर अपने राज्य वापस चला गया। उसके राज्य में एक बड़ा विद्वान था, अलबरुनी। वह गणित, खगोल शास्त्र और अलग–अलग धर्मों का गहराई से अध्ययन करने भारत आया था। यहां आकर उसने संस्कृत भाषा सीखी और कई वर्षों तक जगह–जगह भ्रमण कर पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया। अपने देश लौटने के बाद उसने सन् 1030 ई. में अरबी भाषा में एक किताब लिखी जिसका नाम था 'तहकीक–ए–हिन्द'। इस किताब में उसने भारत के लोगों, उनके धर्म, रीति–रिवाज, विज्ञान, गणित और खगोल शास्त्र आदि के बारे में विस्तार से लिखा है।

1. मानचित्र 1.1– में देखें। परमार और कल्चुरि राजवंशों का शासन भारत के किन क्षेत्रों में था?
2. अलबरूनी से पहले भारत आकर अध्ययन करनेवाले एक विदेशी यात्री के बारे में आपने कक्षा 6 में पढ़ा था। उसका क्या नाम था और वह कहाँ से आया था?

राजवंशों की शासन नीति

इन अधिकारियों को राज्य की तरफ से नियमित वेतन नहीं मिलता था बल्कि बड़े भू–क्षेत्र या कई गाँव इनके नाम कर दिए जाते थे। इन क्षेत्रों से इनके लोग लगान आदि वसूल करते थे।

इस वक्त लगातार युद्धों के चलते रहने के कारण सेना का महत्व बढ़ गया था। राजाओं की सेना बहुत बड़ी नहीं होती थी। बड़े अधिकारियों और सामंतों के पास अपनी–अपनी सेनाएँ होती थीं जिन्हें वे जरूरत के वक्त राजा की मदद के लिए भेजते थे। सेना में पैदल सैनिकों के अलावा हाथी और घोड़ों का महत्व बढ़ गया था।

इस प्रकार की व्यवस्था का नुकसान भी था। आर्थिक रुप से स्वतंत्र होने और अलग सेना होने के कारण ये अधिकारी अक्सर अपने राजा की अवहेलना करते थे। वे हमेशा अपने लिए और ज्यादा स्वतंत्रता हासिल करने के लिए तत्पर रहते थे।

1. कक्षा 6 में आपने मौर्यों की शासन–व्यवस्था के बारे में पढ़ा था। उनकी शासन–व्यवस्था और इस समय की शासन–व्यवस्था में क्या अंतर है?
2. अधिकारियों को नियमित वेतन देने और भू–क्षेत्र उनके नाम कर देने में क्या अंतर है? दोनों के क्या फायदे और नुकसान हैं?

दक्षिण भारत के बड़े राजवंश

चोलवंश दक्षिण का सबसे शक्तिशाली राजवंश था। इस वंश के प्रमुख राजा थे– राजराज चोल, राजेंद्र चोल और कुलोत्तुंग चोल। इन राजाओं ने न केवल पूरे दक्षिण भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित किया, बल्कि सैनिक अभियानों से धन इकट्ठा करने के लिए उड़ीसा और बंगाल तक के राजाओं को हराया और अपना विशाल राज्य स्थापित किया। उन्होंने अपने समुद्री बेड़ों की मदद से समुद्र पार कर श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया, और मालदीव पर भी चढ़ाई की। श्रीलंका का एक बड़ा हिस्सा लंबे समय तक चोल राजवंशों का हिस्सा बना रहा।

चित्र–2.3
तंजावूर का वृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर

चोल राजाओं की इन सैनिक सफलताओं का आधार था उनकी शक्तिशाली थल और जल सेना। सैनिक अभियानों से मिले धन से

चोल राजाओं ने कई भव्य मंदिर बनवाए। मंदिरों में स्थापित देवताओं के नाम उन मंदिरों को बनवाने वाले राजा के नाम पर होते थे, जैसे राजराज चोल ने राजराजेश्वर मंदिर बनवाया।

अपनी सेना जुटाने और शासन के अन्य खर्चों के लिए चोल शासक प्रजा पर विभिन्न प्रकार के कर लगाते थे। भूमि पर लगनेवाला कर इनमें सबसे महत्वपूर्ण था। यह कर उत्पादन के एक तिहाई हिस्से तक होता था। इसके अलावा व्यापार पर लगनेवाला कर भी काफी महत्वपूर्ण था। इसी के साथ बड़े निर्माण कार्य जैसे – तालाब, नहर आदि को बनाते समय गाँववालों से बेगारी की मांग भी की जाती थी। ग्राम व्यवस्था एवं स्थानीय स्वशासन का इस युग में विकास हुआ।

अभ्यास के प्रश्न

KXXADQ

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. सन् 1000 ई. के लगभग मध्य छत्तीसगढ़ में .... वंश का राज्य था।
2. परमार वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक .... था।
3. अलबरूनी ने अरबी भाषा में .... नामक किताब लिखी।
4. .... वंश दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली राजवंश था।
5. प्रसिद्ध राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण .... ने कराया था।

2. निम्नलिखित में सही एवं गलत वाक्य बताइए–

1. हर्ष की मृत्यु के बाद भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बँट गया।
2. धर्म–ज्ञान और राजकाज चलाने के ज्ञाता के रूप में ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी।
3. महमूद गज़नवी पूरे उत्तर भारत पर शासन करता था।
4. चोल राजाओं ने कन्नौज पर भी अधिकार कर लिया था।

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. अलबरूनी भारत क्यों आया था ?
2. चोल राजाओं ने समुद्र पारकर किन–किन देशों पर चढ़ाई की थी ?
3. कन्नौज पर अधिकार को लेकर किन–किन राजवंशों के बीच लंबे समय तक युद्ध हुआ ?
4. राजवंश ब्राह्मणों को अपने राज्य में बसाने के लिए दान में क्या देते थे ?
5. अपने राजवंश को ऊँचा और महान बताने के लिए ताकतवर राजवंशों ने क्या किया?
6. तहकीक–ए–हिंद नामक किताब में किन–किन चीजों का वर्णन मिलता है ?
7. भाट कौन थे और उनकी क्या भूमिका थी ?
8. महमूद गज़नवी और चोल राजाओं के सैनिक अभियानों में अन्तर बताइए ?

योग्यता विस्तार–

सन् 800 से 1000 तक उत्तर, पूर्वी और मध्यभारत के प्रमुख राजवंशों के राजाओं की सूची अपनी कॉपी में बनाइए।

2 जीवन में आया बदलाव

(सन् 650 ई. से 1200 ई. तक भारत में जन–जीवन)

KY76FD

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि सन् 650 ई. के बाद राजा और राज्यों की स्थिति में अनेक बदलाव आए, जैसे बड़े साम्राज्यों के स्थान पर छोटे–छोटे राज्यों का विकास हुआ आदि।

इस काल में हमें समाज, अर्थव्यवस्था और धर्म में भी परिवर्तन दिखाई देते है। आइए देखें कि ये बदलाव किस तरह हुए।

जंगल और गाँव के निवासी

उन दिनों आज की तुलना में अधिक जंगल थे, गाँव व शहर भी थे किंतु गाँव और शहर आज की तुलना में कम और छोटे थे।

ouk e jguokys ykx– पुराने समय की तरह उन दिनों जंगलों में भी काफी लोग रहते थे। पुराने समय के लोगों की तरह ये लोग भी जंगलों से कंद–मूल, फल आदि इकट्ठा करते तथा जानवरों का शिकार कर गुजारा करते थे। लेकिन उनके जीवन में भी काफी बदलाव आया था। ये लोग जंगल के पेड़ों को काटकर थोड़ी–सी–खेती भी कर लेते थे। वे खेतों में न हल चलाते थे और न सिंचाई करते थे, सिर्फ बीज बिखेरकर रखवाली करते थे। जब फसल पक जाती तो उसे काट लेते थे। वे छोटी–छोटी बस्तियाँ बनाकर रहते थे, जिन्हें **पल्ली** कहा जाता था। वे जंगलों से तरह–तरह की चीजें इकट्ठी करते थे और इनके बदले गाँव या शहरों में अनाज, तेल, लोहा, नमक, आदि प्राप्त करते थे। वे राजाओं को भेंट भी देते थे।

इस प्रकार का जीवन जीनेवाले बहुत–से समूहों के बारे मे हमें उस काल की पुस्तकों से पता चलता है– जैसे– शबर, निषाद, पुलिंद, भील आदि।

आदिमानव के जीवन और शबर व भीलों के जीवन में क्या समानताएँ व असमानताएँ थीं?

घुमक्कड़ लोग– उन दिनों बहुत–से ऐसे लोग थे जो लगातार एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे। इनमें पशु चरानेवाले कई समूह थे। इनके जीवन में भी अब बदलाव आ रहा था। इन समूहों के कई लोग अब घुमक्कड़ जीवन छोड़कर गाँवों में बसकर खेती करने लगे थे। कुछ घुमक्कड़ समूह के लोग अच्छे कारीगर थे जो लोहे की चीजें बनाते थे या दूर के इलाकों में जाकर तालाब खोदने या साफ करने का काम करते थे। नाचने, गानेवाले नट भी आमतौर पर घूमते रहते थे तथा लोगों का मनोरंजन करते थे। इनके अलावा जोगी, सन्यासी, भिक्षुक जैसे लोग भी घर–द्वार छोड़कर घुमक्कड़ जीवन बिताते थे। गाँव व शहर के लोग इनका आदर, सत्कार करते थे।

आज आपके आसपास किस–किस तरह के घुमक्कड़ लोग रहते हैं ? वे समाज की सेवा कैसे करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

गाँव–शहर के लोग

इन दिनों गाँवों में खेती करनेवाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही थी। जहाँ पहले खेती नहीं हो सकती थी ऐसी जगहों पर भी सिंचाई की व्यवस्था करके लोगों ने खेती करना शुरु कर दिया। यहाँ तक कि राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों के आस–पास और हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों पर भी खेती होने लगी थी। छत्तीसगढ़ के इतिहास से पता चलता है कि 11वीं शताब्दी में रतनपुर में 1400 तालाब बनवाए गए थे। इनकी संख्या अब घटकर 250 के लगभग रह गई है।

> आपने अपने गाँव या शहर के तालाबों को तो देखा ही होगा। पता करें कि वे कितने साल पुराने हैं? तालाब क्यों कम हुए। आपस में चर्चा कीजिए।

गाँवों की विशेषता यह थी कि इनमें कई जाति के लोग रहते थे। गाँव का समाज बहुत हद तक जाति व्यवस्था से बँधा था। हर जाति की अपनी अलग बस्ती होती थी। इनमें चाण्डाल, सोपाक, सूत, मागध आदि अनेक जातियाँ थीं जिन्हें गाँव या शहर की सीमाओं के अंदर रहने का अधिकार नहीं था। वे जानवरों का शिकार करना, उनके खाल निकालना, चमड़े की चीजें बनाना, लकड़ी काटना, श्मशान में काम करना जैसे काम करते थे।

गाँव के प्रमुख कृषक परिवार के मुखिया मिलकर गाँव के लोगों की समस्याओं को सुलझाने एवं सामूहिक कार्य आदि करवाते थे। इन्हें कहीं–कहीं **"पंचकुल", "महत्तर"** आदि भी कहा जाता था।

उत्तर भारत के गाँवों में आमतौर पर किसी–न–किसी भोगपति का अधिकार होता था। ये राजा के अधिकारी तो होते ही थे, उसके रिश्तेदार (राजपुत्र या राजपूत) भी होते थे। इनका गाँववासियों पर बड़ा प्रभाव होता था। वे किसानों से लगान वसूल करते थे। लोगों के परिवारों में होनेवाले शादी–ब्याह या तीज–त्यौहारों तथा तालाबों और कुओं पर भी तरह तरह के कर वसूलते थे। इन सबके अतिरिक्त गाँव वालों को बेगार (बिना वेतन काम) भी करना पड़ता था।

इस समय सबसे बड़ा परिवर्तन आर्थिक क्षेत्र में हुआ। यह था लगान वसूली के तरीके का बदलना। गुप्त काल में लगान पर राजा का अधिकार होता था लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। इस समय तक राजाओं द्वारा ब्राह्मणों और विद्वानों को भूमि दान में देने की परम्परा व्यापक हो चुकी थी। भू–क्षेत्रों से प्राप्त आय के बड़े भाग पर उसके स्वामी का अधिकार होता था और एक छोटा हिस्सा ही राजा को मिल पाता था। भू–पति इतने संपन्न हो गए थे कि वे स्वतंत्र शासकों की तरह व्यवहार करने लगे थे। वे अपनी सेना भी रखने लगे थे। पहले लगान राजा के नाम से वसूल किया जाता था। अब लगान सामंतों और भू–पतियों के नाम से वसूला जाने लगा। इसी कारण अब राजा और किसानों के बीच कोई सीधा संबंध भी नहीं रह गया था।

इसके विपरीत दक्षिण भारत में गाँवों के प्रमुख लोग ही मिलकर गाँव का सारा काम–काज चलाते थे। इनकी सभाएँ होती थीं जिन्हें **उर** कहा जाता था। कई गाँव की सभाएँ मिलकर एक **नाडू** बनाते थे। नाडू व उर ही लगान इकट्ठा करना, लोगों को दंडित करना, झगड़े निपटाना, तालाब व मंदिरों की देख–रेख करना, आदि करते थे।

उन दिनों समूचे भारत के गाँवों में ब्राह्मणों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। उन्हें जगह–जगह गाँव के गाँव दान में दिये जाते थे ताकि वे वहाँ बस जाएँ, पूजा–पाठ करें व लोगों को शिक्षा दें। ऐसे गाँवों को **ब्रह्मदेय** कहा जाता था।

उत्तर भारत व दक्षिण भारत के गाँवों की प्रशासन व्यवस्था में क्या अंतर था?

महिलाओं पर पाबंदियाँ

इस काल में महिलाओं पर तरह–तरह की पाबंदियाँ लगने लगीं थीं। अपनी मर्जी से पढ़ना, शादी करना, यात्रा करना, व्यवसाय करना, लोगों से मिलना–जुलना, ये सब अब अच्छा नहीं समझा जाने लगा था। इन्ही दिनों छोटी उम्र में शादी करवाना (बाल विवाह), पति के मरने पर पत्नी को भी उसकी चिता में जिंदा जलाना (सती प्रथा), पति के मरने पर दूसरे आदमी से शादी पर रोक, आदि बातें फैल रहीं थीं। इस कारण महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने के मौके नहीं मिले। ये बातें केवल उच्च जाति के लोगों तक ही सीमित नहीं रहीं। कई साधारण जाति के लोग भी इन बातों का अनुकरण करने लगे। आगे जाकर हम देखेंगे कि महिलाओं ने इन बातों का विरोध किस प्रकार किया?

छत्तीसगढ़ के रतनपुर में महामाया मंदिर के समीप में बड़ी संख्या में सती चौरे मिलते हैं। इनसे इस क्षेत्र में सती प्रथा के प्रचलित होने की जानकारी मिलती है। प्रत्येक वर्ष माघ–पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है, इसे आठाबीसा का मेला कहते हैं। वर्तमान समय में बाल–विवाह और सती–प्रथा कानूनन अपराध है।

1. मध्यकाल की महिलाओं को किन–किन बातों की मनाही थी जो आज की महिलाओं को नहीं है?
2. आपके अनुसार महिलाओं को कौन–कौन–से अधिकार मिलना चाहिए ?
3. पुरुषों पर इस तरह की पाबंदी क्यों नही लगाई जाती है?

शहर व व्यापार

हमने देखा कि इस काल में खेती करनेवाले बढ़ रहे थे, जिससे खेतों का विस्तार हो रहा था और छोटे–बड़े गाँव बस रहे थे। इन गाँवों के बीच आमतौर पर कुछ छोटे शहर विकसित हुए। ये **मंडपिक** या मंडी होते थे, जहाँ दूर– दूर से व्यापारी सामान खरीदने व बेचने आते थे। इनमें स्थाई दुकानें या **वीथियाँ** भी होती थीं जिनमें कई तरह के कारीगर (जैसे बुनकर, कुम्हार, पत्थर तराशनेवाले, बढ़ई, सोनार आदि) रहते थे। अक्सर ऐसे शहरों में राजा या सामंत भी रहते थे जो बाजार से कर वसूलते थे। शहर के व्यापारी, कारीगर या राजा भव्य मंदिर बनवाते थे और उनमें पूजा करने व त्यौहार मनाने के लिए दान भी देते थे।

दक्षिण भारत की आर्थिक उन्नति में मंदिरों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। राजाओं और सामंतों द्वारा अपने वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए विशाल अलंकृत मंदिरों का निर्माण किया गया। इन मंदिरों को बड़े–बड़े गाँवों के राजस्व प्राप्त होते थे। धीरे–धीरे इन मंदिरों की संपत्ति बढ़ती गई। मंदिरों की व्यवस्था करनेवाली समितियों ने यह धन व्यापार, व्यवसाय और उद्योगों में लगाया।

इतना ही नहीं मंदिरों द्वारा बड़े पैमाने पर ब्याज पर ऋण भी दिया जाने लगा। विशाल मंदिरों के निर्माण से बड़ी संख्या में मजदूर, कारीगर, व्यापारी, व्यवसायी और ब्राह्मण एक जगह एकत्रित होने लगे जिससे बड़ी संख्या में नए शहर बसे।

उन दिनों व्यापारी न केवल भारत के विभिन्न शहरों में जाकर व्यापार करते थे, बल्कि दूर–दूर के देशों में भी जाते थे। उन देशों के व्यापारी भी भारत आते थे। भारत के समुद्र तटों से, खासकर गुजरात, कोंकण, केरल व तमिलनाडु के बंदरगाहों से दूर–दूर तक समुद्री व्यापार होता था। दक्षिण भारत के व्यापारी नानादेसी, मणिग्रामम् नाम के श्रेणी या समूह बनाकर आपसी हितों की रक्षा करते थे। वे चीन, दक्षिण पूर्व एशिया, अरब देश, ईरान और अफ्रीका जाकर व्यापार करते थे। उसी तरह अरब, मध्य एशिया, चीन आदि देशों के व्यापारी भारत आते थे। ये विदेशी व्यापारी भारत के तटीय प्रदेशों में बसने भी लगे थे। इस तरह यहाँ के लोग दूर–दराज के लोगों की संस्कृतियों व धर्मों के संपर्क में आए और उनसे प्रभावित हुए। केरल व तमिलनाडु में चीनी, इसाई व यहूदी आकर बसे, गुजरात व केरल में अरब व्यापारी। ये भारत से मसाले, कपड़े, चावल आदि खरीदकर अपने देशों को भेजते थे।

अगर आप उन दिनों के शहरों में घूमने जाते तो क्या आपको अपने पास के शहर जैसे दृश्य दिखते? किन बातों में वे शहर आज के शहरों से भिन्न होते? चर्चा करें।

भक्ति आंदोलन, मंदिर व क्षेत्रीय भाषा

KYG2H1

आमतौर पर जंगलों में रहनेवाले लोग अपनी परंपराओं के अनुसार देवी–देवताओं की पूजा करते थे। छत्तीसगढ़ में भी बूढ़ादेव और मातादेवालयों के प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। गाँवों में बहुतायत से पूजा किए जानेवाले "ठाकुर देव" का पूजा–स्थल (ठाकुर चौरा) भी बड़ी संख्या में मिलते हैं।

इस काल में बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होने लगा था। मध्य काल में भारतीय आध्यात्म में एक नई लहर चली जिसे हम भक्ति आंदोलन कहते हैं। सबसे पहले दक्षिण भारत में यह आंदोलन तमिलनाडु में शुरू हुआ था। वहाँ शिव और विष्णु के कई संत भक्त हुए। ये लोग सभी जातियों के थे। वे कर्मकांडों व कई देवी–देवताओं की उपासना की जगह शिव या विष्णु के प्रति प्रेम और भक्ति को बढ़ावा देना चाहते थे। उन्होंने आम लोगों की भाषा तमिल में सुंदर और प्रेम, श्रध्दा पूर्ण भक्ति गीत रचे जो काफी लोकप्रिय हुए। शिव के भक्तों को **नयनार** और विष्णु के भक्तों को **अलवार** कहा जाता था। वे

चित्र–2.1 सूर्य मंदिर, कोणार्क (ओडिशा)

राम और कृष्ण को भी विष्णु के अवतार के रूप में पूजते थे। भक्ति आंदोलन के प्रभाव से जगह–जगह मंदिर बने। राजाओं ने अपने प्रभाव और वैभव को दर्शाने के लिए उन मंदिरों को और भी भव्य बनाया।

चित्र–2.2 भोरम देव का मंदिर, कबीरधाम

कई भक्त मंदिरों के इस बदलते स्वरूप से खुश नहीं थे। उनका मानना था कि ईश्वर से प्रेम बिना किसी आडंबर के करना चाहिए। ऐसे भक्तों में प्रमुख थे कर्नाटक के लिंगायत या वीर शैव। बसवण्णा व अक्कमहादेवी इस आंदोलन के प्रमुख प्रेरक थे। वे जात–पाँत, ऊँच–नीच के भेदभाव को भी मिटाना चाहते थे। इसी तरह के आंदोलन बंगाल और बिहार में नाथपंथी व सिद्धों ने भी शुरू किए। भक्त संतों ने अपने गीत आम लोगों की बोली में रचे। इनके प्रभाव से कई स्थानीय भाषाओं और साहित्य का विकास हुआ। इस काल में दक्षिण में तमिल, तेलगू व कन्नड़ तथा उत्तर में गुजराती व हिन्दी के प्रारंभिक स्वरूप में रची गई रचनाएँ काफी संख्या में हमें मिलती हैं।

भक्त संतों ने आम लोगों की भाषा को ही क्यों अपनाया होगा?

मंदिर और शिल्पकला

इस काल में बननेवाले मंदिर काफी बड़े होते थे। उनमें गर्भगृह, शिखर तथा कई छोटे बड़े मंडप होते थे। दूर से ही मंदिरों के शिखर दिखते थे जो गर्भगृह पर बनाये जाते थे। गर्भगृह उस कमरे को कहा जाता है जिसमें देवी–देवताओं की मूर्तियों की स्थापना की जाती है। इन मंदिरों में प्रवेश करने पर सबसे पहले मुख्य मंडप आता है जिसके बाद अर्द्ध मंडप, महा मंडप, आदि होते हैं। ये मंडप वास्तव में बड़े कमरे होते हैं जिनमें खड़े होकर भक्त देवता के दर्शन करते हैं। इन मंदिरों का सबसे आकर्षक हिस्सा शिखर होता है। यह मुख्य रूप से दो प्रकार से बनाया जाता था। दक्षिण भारतीय (चित्र 1.4) एवं उत्तर भारतीय शैली (चित्र 2.2) से इनके उदाहरण आप देख सकते हैं।

चित्र–2.3 गंडई पंडरिया का मंदिर

ओडिशा का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर(कोणार्क), चंदेल राजाओं द्वारा बनवाए गए खजुराहो के मंदिर, राजराज चोल द्वारा बनवाए राजराजेश्वर मंदिर आदि इस काल के मंदिर निर्माण कला के सुंदर नमूने हैं। छत्तीसगढ़ में कलचुरि शासकों द्वारा बनवाया गया रतनपुर का मंदिर, गंडई पंडरिया का मंदिर, जाजल्लदेव द्वारा निर्मित शिवरीनारायण का मंदिर तथा गोपाल देव द्वारा निर्मित कबीरधाम (कवर्धा) जिले का भोरमदेव मंदिर इसी काल के निर्माण कला को दर्शाते हैं। पत्थरों में तराशी गई देवी देवताओं की विशालकाय मूर्तियाँ इन मंदिरों की मुख्य विशेषता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. उचित संबंध जोड़िए –

1. ब्रह्मदेय – अलवार
2. पंचकुल – गाँव के प्रमुख कृषक परिवार के मुखिया
3. शिव भक्त – ब्राह्मणों को गाँव दान में देना।
4. विष्णु भक्त – नयनार

2. सही या गलत बताइए–

1. भोरमदेव का मंदिर राजनाँदगाँव जिले में है।
2. दक्षिण भारत के व्यापारी समूह बनाकर व्यापार करते थे।
3. बसवण्णा और अक्कमहादेवी एक कुशल राजनीतिज्ञ थे।
4. भक्त संतों ने कर्मकांडों और देवी–देवताओं पर विश्वास किया।
5. गंडई पंडरिया का मंदिर चोल शासकों द्वारा बनवाया गया था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पल्ली किसे कहते थे ?
2. चंदेल राजाओं द्वारा किस मंदिर का निर्माण किया गया था ?
3. छत्तीसगढ़ में सती प्रथा के अवशेष कहाँ पर दिखाई देते हैं ?
4. सन् 650 ई. के बाद राज्यों की स्थिति में प्रमुख रूप से क्या बदलाव आए ?
5. उर किसे कहते थे ?
6. दक्षिण भारत की उन्नति में मंदिरों की क्या भूमिका थी ?
7. भक्त संतों के कारण स्थानीय भाषा का विकास किस प्रकार हुआ ?
8. 650 ई. से 1200 ई. में आर्थिक क्षेत्र में क्या–क्या परिवर्तन हुए ?

योग्यता विस्तार–

आप अपनी कक्षा के कुछ साथियों के साथ आस–पास के प्राचीन मंदिरों को देखने जाएँ और वहाँ के पुजारी एवं आसपास के लोगों से निम्नलिखित जानकारियाँ एकत्र करें –

1. मंदिरों के नाम एवं चित्र।
2. निर्माणकर्ता का नाम एवं अवधि।
3. मंदिर में स्थापित देवी–देवताओं के नाम।
4. मंदिर से संबंधित कोई कहानी या किंवदंतियाँ।

3 दिल्ली सल्तनत की स्थापना

(सन् 1206 ई. से 1290 ई.)

KYYTKB

पिछले पाठ में आपने जाना कि सन् 650 ई. से 1200 ई. के बीच भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। लेकिन सन् 1200 ई. के बाद उत्तर भारत में दिल्ली के आस–पास तुर्कों का एक शक्तिशाली राज्य बना। इस राज्य के शासकों ने लगभग पूरे भारत पर अपना शासन स्थापित किया। इसे ही हम 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जानते हैं। अरबी भाषा में शासकों को सुल्तान कहा जाता था, इसी कारण उनके राज्य को सल्तनत कहा गया। इसमें पाँच वंश हुए– 1. गुलाम वंश, 2. तुगलक वंश, 3. खिलजी वंश, 4. सैय्यद वंश, 5. लोदी वंश। अब हम इस पाठ में गुलाम वंश के बारे में पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम जानेंगे कि दिल्ली में सुल्तानों का राज्य कैसे बना?

मुहम्मद ग़ोरी

उन दिनों भारत के उत्तर पश्चिम राज्य अफगानिस्तान में, तुर्किस्तान से आए तुर्क सुल्तानों ने अपना राज्य स्थापित कर रखा था। ये सुल्तान अपने राज्यों को बढ़ाने के लिए आपस में लड़ते थे। इन्हीं राज्यों में से एक था 'ग़ोर' जिसका सुल्तान था मुहम्मद ग़ोरी। वह भी कई तुर्की सुल्तानों

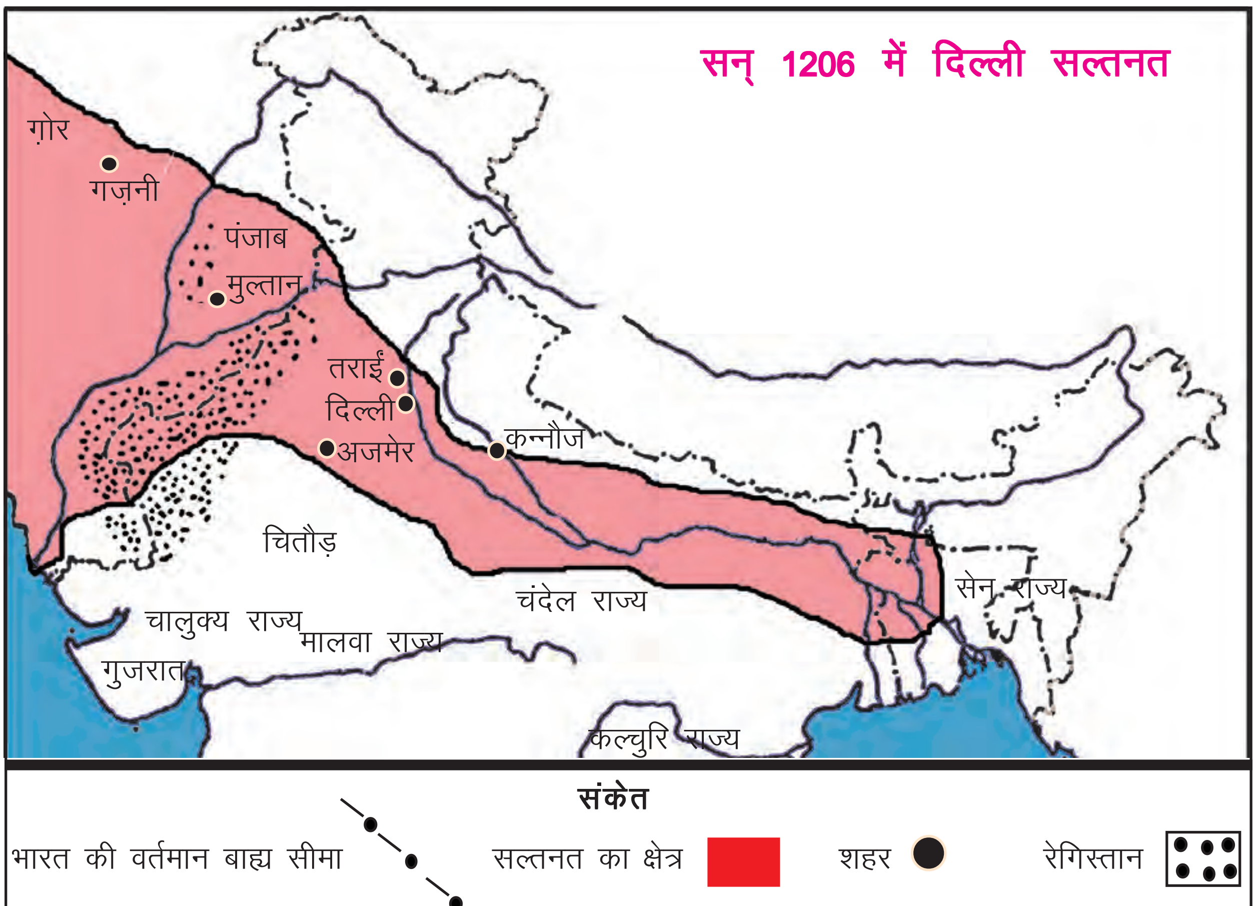

मानचित्र–3.1

से लड़ा लेकिन ख्वारिज्म (पूर्वी ईरान का एक राज्य) के शाह से वह नहीं जीत पाया। इसलिए अपने राज्य को बढ़ाने के लिए उसके पास भारत की ओर बढ़ने के अलावा और कोई उपाय नहीं था।

उसने सबसे पहले पंजाब क्षेत्र के मुल्तान को जीता और फिर गुजरात को जीतने के लिए बढ़ा। उन दिनों समुद्री व्यापार के कारण गुजरात राज्य काफी संपन्न और शक्तिशाली था। लेकिन गुजरात के राजा मूल राज द्वितीय ने उसे सन् 1178 ई. में हरा दिया। गुजरात में हारकर गोरी ने सोचा कि उसे पहले पंजाब पर पूरा अधिकार करना चाहिए। पंजाब के शासक ताकतवर नहीं थे इसलिए धीरे–धीरे गोरी ने पूरे पंजाब पर अपना अधिकार जमा लिया। अब उसके राज्य की सीमा पृथ्वीराज चौहान के राज्य की सीमा तक पहुँच गई। पंजाब को जीतने के बाद गोरी दिल्ली विजय की योजना बनाने लगा।

पृथ्वीराज चौहान तृतीय (रायपिथौरा)

KZ8PLY

उन दिनों दिल्ली और अजमेर पर चौहान वंश के राजपूत राजा पृथ्वीराज तृतीय का शासन था। वे एक शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी राजा थे। मुहम्मद ग़ोरी की तरह पृथ्वीराज भी अपने आसपास के राजाओं से लड़कर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे। अतः उसने भी गुजरात पर हमला किया लेकिन ग़ोरी की तरह पृथ्वीराज भी राजा भीम से हार गये। फिर उन्होंने पूर्व दिशा के राज्यों को जीतना चाहा, मगर असफल रहे। अपने राज्य को बढ़ाने के लिए उनके पास भी एक ही उपाय था कि वह पंजाब की ओर बढ़े। अब मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज के बीच युद्ध होना स्वाभाविक ही था।

1. मानचित्र–3.1 में देखें ये स्थान भारत के किस भाग पर स्थित हैं– ग़ोर, अजमेर, गुजरात, पंजाब, दिल्ली।
2. पृथ्वीराज और ग़ोरी में लड़ाई होना क्यों जरूरी हो गया था?

तराईन का युद्ध

सन् 1191 ई. में मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच "तराईन" नाम की जगह पर प्रथम युद्ध हुआ। इसमें ग़ोरी को पृथ्वीराज ने हरा दिया। इस युद्ध में मुहम्मद ग़ोरी बुरी तरह घायल हो गया था और मुश्किल से बचकर निकल पाया। वापस लौटकर ग़ोरी ने एक और युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दी। अगले साल सन् 1192 ई. में "तराईन" के मैदान में दोनों के बीच दूसरा युद्ध हुआ।

पृथ्वीराज की सेना बहुत बड़ी थी– उसमें पैदल सैनिक, हाथी व घोड़े थे। कई छोटे राजा व सामंत अपनी–अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज की मदद के लिए आए थे। ग़ोरी की सेना बहुत छोटी थी और उसमें हाथी नहीं थे। लेकिन उसके पास तेज दौड़नेवाले घोड़े थे और कुशल घुड़सवार सैनिक थे जो घोड़े पर चलते–चलते तीर चला सकते थे।

जब गोरी के घुड़सवारों ने पृथ्वीराज के हाथियों पर वार किया तो हाथी पीछे की तरफ भागने लगे और अपनी ही सेना में तबाही मचाने लगे। अंत में इस युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई।

तराईन के दूसरे युद्ध के बाद दिल्ली में राजपूतों की जगह तुर्कों का शासन स्थापित हो गया। इसके बाद मुहम्मद गोरी के तुर्क सेनापतियों ने तेजी से पूरे उत्तर भारत को अपने कब्जे में कर लिया।

तुर्कों की सफलता के कारण

तुर्की लोग इतनी तेजी से कैसे सभी प्रमुख राजपूत राजाओं को हरा पाए? या राजपूत राजा उनसे क्यों हारे? इन सवालों के बारे में इतिहासकार काफी सोच–विचार करते हैं और अलग–अलग इतिहासकारों के अलग–अलग मत भी है।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजपूत राजाओं का पारस्परिक मतभेद भी एक प्रमुख कारण था। इनमें राजा जयचन्द की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

कुछ और इतिहासकारों का मानना है कि तुर्क जीते क्योंकि उनके पास फुर्तीले, तीर चलाने वाले घुड़सवार थे। वे युद्धभूमि में तेजी से दुश्मनों पर टूट पड़ते थे और अपना बचाव भी कर लेते थे अर्थात् उनके युद्ध करने के तरीके और साधन राजपूतों से बेहतर थे।

1. ऊपर बताए दोनों कारणों में से कौन सा कारण आपको सबसे ज्यादा ठीक लगता है?
2. इसके अलावा और कौन–कौन–से कारण हो सकते हैं ?

गुलाम से सुल्तान

तराईन युद्ध के कुछ ही साल बाद गोरी की हत्या कर दी गई। उस समय दिल्ली में उसके गुलाम अधिकारी व सेनापति थे जो वहाँ की शासन व्यवस्था देख रहे थे।

क्या आप जानते हैं गुलाम कौन होता है और गुलामी क्या होती है? कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा करें।

क्या आप सोच सकते हैं कि इन दिनों गुलाम बड़े अधिकारी व सेनापति भी होते थे ? उन दिनों तुर्किस्तान, ईरान आदि देशों में यह एक आम बात थी। कुछ व्यापारी युवकों को खरीदकर उन्हें युद्ध कला और प्रशासन का प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेच देते थे। इन गुलामों को उनकी योग्यता के अनुसार काम और पद दिए जाते थे। इसके बदले उन्हें अधिक वेतन भी दिया जाता था। कुछ योग्य गुलाम अधिकारी अपने मालिक के बाद शासक भी बने। दिल्ली में मुहम्मद गोरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक प्रशासन का काम देख रहा था। गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ने अपने आपको एक स्वतंत्र सुल्तान और दिल्ली को एक स्वतंत्र प्रांत घोषित कर दिया। इस तरह वह दिल्ली का पहला सुल्तान बना। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण प्रारंभ कराया था।

कुतुबुद्दीन के बाद उसका गुलाम और दामाद इल्तुतमिश सुल्तान बना। उसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य पूर्ण कराया। इल्तुतमिश के सामने दो बड़ी समस्याएँ थीं– पहली, अपने ही अधिकारियों का व्यवहार और दूसरी पराजित राजपूत राजपरिवारों का व्यवहार। सल्तनत के बड़े अधिकारी व सेनापति सुल्तान से दबकर नहीं रहना चाहते थे और मनमानी करना चाहते थे। इस कारण सुल्तान अपने प्रशासन को मजबूत नहीं कर पा रहा था। इसका फायदा उठाकर पुराने राजाओं के वंश के लोग सल्तनत का विरोध करने लगे। वे गाँव के किसानों से लगान इकट्ठा करके स्वयं रख लेते थे। किन्तु राजकोष में जमा नहीं करते थे। वे सड़कों पर आने–जाने वाले यात्रियों व व्यापारियों को लूट लेते थे। इस प्रकार सल्तनत कमजोर होने लगी थी। सुल्तानों के आदेशों का पालन केवल कुछ शहरों में ही होता था।

इल्तुतमिश ने प्रशासन को ठीक करने के लिए चालीस योग्य गुलामों को ऊँचे पद दिए। वे सब सुल्तान के प्रति वफादार रहकर उसकी सेवा करते रहे। उनमें से कई को **इक्तादार** बनाया गया था। इक्तादारों का काम था अलग–अलग प्रांतों में रहकर वहाँ का प्रशासन संभालना, विद्रोहों को दबाना और गाँवों से लगान वसूलना। इस तरह जो लगान इकट्ठा होता था, उसे वे अपने वेतन और प्रशासन के खर्च के लिए रख लेते थे। इन इक्तादारों का समय–समय पर एक प्रांत से दूसरे प्रांत में तबादला होता रहता था। पिता के बाद पुत्र को उसका इक्ता या पद विरासत में नहीं मिलता था।

चित्र–3.1 कुतुबमीनार दिल्ली

1. गुलामों को ऊंचे पद देने से सुल्तान को क्या फायदा हो सकता था और क्या नुकसान ?
2. राजपूत राजा किस प्रकार सल्तनत का विरोध कर रहे थे?

रज़िया सुल्तान

इल्तुतमिश के बाद उसकी बेटी रजिया दिल्ली की गद्दी पर बैठी। वह दिल्ली की गद्दी पर बैठनेवाली एकमात्र महिला शासक थी। गद्दी पर बैठने के बाद वह पुरुषों के समान चोंगा और टोपी पहनती थी। वह घोड़े की सवारी करती थी और किसी योग्य राजा की भाँति राज्य का काम–काज सँभालती थी।

रज़िया ने अपने पूरे राज्य में शांति व्यवस्था कायम की। परंतु तुर्क सरदार अपनी बात माननेवाले को गद्दी पर बैठाना चाहते थे, जिसे वे अपने इशारों पर नचा सकते हों। उन्हें जल्दी ही पता चल गया कि रज़िया भले ही स्त्री है लेकिन वह उनकी कठपुतली बनने को तैयार नहीं है। अपने गुणों के बावजूद रज़िया कुछ खास नहीं कर पाई, क्योंकि जब उसने अपने प्रति वफादार सरदारों का एक दल तैयार किया और गैर तुर्कों को बड़े पद देना शुरू किया तो तुर्क सरदारों ने उसका विरोध प्रारंभ कर दिया और उसकी हत्या कर दी।

बल्बन

रजिया के बाद दिल्ली का महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन था। वह इल्तुतमिश द्वारा स्थापित 40 गुलामों के दल का एक सदस्य था। तुर्क सरदार (अमीर) इस समय बड़े शक्तिशाली हो गए थे और वे सुल्तान के सम्मान का भी ध्यान नहीं रखते थे। वे सुल्तान के विरुद्ध षडयंत्र रचा करते थे और सुल्तान को धमकी देते रहते थे। बल्बन के सामने इन सरदारों को दबाना सबसे गंभीर समस्या थी। धीरे–धीरे किंतु दृढ़ता से बल्वन ने उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया और सरदारों को राजभक्त बनाने में सफलता प्राप्त की। बल्बन सुल्तान की निरंकुश शक्ति पर विश्वास करते थे। उसने अपनी स्थिति इतनी मजबूत कर ली कि सुल्तान की शक्ति को कोई चुनौती नही दे पाया। वह कहता था कि राजा ''ईश्वर की परछाई'' और धरती पर उसका प्रतिनिधि है। उसने लोगों को सुल्तान के सामने सिजदा (सिर झुकाना) और पायबोस (राजा के पैर चूमना) करना अनिवार्य कर दिया। तुर्क सरदार बल्बन की ताकत और कठोरता से

इतने भयभीत थे कि उन्हें उसका आदेश मानना पड़ा। बल्बन की मृत्यु के बाद कैकुबाद शासक बना परन्तु तीन वर्षों के बाद ही उसके वंश का अंत हो गया।

दिल्ली के प्रारंभिक तुर्क सुल्तानों ने एक नई शासन व्यवस्था की स्थापना की। उनके शासन काल में मध्य एशिया के शक्तिशाली शासक चंगेज खाँ एवं अन्य मंगोलों का आक्रमण हुआ। जिसका उन्होंने सफलतापूर्वक मुकाबला किया तथा दिल्ली के शासन को मजबूत किया। उस समय सम्पूर्ण मध्य एवं पश्चिम एशिया में मंगोलों का आक्रमण हो रहा था परंतु मंगोल दिल्ली के सुल्तानों को पराजित नहीं कर पाए और इस काल में भारत मंगोल आक्रमण से बच गया।

भारत में तुर्क राज्य स्थापित होने से ईरान, ईराक, तुर्किस्तान, खुरासान आदि देशों से लोग यहाँ आकर बसने लगे। सुल्तानों के समय इतिहास की कई पुस्तकें लिखी गई थीं जिनमें हर शासक के समय में क्या–क्या बातें घटित हुई, उनके विवरण हमें मिलते हैं। ये तुर्क अपने साथ अपने रीति–रिवाज व धर्म तो लाए ही साथ ही अपने हुनर, पहनावा और पकवान आदि भी लेकर आए थे। इनके बारे में हम आगे के पाठ में पढ़ेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. खण्ड "क" में दिए गए शासकों के नाम के सामने खण्ड "ख" में उनसे संबंधित स्थानों के नाम लिखिए –

KZHKNL

स. क्र.	खण्ड "क"	खण्ड "ख"
01.	पृथ्वीराज चौहान	....
02.	मुहम्मद ग़ोरी	....
03.	कुतुबुद्दीन ऐबक	....
04.	राजा भीम	....
05.	चंगेज खाँ	....

2. नीचे दिए सुल्तानों के नाम, उनके शासन काल क्रमानुसार लिखकर उनके बारे में संक्षेप में लिखें –

मुहम्मद ग़ोरी, कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रज़िया, बल्बन, कैकुबाद।

3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें–

(अ) इक्तादार (ब) गुलाम (स) सरदार

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 50 से 100 शब्दों में दीजिए –

1. पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद ग़ोरी के बीच हुए युद्ध का वर्णन कीजिए ?
2. तुर्की सेना और राजपूतों की सेना में क्या–क्या अन्तर था ?
3. तुर्क सुल्तानों के सामने क्या–क्या प्रमुख समस्याएँ थीं ?
4. तुर्क सरदार रज़िया को क्यों हटाना चाहते थे ?

योग्यता विस्तार–

मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान दोनों ही गुजरात को क्यों जीतना चाहते थे, कोई दो कारण ढूँढ़कर अपनी कॉपी में लिखें।

4 दिल्ली सल्तनत का विस्तार

LBVU56

पिछले पाठ में हमने दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बारे में पढ़ा था। हमने पढ़ा कि सल्तनत के बड़े अधिकारी सुल्तान से दबकर नहीं रहना चाहते थे। हमने यह भी पढ़ा कि सुल्तान के अधिकारी गाँवों से लगान इकट्ठा नहीं कर पा रहे थे। बाद के सुल्तानों ने इन समस्याओं का किस तरह समाधान किया ?

यह जानने के लिए हम गुँजन और मनोरमा के स्कूल चलते हैं। गुंजन और मनोरमा कक्षा 7 वीं में पढ़ते हैं। आज उनकी कक्षा में इतिहास का पाठ पढ़ाया जा रहा था। शिक्षक बता रहे थे कि बल्बन की मृत्यु के कुछ सालों बाद सन् 1290 ई. में जलालुद्दीन ख़िलज़ी सुल्तान बना। जलालुद्दीन ख़िलज़ी उदारता व क्षमाशीलता को आधार बनाकर शासन करना चाहता था। लेकिन कुछ सालों बाद उसके ही भतीजे अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने उसे छल से मार दिया और खुद सुल्तान बन गया।

गुंजन ने शिक्षक से पूछा– गुरुजी, इन सब घटनाओं की जानकारी हमें कहाँ से मिलती हैं?

शिक्षक– आपने बिलकुल ठीक पूछा। मगर यह तो बताओ कि अशोक या हर्ष जैसे पुराने राजाओं के बारे में हमें कैसे पता चलता है?

डोली ने जवाब दिया– शिलालेखों, ताम्रपत्रों या सिक्कों से और उस जमाने में लिखी किताबों से हमें उनके बारे में पता चलता है।

शिक्षक– दिल्ली के सुल्तानों के शिलालेख तो बहुत कम मिलते हैं लेकिन उनके दरबार में रहनेवाले इतिहासकारों व कवियों के द्वारा लिखी किताबों से हमें काफी जानकारी मिलती है। प्राचीन काल के राजाओं में से कुछ ही राजाओं के शिलालेख हमें मिले हैं। बाकी राजाओं के बारे में बहुत कम या नहीं के बराबर जानकारी मिलती है। लेकिन सल्तनत काल के इतिहासकारों ने लगभग हर छोटे बड़े सुल्तान के बारे में काफी विस्तार से लिखा है। इनके अलावा इन सुल्तानों के सिक्के और उनके द्वारा बनवाई गई इमारतों से भी हमें बहुत जानकारी मिलती है। इस समय सूफी संतों ने कई पुस्तकें लिखीं। इनसे उस समय के लोगों के जीवन के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

आर्या : अलाउद्दीन ख़िलज़ी के बारे में हमें कौन–सी पुस्तक से पता चलता है?

शिक्षक : अलाउद्दीन के बारे में प्रसिद्ध फारसी कवि अमीर खुसरो की किताबों से हमें पता चलता है। इसके अलावा बरनी नामक इतिहासकार की पुस्तक **तारीख–ए–फिरोज़शाही** से भी जानकारी मिलती है।

1. पुराने समय के सभी राजाओं के बारे में हमें पूरी जानकारी क्यों नहीं मिल पाती?
2. सुल्तानों ने शिलालेख बहुत कम खुदवाए। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

अलाउद्दीन ख़िलज़ी

शिक्षक– बच्चो, अलाउद्दीन सन् 1296 में दिल्ली का सुल्तान बना। वह बड़ा महत्वाकांक्षी था और उसने सल्तनत को सुदृढ़ बनाया।

सुल्तान बनने से पहले ही उसने दक्षिण भारत के देवगिरि राज्य को हराया था और वहाँ से काफी धन लूटकर लाया था। उस धन से उसने न केवल अपनी सेना को मजबूत बनाया बल्कि बड़े अमीरों में धन बाँटकर उन्हें अपनी तरफ कर लिया। धीरे–धीरे उसने ज्यादातर अमीरों व सरदारों को अपने नियंत्रण में कर लिया। उसने ऐसे कड़े नियम बनाए कि कोई भी अमीर अपनी मनमानी नहीं कर पाता था और सुल्तान की हर बात उसे माननी पड़ती थी। जो अमीर उसकी बात को नहीं मानते थे, उन्हें वह कठोर दंड देता था और उनकी जगह नए अमीर नियुक्त कर देता था। उसने बहुत से भारतीय मुसलमानों को भी ऊँचे पद दिए।

मनोरमा ने पूछा– तो क्या अमीरों ने उसके खिलाफ विद्रोह नहीं किया?

शिक्षक– अलाउद्दीन ने अमीरों के विद्रोहों को रोकने के लिए शराब पीना, शादी– ब्याह में खुलकर उत्सव मनाना, बड़ी दावत आदि पर रोक लगा दी। उसका मानना था कि ऐसे मौकों पर अमीर सुल्तान के खिलाफ षडयंत्र रचा सकते हैं। इसके अलावा उसके जासूस उसे हर अमीर की खबर देते रहते थे। इन कारणों से उसके खिलाफ कोई विद्रोह न हो सका।

1. देवगिरि से मिले धन का अलाउद्दीन ने क्या उपयोग किया?
2. अलाउद्दीन के खिलाफ अमीर विद्रोह क्यों नहीं कर पाए ?

राज्य का विस्तार

अलाउद्दीन के पास ताकतवर सेना व अनुशासित अमीर थे। उनका उपयोग उसने नए राज्यों को जीतने के लिए किया। सन् 1299 में उसने गुजरात पर विजय पाई। और उसके बाद रणथंभौर, चित्तौड़ व मालवा आदि राज्यों को हराकर वहाँ से खूब धन प्राप्त किया और इन राज्यों को उसने अपनी सल्तनत में मिला लिया।

शिक्षकः– मानचित्र 4.1 देखकर बताओ कि रणथम्भौर, चितौड़ और मालवा साम्राज्य दिल्ली से किस दिशा में है?

संदीप बोला– गुरुजी! ये सभी जगह दिल्ली के पूर्व दिशा में हैं।

सलमा ने तत्काल कहा– नहीं पश्चिम दिशा में हैं।

आप बताइए कि उन साम्राज्यों की सही दिशा क्या है?

अलाउद्दीन ने दक्षिण के राज्य देवगिरि पर कई बार आक्रमण किया और उसे परास्त कर बहुत सा धन लूटा, लेकिन देवगिरि को अपने राज्य में नहीं मिलाया। फिर वह एक लंबे अभियान में दक्षिण भारत के तमाम राजाओं को हराते हुए सुदूर दक्षिण में मदुरै और रामेश्वरम् तक जा पहुंचा। इस दक्षिण अभियान का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य विस्तार करना नहीं बल्कि धन प्राप्त करना

मानचित्र 4.1

था। इस कारण उन साम्राज्यों को जीतने के बाद अलाउद्दीन ने उन्हें उन्हीं राजाओं के हाथ सौंप दिया और बदले में उनसे हर साल कुछ कर एवं उपहार लेता था।

1. अलाउद्दीन ख़िलज़ी का साम्राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला था?
2. अलाउद्दीन खिलजी ने कौन–कौन से इलाके अपने सल्तनत में जोड़े?
3. अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने गुजरात व चित्तौड़ साम्राज्यों को अपने साम्राज्य में क्यों मिलाया लेकिन दक्षिण के साम्राज्यों को क्यों नहीं मिलाया ?

मनोरमा बोली– गुरुजी, लगता है कि अलाउद्दीन के साम्राज्य का सभी खर्च युद्ध से और किसानों के लगान से निकल जाता था।

शिक्षक– कुछ हद तक यह बात ठीक है, मगर शासन का अधिकांश खर्च किसानों से लिए गए लगान (भूमि कर) से चलता था। अलाउद्दीन ने तय किया था कि किसान अपनी उपज का आधा हिस्सा लगान के रूप में देंगे।

मनोरमा– मगर ये तो बहुत ज्यादा था।

शिक्षक– ज्यादा तो था। लेकिन अलाउद्दीन ने उस समय प्रचलित कई छोटे–छोटे करों को हटा दिया था और केवल भूमि कर और चराई कर वसूल करने का निश्चय किया था। इससे किसानों को अत्यधिक कर नहीं देना पड़ा। कर वसूल करने वाले पुराने राजाओं और अधिकारियों को नुकसान हुआ, क्योंकि अब उनकी आय कम हो गई।

जया– वह कैसे ?

शिक्षक– अलाउद्दीन के समय से पहले ये राजा और गाँव के मुखिया ही किसानों से लगान इकट्ठा करते थे। लेकिन अब सुल्तान के अधिकारी खुद किसानों से लगान की वसूली करने लगे। इससे उन राजाओं व मुखिया लोगों को जो रियायतें मिली हुईं थीं वे खत्म हो गईं। वे अब किसानों से मनमानी वसूली भी नहीं कर सकते थे। इस प्रकार अलाउद्दीन ने किसानों से सीधा संपर्क बनाया और बीच के बिचौलियों को हटा दिया।

जावेद– अरे, इतने कम समय में अलाउद्दीन ने कर व्यवस्था में बहुत सुधार किया।

शिक्षक बोले– हाँ! अलाउद्दीन ने दिल्ली में अपने सैनिकों को कम कीमत में पर्याप्त सामान मिले, इसके लिए भी विशेष प्रयास किया। उसने सभी सामानों की कीमत तय करके ऐलान कर दिया कि जो भी व्यापारी उससे अधिक कीमत लेगा या सही वजन से कम तौलेगा उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाएगी। साथ ही सभी वस्तुओं के बाजार को नियत स्थान पर रखा ताकि मूल्य को नियंत्रित किया जा सके।

सेना में भ्रष्टाचार न फैले इसके लिए उसने अपने सैनिकों के चेहरे का ब्यौरा दर्ज करवाया (हुलिया प्रथा) और घोड़ों को दागने की प्रथा शुरू की ताकि उनकी सही पहचान हो सके।

कक्षा में चर्चा करें कि इन बातों से भ्रष्टाचार पर रोक कैसे लगती होगी ?

इन सबके अलावा अलाउद्दीन की एक बड़ी उपलब्धि थी मंगोलों के आक्रमण को रोकना। मंगोल मध्य एशिया से लूटपाट करने व साम्राज्य स्थापना के लिए बड़ी सेना लेकर भारत आए थे। अलाऊद्दीन ने बड़ी सफलता के साथ उन्हें अपनी सीमा के बाहर ही रोक दिया और इस तरह दिल्ली सल्तनत मंगोलों के आक्रमण से बच गई।

सन् 1316 में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। उसके मरने के कुछ ही साल बाद दिल्ली में एक नए वंश की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की। यह वंश था तुगलक वंश और इस वंश का पहला सुल्तान था गयासुद्दीन तुगलक।

तुगलक वंश

शिक्षक– बच्चो, सन् 1320 में गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना और तुगलक वंश

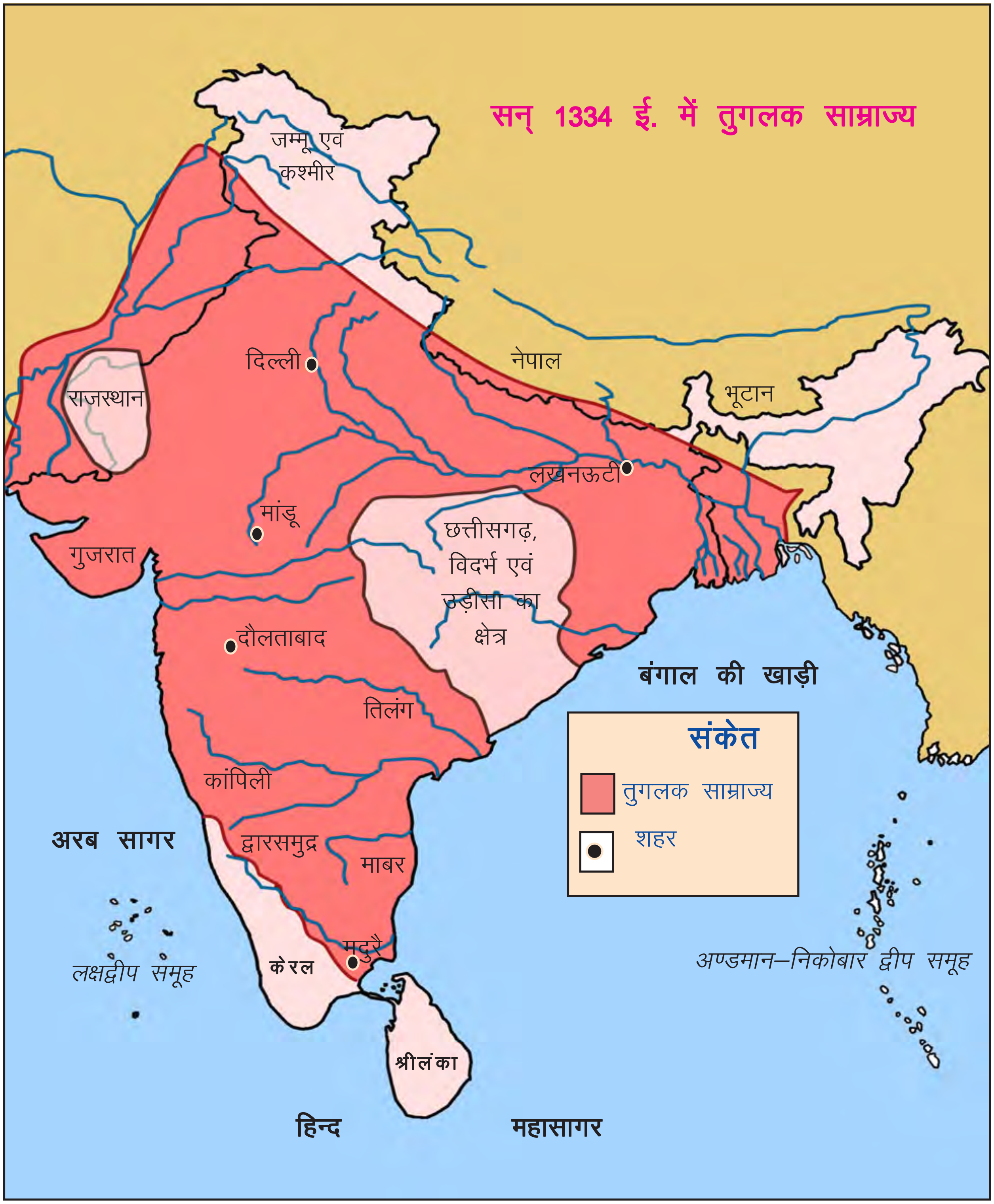

मानचित्र 4.2

की स्थापना की। उसने अलाउद्दीन की कठोर नीतियों को छोड़कर उदारतापूर्वक शासन करना चाहा। उसने दिल्ली के पास तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की। किन्तु सिर्फ 5 वर्ष शासन करने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद मुहम्मद बिन तुगलक सुल्तान बना। वह विद्वान, महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी शासक था। उसने कई योजनाएँ लागू की जिनके कारण इतिहास में उसका नाम प्रसिद्ध है।

श्रीकांत– गुरुजी, उसकी योजनाएँ क्या थीं?

शिक्षक– उसकी दो योजनाएँ प्रसिद्ध हैं– पहली दक्षिण में देवगिरि (दौलताबाद) को अपनी राजधानी बनाना और दूसरी चाँदी के सिक्के की जगह ताँबा या पीतल के सांकेतिक सिक्के चलाना।

एक नई राजधानी

1. पहले आपस में चर्चा करें कि राजधानी क्या होती है, वहां कौन रहते हैं और वहाँ क्या–क्या होता है?
2. आपके राज्य की राजधानी कहाँ है ?
3. आपके देश की राजधानी कहाँ है ?

मुहम्मद बिन तुगलक ने सुल्तान बनने के कुछ साल बाद ऐलान किया कि दक्षिण में स्थित दौलताबाद नाम का शहर अब सल्तनत की राजधानी बनेगी। उसने आदेश दिया कि दिल्ली में रहनेवाले अधिकारी, कर्मचारी, सेनापति, विद्वान, आदि दौलताबाद की ओर कूच करें। जिन लोगों ने उसके आदेश नहीं माने उन्हें कठोर दण्ड दिया गया। जो लोग गए उन्हें रास्ते में बहुत कष्ट सहना पड़ा। कई लोग रास्ते में ही मर गए। दौलताबाद में रहना बहुत से लोगों को पसंद नहीं आया।

आर्या ने पूछा– मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद को राजधानी क्यों बनाई ? इससे उसे क्या फायदा हुआ होगा ? इससे लोगों को बहुत परेशानी हुई होगी।

शिक्षक ने कहा– आप सब तुगलक साम्राज्य का नक्शा मानचित्र 4.2 में देखें और समझने की कोशिश करें कि उसने ऐसा क्यों किया होगा ?

चित्र–4.1 गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा, तुगलकाबाद, दिल्ली

सांकेतिक मुद्रा :

LC5Q6T

मुहम्मद बिन तुगलक की दूसरी प्रमुख योजना थी चाँदी के सिक्कों की जगह ताँबे या पीतल के सिक्के चलाना। उन दिनों खरीदने और बेचने के काम में चाँदी के सिक्के चलते थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी बचाने के लिए ऐलान किया कि उसके ही मूल्य पर ताँबे के सिक्के चलेंगे अर्थात् अगर पहले एक चाँदी के सिक्के पर दस मन गेहूँ मिलता था तो अब एक काँसे के सिक्के के बदले भी उतना ही गेहूँ मिलेगा।

शिक्षक– उन दिनों पूरी दुनिया में चाँदी की कमी हो रही थी और चाँदी की कीमत बढ़ रही थी। शायद इसे देखकर वह चाँदी बचाना चाहता था।

कारण जो भी हो उसका नतीजा बहुत गलत हुआ। कई लोगों ने बहुत सारे जाली ताँबे के सिक्के ढलवा लिए और उसे बाजार में चलाने लगे। चाँदी की जमाखोरी होने लगी। इस कारण पूरी अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गई। अंत में मुहम्मद बिन तुगलक ने ताँबे के सिक्के को वापस ले लिया और लोगों को ताँबे के बदले चाँदी के सिक्के दिए। इससे राजकोष रिक्त हो गया। इसी तरह उसका दोआब में कर वृद्धि, कराजिल और खुरासान अभियान भी असफल रहा।

मुहम्मद बिन तुगलक की ये योजनाएँ भले ही असफल रही हों लेकिन उसका एक काम तारीफ के काबिल था। वह किसी को ऊँचे पद पर नियुक्त करते समय यह नहीं देखता था कि वह आदमी भारतीय है या तुर्क; हिन्दू है या मुसलमान; अमीर है या गरीब; एक कारीगर का बेटा है कि सेनापति का बेटा। जो योग्य था उसी को उसने नौकरी दी। इसका नतीजा यह हुआ कि पुराने तुर्क अमीरों की जगह सामान्य लोगों ने भी ऊँचे पद प्राप्त किए।

इस सबके बावजूद समस्या यह थी कि सल्तनत बहुत बड़ी हो गई थी और उसे एक रखना मुश्किल हो गया था। जगह–जगह सुल्तान के खिलाफ विद्रोह होने लगे और कुछ समय बाद लगभग हर प्रांत एक स्वतंत्र सल्तनत बन गया।

छत्तीसगढ़ पर सल्तनत कालीन शासकों का प्रभाव नहीं था। रतनपुर के कल्चुरि राजा यहाँ राज करते रहे। इनके अंतर्गत अनेक जमींदारियाँ थीं। यहाँ की राजनीति में आदिवासी समाज की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

अभ्यास के प्रश्न

LCEL8G

1. नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए–

(दौलताबाद, देवगिरि, रामेश्वरम्, सिजदा, हुलिया, तुगलकाबाद, कल्चुरियों)

1. अलाउद्दीन ख़िलजी ने सुल्तान बनने के पूर्व .... पर आक्रमण किया था।
2. गयासुद्दीन तुगलक ने .... नगर की स्थापना की थी।
3. सेना में भ्रष्टाचार रोकने के लिए अलाउददीन ख़िलजी ने सैनिकों की .... प्रथा शुरू की थी।
4. दिल्ली में तुर्क सुल्तानों के शासन के समय छत्तीसगढ़ में .... वंश का शासन था।
5. मुहम्मद बिन तुगलक ने .... को नई राजधानी बनाया।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कैकुबाद के बाद दिल्ली का सुल्तान कौन बना ?
2. तारीख–ए–फिरोजशाही के लेखक कौन हैं ?
3. सेना में घोड़ों को दागने की प्रथा किसने शुरू की ?
4. मुहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी की जगह किस धातु के सिक्के चलाए ?
5. अलाउद्दीन के शासनकाल में किसानों को कितना लगान देना पड़ता था ?
6. अलाउद्दीन ने बाजार को नियंत्रित करने के लिए क्या–क्या कदम उठाए ?
7. मुहम्मद बिन तुगलक की प्रमुख योजनाओं का वर्णन करो ।
8. अलाउद्दीन ने लगान–व्यवस्था में क्या सुधार किया ?

योग्यता विस्तार–

मानचित्र 4.1 को देखिए और आपस में चर्चा कर बताइए कि मुहम्मद बिन तुगलक की राजधानी योजना परिवर्तन आपके अनुसार सही था या गलत ?

LCNHA4

5 सल्तनत कालीन जन–जीवन

पिछले अध्यायों में हमने पढ़ा कि कैसे दिल्ली में तुर्क सुल्तानों का शासन स्थापित हुआ। इस नए शासन का हमारे देश के लोगों के जीवन और संस्कृति पर क्या असर पड़ा होगा, आइए इस पाठ में पढ़ें।

विदेशियों का आगमन

सल्तनत के बनने का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि ईरान, ईराक, तुर्किस्तान, समरकंद और बुखारा जैसे इलाकों से बहुत सारे लोग भारत आकर बसे। वे न केवल भारत में आकर बसे, अपितु उन्होंने इसे अपना देश माना। इनमें से प्रमुख था अमीर खुसरो जिसने अपने आपको हिन्दुस्तानी तुर्क कहा। उसने फारसी के साथ–साथ यहाँ की आम बोलचाल की भाषा हिंदवी में भी कविताएँ लिखीं। उसने हिन्दुस्तान की प्रशंसा में कई कविताएँ लिखीं। इसी तरह कई भाषाएँ बोलनेवाले कारीगर, विद्वान संत आदि भारत आकर बसे। विदेशों से बड़ी संख्या में लोगों के इस तरह आने के पीछे एक और कारण था। उन दिनों चंगेज खाँ नामक मंगोल आक्रमणकारी पूरे मध्य एशिया के राज्यों को हराकर उनकी सभ्यता को नष्ट कर रहा था। उसके भय से इन लोगों ने दिल्ली सल्तनत में शरण ली थी। इन सब लोगों ने अपनी हुनर, अपनी विद्वता और धार्मिकता से भारतीय संस्कृति को और समृद्ध किया।

शासक और शासन

सल्तनतकाल में सुल्तान ही सबसे शक्तिशाली और महत्वपूर्ण होता था। शुरू के सुल्तान गुलामी से उठकर सुल्तान बने थे। इस कारण उनके बड़े अधिकारी व सेनापति उनसे दबकर नहीं रहना चाहते थे। लेकिन बल्बन, अलाउद्दीन खिलजी आदि के समय तक सुल्तान राज्य का सर्वेसर्वा बन गया था। बड़े अधिकारी व सेनापति, जिन्हें अमीर कहा जाता था, उन पर सुल्तान का पूरा नियंत्रण बन गया। इस तरह सुल्तान निरंकुश शासक बन गये।

इससे पहले भारत में कई छोटे–छोटे राज्य थे। अब उनकी जगह एक बड़ी सल्तनत बन गयी थी। लेकिन पुराने छोटे राजा समाप्त नहीं हुये थे। वे सुल्तान के अधीन जमींदार बनकर रहने लगे। पहले राजा के अधिकारी उनके रिश्तेदार होते थे और उनका पद प्रायः वंशानुगत होता था। लेकिन अब सुल्तान का अधिकारी कोई भी हो सकता था। कोई भी पद पिता से पुत्र को नहीं मिलता था। राज्य के अधिकारियों का लगातार तबादला भी होता रहता था।

सल्तनत के बनने से शासन व्यवस्था में कौन–कौन से तीन महत्वपूर्ण बदलाव आए ?

गाँव के लोगों के जीवन में बदलाव

पहले की तरह लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती ही था। लेकिन सल्तनत की लगान व्यवस्था का असर लोगों पर पड़ा। आपको याद होगा कि पहले गाँव किसी न किसी सामंत के राजस्व

वसूली के लिए दिया जाता था और वह मनमाने तरीके से तरह–तरह के छोटे–बड़े कर वसूल करता था। लेकिन अब सुल्तानों ने इस व्यवस्था को समाप्त कर दिया। अब सुल्तान के अधिकारी लगान इकट्ठा करते थे। कई छोटे करों की जगह एक बड़ा लगान तय किया गया। यह खेत की उपज का लगभग आधा था। यह लगान गाँव के मुखिया इकट्ठा करके सुल्तान के अधिकारियों को देते थे। अक्सर सुल्तान किसानों को लगान नगद देने पर मजबूर करते थे। इस कारण किसानों को अपना अनाज शहरों में ले जाकर बेचना पड़ता था। इससे किसानों का शहरों में आना जाना बढ़ गया।

शहरों में बदलाव

सुल्तान व उसके अधिकारी शहरों में ही बसे थे और किसानों से इकट्ठा किए गए लगानों को शहरों के विकास में खर्च करते थे। इससे शहरों का तेजी से विकास हुआ। वहाँ अब तरह–तरह के कारीगर, मिस्त्री, बुनकर, दर्जी, बढ़ई, लोहार आदि बसने लगे। शहरों के विकास के साथ व्यापार भी बढ़ा। तुर्क अपने साथ कई नए तकनीक और उद्योग लाए। इसका लोगों के व्यवसाय और संस्कृति पर गहरा असर पड़ा।

चित्र–5.1 मीनार, गुंबद और मेहराब

मध्य एशिया के कारीगर जो तुर्कों के साथ भारत आए इमारत बनाने के कई नये तरीकों को भी साथ लाए। इनमें से महत्वपूर्ण थे, जुड़ाई में चूना–गारे का प्रयोग, मीनार, गुंबद व मेहराब का उपयोग। आप आज भी इनका उपयोग अपने आस–पास की इमारतों में देख सकते हैं।

आप जिस पुस्तक को पढ़ रहे हैं वह कागजों से बनी है। कागज बनाने की कला और पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाने की कला भारत में तुर्क लाए। उन्होंने वह कला चीन के लोगों से सीखी थी। घोड़ों के खुरों पर नाल लगाना और रकाब लगाना भी तुर्कों ने ही भारत में शुरू करवाया। इसी तरह सूत कातने के लिए चरखे का उपयोग सल्तनतकाल में हुआ था। इससे पहले लोग तकली से सूत कातते थे। तुर्कों के प्रभाव से नए तरह के सिले हुए कपड़ों, खासकर पायजामा–कुरता, सलवार कमीज आदि का उपयोग भारत में शुरू हुआ। इसी काल में नए तरह के पकवानों का चलन भी शुरू हुआ। जैसे– हलुआ, समोसा, आदि। उस समय समोसा में कीमा भरकर तला जाता था।

संदर्भ–मध्यकालीन भारत – लेखक इरफान अली

दूसरी ओर तुर्कों ने भी भारत से कई बातें सीखीं। अल्बरूनी भारत आया ही इसीलिए था। उसने क्या सीखा याद करें ?

अरब के विद्वानों ने भारत के विद्वानों से गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और योग सीखकर अपने देशों में उनका प्रसार किया। गिनती में शून्य का उपयोग करना भारत के विद्वानों से अरब के गणितज्ञों ने सीखा और उसे यूरोप में फैलाया। उन्होंने पंचतंत्र की कहानियों एवं आयुर्वेद के ग्रंथों को अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद किया और इनसे लाभ उठाया।

धर्म

सल्तनत काल में इस्लाम धर्म का प्रभाव काफी बढ़ा। भारत में इस्लाम का आगमन कई सदियों पहले हो गया था। यह धर्म पश्चिमी तट पर अरब व्यापारियों के साथ आया था। सुल्तानों ने इस्लाम को काफी बढ़ावा दिया। उन्होंने बड़ी–बड़ी मस्जिदें बनवाईं और इस्लामी संतों व धार्मिक विद्वानों को बहुत धन दान में दिया। मंगोल आक्रमण के कारण मध्य एशिया से भी कई इस्लामी विद्वान व संत भारत आए।

शेख निजामुद्दीन औलिया व अमीर खुसरो

शेख निजामुद्दीन औलिया दिल्ली में रहनेवाले एक प्रसिद्ध सूफी संत थे। उनके खानकाह (आश्रम) में फकीर, मौलवी, योगी, बड़े–बड़े अधिकारी, गाँव–शहर के आम लोग सभी जाते थे और उनसे धर्म की बातों पर चर्चा करते थे। आमतौर पर सूफी संत दो बातों पर जोर देते थे– ईश्वर से प्रेम व दुखी लोगों की सेवा।

अमीर खुसरो शेख निजामुद्दीन के प्रिय शिष्य थे। वे एक सैनिक होने के साथ–साथ एक प्रसिद्ध कवि भी थे। उन्होंने फारसी व हिंदवी (हिन्दी का पुराना स्वरूप) में अनेक कविताएं लिखीं। उन्हें पशु–पक्षी, ज्ञान–विज्ञान और संगीत से बेहद लगाव था। आपने तबले और सितार की मधुर आवाजें तो सुनी होंगी। कहा जाता कि इनका आविष्कार भी अमीर खुसरो ने ही किया था। वह कहते थे– संगीत के प्रति न केवल मनुष्यों बल्कि पशुओं का भी आकर्षण है। उन्हें हिंदवी और हिंदुस्तान से बहुत प्रेम था। उन्होंने हिन्दुस्तान की प्रशंसा में कई गीत लिखे। वे अपने आपको **तोता–ए–हिंद** कहते थे। उनकी पहेलियाँ आज भी लोगों की जुबान पर होती हैं। क्या आप उनके इन पहेलियों के उत्तर बता सकते हैं ?

1. सावन भादो खूब चलत है, माघ पूस में थोरी।
   अमीर खुसरों यूं कहे, तू बूझ पहेली मोरी।।
2. एक थाल मोती से भरा।
   सबके सिर पर औंधा धरा।।

इन सबके प्रभाव में भारत के कई लोगों ने परिस्थितिवश इस्लाम धर्म को स्वीकार किया। इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है जो एक ही ईश्वर को मानता है। इस्लाम में मूर्तिपूजा वर्जित है और इसमें जात–पात, ऊँच–नीच आदि भावनाओं के लिए भी जगह नहीं है। इस्लाम में माना गया है कि सभी लोग ईश्वर के सामने समान हैं। सभी लोग मिलकर सरल और सीधे तरीके से ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।

सल्तनत काल की स्थापना के पूर्व इस्लाम में कई धाराएँ और संप्रदाय बन गए थे जैसे शिया, सुन्नी, सूफी, इस्माइली आदि। इन सभी सम्प्रदायों से संबंधित मुसलमान, विद्वान व संत भारत में बस गए।

सल्तनत काल में इस्लाम व हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों के बीच विचारों का आदान–प्रदान और मेल–मिलाप हुआ। इस्लाम के एकेश्वरवाद ने हिंदू संतों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। उसी तरह योग और गीता का गहरा प्रभाव इस्लामी संतों पर भी पड़ा। कई संत इस नतीजे पर पहुँचे कि सभी धर्म एक ही ईश्वर की भक्ति की बात करते हैं। वे विभिन्न धर्मों के बीच के अंतर को मिटाना चाहते थे। ऐसे ही संत थे कबीर व नानक। कबीर व नानक जैसे संत ऊँच–नीच, जात–पाँत का विरोध करते थे साथ ही सभी धर्मों के आडंबर एवं पाखंड को समाप्त करना चाहते थे। वे ईश्वर के प्रति सच्चे प्रेम और मानवता के मूल्यों को बढ़ावा देना चाहते थे। छत्तीसगढ़ में सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक सद्भाव की भावना सर्वत्र विद्यमान थी।

LCXDBR

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. सल्तनत काल में लोगों का मुख्य व्यवसाय .... था।
2. अमीर खुसरो .... के शिष्य थे।
3. .... अपने आपको तोता–ए–हिंद कहते थे।
4. सल्तनत के स्थापित होने से पुराने राजा सुल्तान के अधीन .... बनकर रहने लगे।
5. गिनती में शून्य का उपयोग .... के विद्वानों की देन है।

2. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. दिल्ली सल्तनत काल में कहाँ–कहाँ से लोग भारत में आकर बसने लगे ?
2. सल्तनत काल में सबसे शक्तिशाली कौन होता था ?
3. सल्तनतकालीन किन्हीं दो संतों के नाम लिखें।
4. सल्तनत काल में बड़े अधिकारी और सेनापति को क्या कहा जाता था ?
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना से गाँव के लोगों के जीवन में क्या बदलाव आया ?
6. तुर्कों के आगमन से भवन निर्माण कला के क्षेत्र में क्या परिवर्तन हुए ?
7. तुर्कों ने भारत से क्या–क्या सीखा ?
8. तुर्कों ने हमारे सामाजिक जनजीवन को कैसे प्रभावित किया ?
9. संतों के मेल–मिलाप ने किस नई विचारधारा को जन्म दिया ?

योग्यता विस्तार–

1. सल्तनत कालीन विद्वानों एवं सूफी–संतों की सूची बनाइए और उनके चित्र इकट्ठे कीजिए।
2. कबीर के बारे में पता करें एवं उनकी कुछ कविताओं को ढूँढ़कर लिखिए।

6 मुगल साम्राज्य की स्थापना

(बाबर से अकबर तक, सन् 1526 से 1605)

LD79DE

पिछले पाठों में आपने पढ़ा है कि तुर्क सुल्तानों ने छोटे–बड़े कई राजाओं को हराकर एक विशाल सल्तनत की स्थापना की। लगभग दो सौ वर्षों तक भारत में दिल्ली सल्तनत का शासन था। शासन करनेवाला अंतिम वंश–लोदीवंश था जिसकी स्थिति कमजोर थी। उन दिनों पूरे भारत में फिर से कई छोटे साम्राज्य बन गए थे।

बाबर (सन् 1526–1530)

बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। बाबर को तुर्किस्तान में फरगना का एक छोटा–सा राज्य अपने पिता से उत्तराधिकार में मिला था। वह तेरह साल की उम्र में फरगना की गद्दी पर बैठा। लेकिन उसकी कम उम्र का लाभ उठाकर उसके विरोधियों ने उसे फरगना से बाहर कर दिया। बाबर लगातार संघर्ष करता रहा मगर फरगना पर अधिकार नहीं कर पाया। तब उसने काबुल पर अपना अधिकार जमाया। काबुल में वह अपने राज्य का विस्तार करने और अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील रहा। मध्य एशिया में कई ताकतवर शासक थे इसलिए बाबर को वहां कुछ स्थाई सफलता नही मिली। उस समय दिल्ली में लोदी सुल्तानों का शासन था। इसी समय बाबर को पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ ने, जो इब्राहीम लोदी को गद्दी से हटाना चाहता था,दिल्ली पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया।

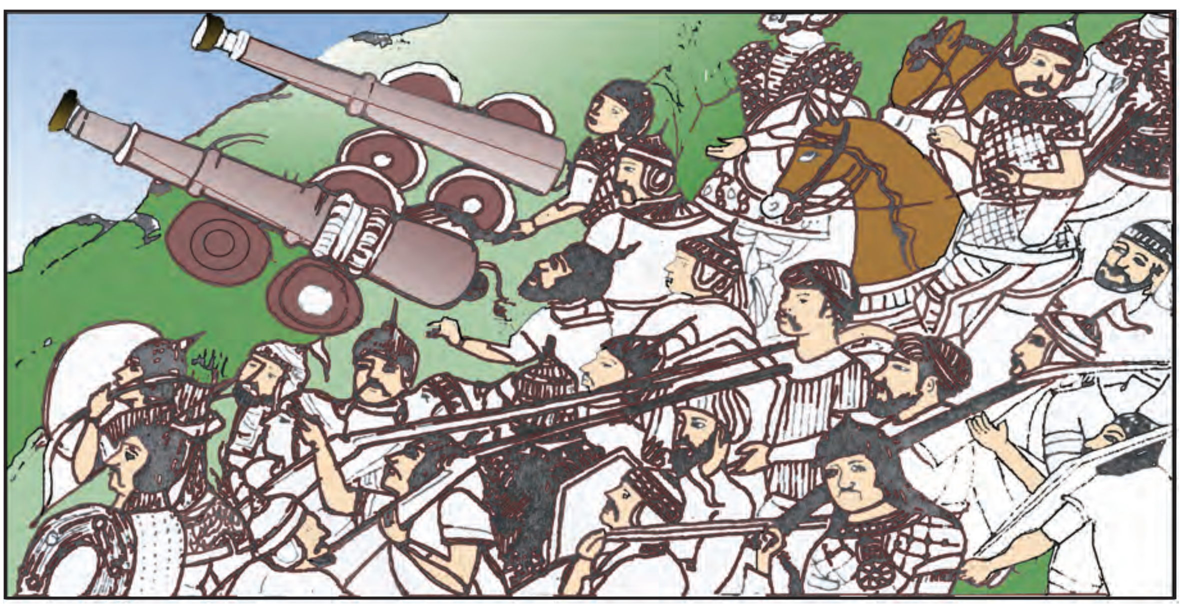

चित्र–6.1 बाबर की सेना

सेना के इस चित्र में आप उस समय भारत में आनेवाले कुछ नए हथियारों की पहचान कीजिए।

बाबर ने 1526 में पानीपत के मैदान में सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त किया। बाबर के पास अच्छी बंदूकें एवं बारूदी तोपें थीं जो भारत के शासकों के पास नहीं थीं। उसके पास कुशल तीरंदाज घुड़सवार थे जो लोदी की सेना में नहीं थे। बाबर की सेना छोटी थी किन्तु अच्छी तरह प्रशिक्षित एवं अनुभवी थी। बाबर ने स्वयं बड़ी कुशलतापूर्वक सेना का संचालन किया, इसलिए बाबर की विजय हुई।

बाबर के सरदार भारत में धन–खजाना लूटकर काबुल लौटना चाहते थे, किंतु बाबर भारत में ही रहकर राज्य की स्थापना करना चाहता था। अपनी विजय को बनाए रखने तथा अपने राज्य के विस्तार के लिए उसने आस–पास के कई राज्यों को हराकर उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया।

बाबर और राणा साँगा

उन दिनों राणा साँगा मेवाड़ का राजपूत राजा था। एक विशाल सेना लेकर राणा साँगा ने बाबर को रोकने का प्रयास किया। राणा साँगा अनुभवी एवं कुशल सेनानायक थे। उसके साथ कई राजपूत राजा व अफगान सरदार मिल गए थे। राणा साँगा की सेना में बाबर की सेना से ज्यादा सैनिक थे। राजपूतों की तैयारी देखकर बाबर की सेना हताश हो गई। उसके सैनिक बिना लड़े ही वापस लौटना चाहते थे। ऐसे में बाबर ने अपने सैनिकों को उत्साहित किया। बाबर ने भविष्य में कभी शराब न पीने का संकल्प किया। उसने सैनिकों को एकत्र कर एक जोशीला भाषण दिया "वीर सैनिकों! इस दुनिया में जो जन्म लेता है वह एक दिन अवश्य मरता है। हिम्मत से युद्ध करो। यदि युद्ध में हम विजयी होंगे तो हमें साम्राज्य मिलेगा, यदि मारे गए तो शहीद होंगे। सम्मान के साथ मरना अपमानित जीवन से कहीं अच्छा होता है।" बाबर के भाषण का उसके सैनिकों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सन् 1527 में खानवा के मैदान में भीषण युद्ध हुआ जिसमें राणा साँगा की हार हुई।

राणा साँगा की हार के बाद बाबर के सामने कोई शक्तिशाली शत्रु न रहा। इस तरह बाबर ने दिल्ली में मुगल सत्ता को स्थापित किया। बाबर सुंदर बगीचों का शौकीन था। उसने भारत में मुगल शैली के कई बाग बनवाए।

बाबर ने अपने जीवन के अनुभवों को विस्तारपूर्वक अपनी आत्मकथा में लिखा है। यह तुर्की भाषा में है और इसका नाम तुजुक–ए–बाबरी है। इसे **बाबरनामा** भी कहते है।

1. बाबर की सेना के पास ऐसा क्या था जो लोदी सुल्तान की सेना में नहीं था?
2. आपके विचार में बाबर ने भारत में साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय क्यों किया होगा?
3. बाबर को इब्राहीम लोदी से ज्यादा खतरा राणा साँगा से लगा। आपके विचार में ऐसा क्यों था ?

हुमायूँ (सन् 1530 से 1556)

बाबर की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा हुमायूँ बादशाह बना। पिता के जीते हुए इलाकों को संभालने में उसे काफी कठिनाइयाँ आईं। हुमायूँ को अपने भाइयों के अलावा गुजरात के सुल्तान,

राजपूत और अफगान सरदारों के विरोध का सामना करना पड़ा। वह गुजरात और मालवा के प्रांतों को विजय करने में सफल रहा, किन्तु पूर्वी भारत में अपना अधिकार स्थापित न कर सका। इस क्षेत्र के अफगान सरदार शेरशाह ने उसे हरा दिया। इस हार के कारण हुमायूँ को सन् 1540 में भारत से भागना पड़ा। इसके बाद लगभग 15 सालों तक वह भटकता रहा। उसने ईरान के शाह की शरण ली और उसकी मदद से सन् 1555 में फिर से दिल्ली में मुगल साम्राज्य की स्थापना की लेकिन सन् 1556 में दिल्ली के पुराना किला में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतरते समय उसका पैर फिसला और उसकी मृत्यु हो गई।

शेरशाह (सन् 1540 से 1545)

आप यह जानते हैं कि हुमायूँ को बिहार के शेरशाह नाम के अफगान सरदार ने हराया और उसे भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। शेरशाह एक अफगान सरदार का पुत्र था। बिहार के सासाराम में उसकी छोटी–सी जागीर थी। उसने कई छोटे–बड़े राजपूत और अफगान सरदारों को हराया।

चित्र–6.2 शेरशाह सूरी का मकबरा, सासाराम, बिहार

शेरशाह ने अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अनेक सुधार किए। उसका एक राज्य अधिकारी राजा टोडरमल ने भू–सुधार कार्य में सहयोग दिया। शेरशाह के शासन में सड़कें, शराएँ और जल–व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि आम जनता को सुविधाएँ प्राप्त हों, जिन्हें बाद में अकबर ने भी अपनाया और आगे बढ़ाया। शेरशाह ने नए सिक्कों का चलन प्रारंभ किया। पहला था ताँबे का सिक्का जिसे दाम कहते थे तथा दूसरा चाँदी का सिक्का जिसे रुपया कहते थे। उसने सासाराम में अपने लिए एक भव्य मकबरा भी बनवाया। इसके समय में सड़क निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया गया। लेकिन शेरशाह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहा। सन् 1545 में कालिंजर दुर्ग में आक्रमण के समय उसकी मृत्यु हो गई।

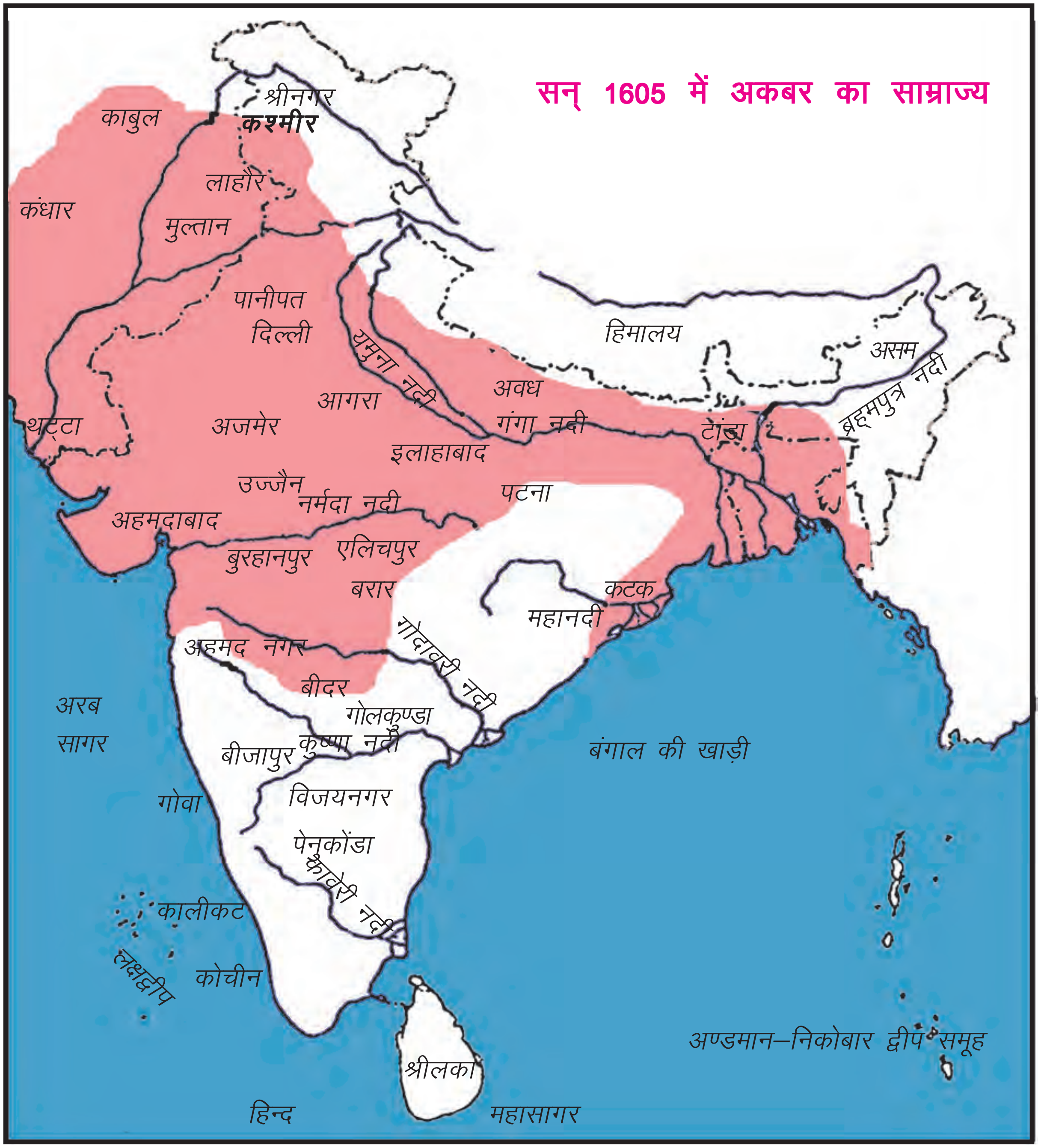

मानचित्र–6.1

अकबर (सन् 1556 से 1605 ई. तक)

पिता हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर बहुत छोटा था, लगभग आप लोगों की उम्र का। हुमायूँ के विश्वासपात्र बैरम खाँ ने उसका राज्याभिषेक किया। बालक अकबर के लिए यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व था। बालिग होने तक अकबर ने अपने संरक्षक बैरम खाँ की देखरेख में राजकाज किया। फिर उसने शासन की बागडोर स्वयं सम्हाल ली तथा योग्यतापूर्वक शासन किया।

चित्र–6.3 अकबर एवं उनका दरबार

राज्य–विस्तार

अकबर एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहता था इसलिए उसने आसपास के क्षेत्रों में विजय अभियान शुरू किया। उसकी सेना ने बहुत तेजी से पूरे उत्तर भारत पर विजय पा ली। सन् 1561 में मालवा, 1564 में गोंडवाना, 1568 में चित्तौड़, 1572 में गुजरात और 1574 में बंगाल मुगल साम्राज्य के भाग बन गए। फिर सन् 1586 से 1600 के बीच कश्मीर, सिंध, कंधार, ओडिशा और दक्षिण में बरार, अहमदनगर और खानदेश भी साम्राज्य में मिला लिए गए। मानचित्र–6.1 में इन जगहों को पहचानें।

अकबर एक ऐसा साम्राज्य बनाना चाहता था जिसका भारत के सभी महत्वपूर्ण और ताकतवर लोग साथ दें। शुरू में उसके प्रमुख अधिकारी व सेनापति बाहर से आए तुरानी या ईरानी लोग थे। धीरे–धीरे अकबर ने भारतीय मुसलमान खासकर वे लोग जो सूफी संतों के परिवारों के थे और अफगान जमींदारों को सल्तनत का अधिकारी बनाया। वह राजपूत राजाओं को भी अपना अधिकारी बनाना चाहता था। इसके लिए उसने राजपूत राजाओं के प्रति दोस्ती का हाथ बढ़ाया। उसने राजपूत राजाओं से वादा किया कि अगर वे उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे तो वह उनका साम्राज्य लौटा देगा। उन्हें बड़े–बड़े पद भी दिए जाएँगे और वह किसी भी धर्म से भेदभाव नहीं करेगा।

उसने अनेक राजपूत परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसने जयपुर के पास स्थित आमेर के कछवाहा वंश के राजा भारमल की सहायता की तथा उसके पुत्र भगवानदास तथा पोते मानसिंह को शाही सेवा में ऊँचे पद दिए। राजा भारमल ने अपनी बेटी का विवाह भी अकबर के साथ कर दिया। शादी के बाद भी राजपूत रानियों को संपूर्ण धार्मिक आजादी थी। अकबर की राजपूत नीति के कारण अनेक राजपूत राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार की। मेवाड़ के राणा प्रताप को छोड़कर राजस्थान के लगभग सभी शासक अकबर की अधीनता स्वीकार कर चुके थे।

चित्र–6.4 राणा प्रताप

अकबर और राणा प्रताप

सन् 1576 में अकबर ने राणा प्रताप के खिलाफ राजा मानसिंह एवं राजकुमार सलीम के नेतृत्व में एक विशाल सेना चित्तौड़गढ़ भेजी। मुगल सेना और राणा प्रताप की सेना के बीच हल्दीघाटी में युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना विजयी हुई। किन्तु राणा प्रताप

ने हार नहीं मानी। वे चित्तौड़गढ़ की पहाड़ियों में रहकर अपने जीवनपर्यंत मुगलों से संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने मंत्री मेवाड़ के भामाशाह द्वारा उन्हें (राणा प्रताप को) समर्पित धन से अपनी सेना का पुनः संगठन किया और अनेक क्षेत्रों पर अपना अधिकार पुनः स्थापित करने में राणा प्रताप सफल भी हुए।

रानी दुर्गावती और अकबर

गोंड़वाना या गढ़ाकंटगा विस्तृत और संपन्न राज्य था। इस राज्य की राजधानी चौरागढ़ थी और मुख्य निवासी गोड़ थे। सन् 1548 में राजा दलपत के देहावसान के बाद रानी दुर्गावती अपने पाँच वर्षीय पुत्र वीरनारायण सिंह की संरक्षिका बनीं और अपने मंत्रियों के परामर्श एवं सहायता से सफलतापूर्वक शासन करती रहीं। अपनी उदारता, दक्षता एवं सुयोग्य प्रशासन से गोड़वाना में उसने राजनीतिक एकता स्थापित कर ली थी। गोंड़वाना की समृद्धि एवं धन सम्पन्नता को देखकर साम्राज्य विस्तार की भावना से अकबर आक्रमण करना चाहता था। इसलिए आसफ खाँ के नेतृत्व में गोंड़वाना पर आक्रमण किया। रानी ने कवच और शिरस्त्राण धारण कर हाथी पर सवार होकर मुगल सेना पर आक्रमण किया। इस बीच दुर्भाग्य से उसे एक तीर लगा जिससे वह बेहोश हो गयी। होश आने पर उसे अपनी पराजय का पता लगा। शत्रु द्वारा पकड़े जाने और अपमानित होने की आशंका से छाती में कटार भोंककर शहीद हो गई। छत्तीसगढ़ उस समय रतनपुर राज्य कहलाता था। यहाँ पर कल्चुरि राजवंश का प्रशासन प्रभावशील था।

इस तरह अकबर की इन नीतियों के कारण उसके पदाधिकारियों में ईरानी व तुरानियों के अलावा अफगान, भारतीय मुसलमान, राजपूत राजा आदि भी शामिल हो गए थे।

शासन व्यवस्था

अकबर ने अपने विशाल साम्राज्य की व्यवस्था किस प्रकार की ? उसने अपने विशाल साम्राज्य को पंद्रह सूबों में बाँटा। सूबे का क्षेत्र लगभग आज के प्रदेश जैसा ही था। प्रत्येक सूबा (प्रांत), सरकारों (जिलों) में बँटा हुआ था और प्रत्येक सरकार बहुत से परगनों (तहसीलों) में विभाजित था। कई गाँवों के समूहों से एक परगना बनता था। अकबर ने केन्द्र से लेकर परगना तक जिम्मेदार अधिकारियों को नियुक्त किया। मुगल शासन के अधिकारियों को मनसबदार कहा जाता था।

ये मनसबदार कौन थे? उनका क्या काम था?

मनसबदारी व्यवस्था

मुगल साम्राज्य में काम करने वाले अधिकारियों व सेनापतियों को मनसबदार कहा जाता था। प्रत्येक मनसबदार को उसकी सेना के अनुसार एक दर्जा दिया जाता था जिसे मनसब कहते थे। सभी मनसबदारों को बादशाह खुद नियुक्त करता था और उनपर बादशाह का सीधा नियंत्रण होता था। सभी मनसबदारों को घुड़सवारों की एक फौज तैयार रखनी पड़ती थी और जब भी बादशाह को उनकी जरूरत पड़ती उन्हें अपनी फौज के साथ जाना पड़ता था। बादशाह उन्हें अपनी जरूरत के अनुसार कहीं भी नियुक्त कर सकता था। इसके बदले मनसबदारों को विशेषकर बड़े मनसबदारों को बहुत ऊँचे वेतन दिये जाते थे। वे काफी शानशौकत का जीवन बिताते थे।

लेकिन मनसबदारों का वेतन सीधा रुपयों में नहीं मिलता था। उन्हें किसी क्षेत्र से लगान इकट्ठा करके वेतन के बदले रखने को कहा जाता था। इन क्षेत्रों को जागीर कहते थे। वह मनसबदार उस इलाके का जागीरदार कहा जाता था।

मनसबदारों का समय–समय में तबादला कर दिया जाता था ताकि वे स्थानीय लोगों से मिलकर बादशाह के विरुद्ध विद्रोह न करें। साथ ही अकबर ने ऐसी व्यवस्था बनाई कि कोई भी अधिकारी मनमानी न करे और सभी लोग बादशाह की आज्ञा का पालन करे।

मनसबदारों को वेतन किस रूप में मिलता था ?

लगान–व्यवस्था

अकबर जब बादशाह बना तो किसानों से लगान इकट्ठा करने की व्यवस्था काफी कमजोर थी। छोटे अधिकारी व जमींदार किसानों पर मनमानी करते थे। लगान वसूली कभी ज्यादा तो कभी कम हो जाती थी। इसलिए अकबर ने तय किया कि किसान लगान रुपयों में देंगे, न कि अनाज में। किसान जितनी जमीन में खेती करता था उसके हिसाब से उसका लगान तय कर दिया जाता था। आमतौर पर किसानों को अपनी उपज का एक तिहाई या आधा हिस्सा लगान के रूप में देना पड़ता था। किसानों से लगान इकट्ठा करने में स्थानीय जमींदार अधिकारियों की मदद करते थे। किसानों से इकट्ठा किए गए लगान से ही राज्य का खर्चा चलता था।

आज के सरकारी अधिकारियों व मुगल अधिकारियों में क्या समानताएँ व क्या समानताएँ हैं ?

धार्मिक नीति

LDG5F2

सन् 1575 से 1585 के बीच अकबर ने कई धर्म गुरुओं से उनके धर्म के बारे में चर्चा की। उसने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी में मस्जिद के पास एक इबादतखाना (प्रार्थना गृह) बनवाया। इसमें उसने इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों के धर्मगुरुओं के अलावा योगियों, हिन्दू, जैन, पारसी व ईसाई धर्मगुरूओं को भी चर्चा के लिए आमंत्रित किया। इन चर्चाओं के फलस्वरूप उसके मन में यह धारणा बनी कि सभी धर्मों में सच्चाई व अच्छाई है। दुनिया में विविधता, अलग–अलग संस्कृति व धर्म, ईश्वर की इच्छा से बने हैं। अतः शासकों को भी इस विविधता को बनाए रखना चाहिए और असहिष्णुता से बचना चाहिए। उन्हें ''सब के प्रति शांति'' (सुलहकुल) की नीति अपनानी चाहिए। इस नीति को बनाने में अकबर के सहयोगी अबुल फजल का महत्वपूर्ण योगदान था। उसी ने अकबर के राज्यकाल का विस्तारपूर्वक इतिहास अकबरनामा लिखा है।

इसी नीति के अनुकूल अकबर ने हिन्दुओं पर लागू जजिया व तीर्थ–यात्रा–कर हटा दिया; मंदिर बनाने की अनुमति दी और हिंदू व जैन मंदिरों व मठों को दान दिया। उसने रामायण, उपनिषद, महाभारत जैसे ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया। अकबर ने अपने निजी जीवन में भी कई धर्मों की बातों का समावेश किया। वह रोज सूरज की पूजा करता था, मांस, मदिरा आदि का उपयोग कम करने लगा था और दीवाली, नौरोज जैसे त्यौहार मनाता था। उसकी इस नीति से मुगल साम्राज्य को सभी लोगों का समर्थन मिला।

अकबर ने करीब 50 वर्षों तक राज किया। उसके बाद उसका पुत्र जहाँगीर बादशाह बना।

LDQ1GP

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. मुगल साम्राज्य के सभी अधिकारियों को .... कहा जाता था।
2. अकबरनामा के लेखक .... हैं।
3. प्रत्येक मनसबदार को .... की एक टुकड़ी रखनी पड़ती थी।
4. मनसबदारों को वेतन .... के रूप में मिलता था।
5. तांबे के बने सिक्के को .... कहते हैं व चांदी के बने सिक्के को .... कहते हैं।

2. सही/गलत बताएँ–

1. अकबर की व्यवस्था में किसानों को लगान अनाज के रूप में देना पड़ता था।
2. अधिकारी किसान के बोए गए जमीन की नापकर लगान तय करते थे।
3. किसान को अपनी उपज का एक चौथाई भाग लगान के रूप में देना पड़ता था।
4. लगान इकट्ठा करने में अधिकारियों की मदद जमींदार करते थे।

3. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. बाबर के जीवन के बारे में हमें किस स्रोत से पता चलता है ?
2. हुमायूँ को भारत छोड़कर क्यों जाना पड़ा ?
3. क्या छत्तीसगढ़ अकबर के राज्य के अंदर था?
4. बाबर ने भारत में कौन–सी कला को विकसित करने की पहल की ?
5. राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता क्यों नहीं स्वीकार की ?
6. प्रायः लोग अकबर की किन नीतियों से ज्यादा प्रभावित हुए होंगे ?
7. मनसबदारों की नियुक्ति कौन करता था ?
8. मनसबदारों का तबादला क्यों होता था ?
9. अकबर की धार्मिक नीति का वर्णन कीजिए ?
10. अकबर की लगान–व्यवस्था की विशेषतायें बताइए ?

योग्यता विस्तार–

1. मुगलकालीन कुछ प्रमुख इमारतों के चित्रों को एकत्रित कर नामांकित कीजिए।
2. मुगल बादशाहों के नाम की सूची बनाइए।
3. मुगल बादशाह अकबर के काल के त्यौहार और वर्तमान त्यौहार में क्या अंतर है?

7 विरोध और विद्रोह का समय

LDYHIC

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि बादशाह अकबर ने 50 सालों तक शासन करके एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसके बाद उसका बेटा जहाँगीर सन् 1606 से 1627 तक और उसके बाद जहाँगीर का बेटा शाहजहाँ 1627 से 1658 तक बादशाह रहे। शाहजहाँ के काल में दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद और आगरा में प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण हुआ।

सन् 1657 में बादशाह शाहजहाँ बीमार पड़ा और उसके चारों बेटे दाराशिकोह, औरंगजेब, शाहशुजा और मुराद बादशाह बनने के लिए आपस में युद्ध करने लगे। इस युद्ध में औरंगजेब ने अपने सभी भाईयों को पराजित कर दिया और वह सन् 1658 में दिल्ली का बादशाह बना। उसने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर लिया और कैद में ही 8 वर्षों बाद शाहजहाँ की मृत्यु हुई। औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का सबसे अधिक विस्तार हुआ। उसे कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। छत्तीसगढ़ में प्राचीन शासन पद्धति ही प्रचलित थी क्योंकि यहाँ पर किसी मुगल सूबेदार के शासन करने का उल्लेख नहीं मिलता।

किसानों, जमींदारों का विद्रोह

शाहजहाँ और औरंगजेब के समय में मुगल साम्राज्य के किसानों की हालत काफी बिगड़ने लगी थी। पूरे साम्राज्य का आर्थिक भार उन्हीं पर पड़ रहा था। सेना का खर्च, लाल किला व ताजमहल जैसी इमारतों के निर्माण का खर्च भी काफी बढ़ गया था। इसका नतीजा यह हुआ कि किसानों पर लगान का बोझ लगातार बढ़ता गया। अकबर के समय किसानों से सरकारी लगान के अलावा गाँव के जमींदार, मुखिया, पटवारी आदि भी किसानों से वसूली करते थे।

जब लगान ज्यादा हो जाता था, तब किसान या तो गाँव छोड़कर चले जाते थे या फिर मिलकर शासन के खिलाफ विद्रोह कर देते थे। औरंगजेब के समय कई विद्रोह हुए जिनमें किसानों की सक्रिय भूमिका थी। जैसे मथुरा के पास के जाट किसानों का विद्रोह, अलवर के मेवाती लोगों का विद्रोह, पंजाब के सतनाम पंथी व सिक्खों का विद्रोह, बुंदेलखण्ड के बुंदेलों का विद्रोह, अफगानिस्तान के रौशनियाओं का विद्रोह। इनमें आमतौर पर स्थानीय जमींदारों ने किसानों का साथ दिया। जमींदार चाहते थे कि वे स्वतंत्र राजा बनें। किसानों व जमींदारों के इन विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलाकर रख दी।

1. कौन–कौन लोग किसानों के उत्पादन का हिस्सा लेते थे ?
2. अगर किसान गाँव छोड़कर चले जाते तो जागीरदारों पर क्या असर पड़ता ?

जागीरों की कमी

मुगल शासन में अधिकारियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। लेकिन सभी अमीरों के लिए पर्याप्त जागीरें नहीं थीं। जागीरों की कमी के कारण जागीरदारों में असंतोष और अनुशासनहीनता बढ़ने लगी। जागीरदारों के सामने आए संकट का भी दबाव था। इस समस्या से बचने के लिए जागीरों के अंदर ही खेती को बढ़ावा दिया जा सकता था ताकि जागीरदारों की आय बढ़ सके। परंतु जागीरदारों की इस काम में रुचि नहीं थी क्योंकि जगीरदारों का तबादला होता रहता था एवं उन्हें हमेशा जागीर के छीने जाने का डर भी बना रहता था।

LE8SJZ

1. औरंगजेब के समय में जागीरों की कमी क्यों पड़ी ?
2. जागीरों की कमी का अमीरों पर क्या असर पड़ा ?
3. जागीरदार अपनी जागीर में खेती को क्यों नहीं बढ़ावा देना चाहते थे ?

साम्राज्य बढ़ाने की कोशिश

औरंगजेब के सामने जागीर की कमी से निपटने का एक और रास्ता था। वह था अपने राज्य को बढ़ाना और दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिला लेना।

मुगल साम्राज्य के पूर्व में अहोम राज्य था जो कि वर्तमान असम राज्य में है। औरंगजेब के अमीर मीर जुमला ने अहोम राजा को हरा दिया और उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया। लेकिन मीर जुमला के मरने के बाद असम मुगलों के हाथ से निकल गया।

चित्र–7.1 औरंगजेब

मुगल साम्राज्य के दक्षिण में दो महत्वपूर्ण राज्य बीजापुर और गोलकुंडा थे। औरंगजेब ने सन् 1687 तक इन दोनों राज्यों को पराजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। औरंगजेब जीत तो गया था लेकिन उसे जल्दी ही पता लग गया कि बीजापुर तथा गोलकुंडा को जीतने से उसकी कठिनाइयाँ बढ़ गईं। यह औरंगजेब के जीवन का आखिरी और सबसे कठिन समय था। उसे इन जीते हुए राज्यों के अधिकारियों को अपने पक्ष में करने के लिए जागीरें भी देनी पड़ी थीं। परंतु इस समय राज्यों से जितनी (लगान से) आमदनी होती थी उतनी ही वहाँ के अमीरों पर खर्च हो जाती थी। इस तरह इस विजय से कुछ खास फायदा नहीं हुआ और पुराने अधिकारियों के लिए जागीरों की कमी बनी रही।

औरंगजेब को अपने साम्राज्य के विस्तार करने की आवश्यकता क्यों हुई ?

जोधपुर व मेवाड़ का विद्रोह

जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के बाद औरंगजेब उसके बेटे की जगह किसी और को वहाँ का राजा नियुक्त करना चाहता था। लेकिन राठौड़ वंश के राजपूतों को यह स्वीकार नहीं था। तब उन्होंने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया जिसमें उसे मेवाड़ (उदयपुर) के राणा का भी सहयोग मिला। यहाँ तक कि औरंगजेब के निर्णयों से नाखुश होकर उसके बेटे ने भी इन राजपूतों का साथ दिया। इसके बाद जो युद्ध हुआ, उसमें राजपूतों की हार तो हुई मगर वे लंबे समय तक लड़ते रहे।

शिवाजी व मराठा राज्य

मराठे, महाराष्ट्र के पश्चिमी पहाड़ी भागों के रहने वाले कुशल योद्धा थे। बीजापुर और गोलकुंडा जैसे दक्षिणी राज्यों में मराठा सरदारों को ऊँचे पद मिले हुए

चित्र–7.2 छत्रपति शिवाजी

थे। ऐसे ही एक सरदार शाह जी भोंसले और उसकी पत्नी जीजाबाई का बेटा शिवाजी था। शिवाजी एक स्वतंत्र मराठा राज्य बनाना चाहते थे।

शुरू में शिवाजी ने छोटे–छोटे मराठा जमींदारों को हराकर उनके क्षेत्र व किलों पर अपना अधिकार किया। फिर बीजापुर के सुल्तान से लड़ते रहे और अंत में बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को मारकर एक महत्वपूर्ण विजय पाई। इसके बाद शिवाजी का सामना मुगलों से हुआ। शिवाजी ने मुगल सेनापति को भी हराकर अपमानित किया। फिर उसने मुगल साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र सूरत पर कब्जा कर लिया। औरंगजेब ने शिवाजी को काबू में लाने के लिए राजा जयसिंह को भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने व आगरा जाकर बादशाह के सामने प्रस्तुत होने पर राजी किया। दरबार में शिवाजी के स्वतंत्र व्यवहार से नाराज होकर औरंगजेब ने उसे बंदी बना लिया। लेकिन शिवाजी अपनी बुद्धिमता से बाहर निकलने में सफल हुए और वापस महाराष्ट्र पहुँच गए। शिवाजी लगातार मुगलों से लड़ते रहे। मुगल सेना से लड़ने का उनका तरीका अनोखा था। वह मुगलों से सीधा युद्ध न करके उन पर अचानक तेजी से हमला करते और नुकसान पहुँचाकर वापस पहाड़ी किलों में छुप जाते थे। इस युद्ध को छापामार युद्ध कहते हैं। युद्ध के इस तरीके से वे बड़ी–से–बड़ी सेना को भी हरा सकते थे।

शिवाजी ने सन् 1674 ई. में खुद को स्वतंत्र राजा घोषित कर **छत्रपति** की उपाधि धारण की। शिवाजी ने सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु तक अपना राज्य फैलाया। सन् 1680 ई. में शिवाजी का देहांत हो गया मगर मराठा राज्य और औरंगजेब के बीच संघर्ष जारी रहा।

औरंगजेब की धार्मिक नीति

औरंगजेब एक रूढ़िवादी मुसलमान था और चाहता था कि मुगल साम्राज्य इस्लाम के नियम कानून से चले।

अकबर ने मुगल साम्राज्य को एक मिलाजुला स्वरूप दिया था, जिसमें सभी धर्मों का आदर होता था। लेकिन औरंगजेब ने इस नीति को स्वीकार नहीं किया। सबसे पहले उसने दरबार में गैर इस्लामी परम्पराओं को बंद किया। उसने संगीत, चित्रकला, दूसरे धर्मों के त्यौहारों को मनाना आदि बंद करवा दिया। फिर कुछ सालों बाद उसने कई ऐसे कदम उठाए जिससे दूसरे धर्म के लोगों को चोट पहुँची। औरंगजेब ने हिंदुओं पर जजिया कर फिर से लागू किया। उसने कई प्रसिद्ध मंदिरों को तोड़ने का भी आदेश दिया।

औरंगजेब के समय किसानों व जमींदारों का विरोध तीव्र हो गया था और मनसबदारों को देने के लिए जागीरों की कमी हो गई थी। ऐसे में मुगल साम्राज्य संकट से गुजर रहा था। औरंगजेब चाहता था कि कट्टर नीतियों को अपनाकर सभी मुसलमानों को वह अपने साथ रख सकेगा। औरंगजेब की इस नीति से मुगल साम्राज्य को नुकसान ही हुआ क्योंकि यह साम्राज्य कई धर्म के लोगों के सहयोग से बना था। शायद इसी बात को स्वीकार करते हुए औरंगजेब ने कई हिन्दू मंदिरों व मठों को दान भी दिया था। उज्जैन के महाकाल मंदिर और चित्रकूट के राम मंदिरों में ऐसे दान के आदेश आज भी देखे जा सकते हैं। एक बार सूरत शहर के एक काजी के विरोध में सारे हिन्दू व्यापारी शहर छोड़कर चले गए। इससे व्यापार ठप्प हो गया। तब औरंगजेब ने उन व्यापारियों को पत्र लिखकर आश्वासन दिया कि उनकी धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की जाएगी। यही नहीं, उसकी

कट्टर नीतियों के बावजूद उसके दरबार के सर्वोच्च पदों पर जयसिंह और जसवंत सिंह जैसे कई हिन्दू थे। औरंगजेब के शासन काल में हिन्दू अमीरों की संख्या लगातार बढ़ती गई। अकबर के समय में कुल 30 हिन्दू अमीर थे जबकि शाहजहाँ के समय लगभग 98 हिन्दू अमीर थे। लेकिन औरंगजेब के समय हिन्दू अमीरों की संख्या बढ़कर 182 हो गई थी। इनमें ज्यादातर राजपूत व मराठा थे।

इन सभी बातों से पता चलता है कि औरंगजेब ने साम्राज्य के हित में कई अलग–अलग नीतियाँ अपनाई।

> औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के बावजूद इतने सारे राजपूत व मराठा अमीरों ने उसका साथ क्यों दिया होगा ?

सन् 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया। कई जमींदारों ने भी विद्रोह किए और अपनी स्वतंत्र राज्य बना लिए। जैसे, मराठों का अलग राज्य बना, जाट जमींदारों ने भी एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और पंजाब के सिक्ख भी स्वतंत्र हो गए। हैदराबाद, बंगाल और अवध प्रांत के सूबेदारों ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। ये सभी नाम के लिए स्वयं को मुगल बादशाह के अधीन मानते रहे पर वास्तव में स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे थे। इस तरह विशाल मुगल साम्राज्य टूटकर बिखर गया था।

छत्तीसगढ़ में इस समय रतनपुर एवं रायपुर राज्य में कल्चुरि राजा राज कर रहे थे। कल्चुरी शासकों के संबंध में आप पूर्व कक्षा में पढ़ चुके हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही/गलत बताएँ–

1. औरंगजेब के उत्तराधिकारी शक्तिशाली शासक थे।
2. बीजापुर और गोलकुंडा राज्य में मराठा सरदारों को ऊँचे पद मिले हुए थे।
3. शाहजहाँ के बीमार होते ही उनके पुत्रों में आपस में युद्ध होने लगा।
4. औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का अधिक विस्तार नहीं हुआ।
5. मथुरा के पास बुंदेलों का विद्रोह हुआ।

2. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. औरंगजेब की दो बड़ी समस्याओं को अपने शब्दों में समझाइए।
2. औरंगजेब ने जागीर की समस्या को दूर करने के लिए कौन–कौन–से उपाय किए ?
3. मराठों की सेना मुगलों की सेना को किस प्रकार हरा पाती थी ?
4. मुगल साम्राज्य के पतन के लिए आप औरंगजेब को कहाँ तक उत्तरदायी मानते हैं ?
5. औरंगजेब ने हिंदुओं के विरूद्ध एवं पक्ष में जो कदम उठाए, इन दोनों बातों के दो–दो उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार–

अकबर और औरंगजेब की नीतियों की तुलना करते हुए परस्पर चर्चा कीजिए।

LERJNA

8 मुगलकालीन जन–जीवन

पिछले पाठों में आपने मुगलों के शासन के बारे में पढ़ा। इस पाठ में हम मुगलों के समय में सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक और धार्मिक जीवन में आए बदलावों के बारे में पढ़ेंगे।

मुगलकाल में भारत पूरी दुनिया में एक सम्पन्न देश के रूप में प्रसिद्ध था। इसी संपन्नता से आकर्षित होकर विश्व के अनेक देशों के लोग यहाँ आए। यूरोपीय व्यापारी भी व्यापार के माध्यम से धन कमाने के लिए यहाँ आए, जिन्होंने बाद में भारत पर अपना शासन जमा लिया।

सामाजिक स्थिति

मुगलकालीन भारतीय समाज में बादशाह एवं उनका परिवार, राजपूत राजा सबसे धनवान और ताकतवर लोग थे। मुगल दरबार में शासन का सर्वोच्च बादशाह होता था जो अत्यंत वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करता था।

अमीर

अमीर राजा के दरबार में ऊँचे पदों पर आसीन लोगों को कहते थे। ये मंत्री, सेनापति, प्रांतपति जैसे प्रमुख कामों को देखते थे। इन्हें इनके कामों के बदले कई गाँवों की जागीर दी जाती थी। गाँवों से प्राप्त लगान का अधिकांश भाग इन्हें मिलता था। वे भव्य महलों में रहते थे और शानो–शौकत से जीवन बिताते थे। ये अमीर तुर्क, ईरानी, हिन्दुस्तानी मुसलमान व राजपूत राजा होते थे।

मध्यमवर्ग

शहरों में एक बड़ा वर्ग मध्यम वर्ग का था जिसमें छोटे अधिकारी, सैनिक, व्यापारी आदि होते थे। कुछ व्यापारी तो बहुत धनवान थे।

गाँव में जमींदार बहुत ताकतवर थे। वे लगान इकट्ठा करने में शासन की मदद करते थे और जरूरत पड़ने पर किसानों की बात शासन तक पहुँचाते थे। वे किसानों से लगान के अतिरिक्त तरह–तरह की वसूलियाँ भी करते थे।

इनके बाद किसान, कारीगर, दलित वर्ग, सेवक आदि आते थे। इस वर्ग की संख्या बहुत अधिक थी। ये लोग प्रायः गरीबी में जीवन बिताते थे। समाज में सबसे ज्यादा शोषण इसी वर्ग का होता था। जमींदार तथा जागीरदारों के अत्याचारों का भी इन्हें सामना करना पड़ता था।

छत्तीसगढ़ में

इस काल में भी छत्तीसगढ़ में कल्चुरियों का शासन था। समाज में ब्राह्मणों को ऊँचा स्थान प्राप्त था, क्योंकि ये धार्मिक कार्य (पुरोहिती) एवं शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते थे। राजाओं के द्वारा इन्हें गाँव–के–गाँव दान दिया जाता था। क्षेत्रीय शासक और योद्धा होते थे। शेष अन्य वर्गों को भी समाज में उचित स्थान प्राप्त था। इस तरह छत्तीसगढ़ में सामाजिक भेदभाव नहीं दिखाई पड़ता था।

हिन्दू और मुसलमान पुरुषों की पोशाकें आमतौर पर एक जैसी ही होती थीं। शहर एवं गाँव में लोगों के पहनावा में सामान्यतः अंतर था।

विभिन्न त्यौहार, मेले तथा उत्सव

वर्तमान समय में हिन्दू और मुसलमान स्त्रियों की पोशाकों में क्या अंतर है? चर्चा कीजिए।

त्यौहार, मेले तथा उत्सव भी मुगलकाल में बहुत मनाए जाते थे। हिन्दू तथा मुसलमान त्यौहारों को मिलकर मनाते थे। उस समय के प्रमुख त्यौहार थे–दशहरा, दीपावली, होली, ईद, नौरोज, मुहर्रम आदि। अकबर के समय में सभी प्रमुख हिन्दू और मुसलमान त्यौहार दरबार में भी मनाये जाते थे। इसमें बादशाह भी भाग लेते थे।

दिल्ली, आगरा लखनऊ आदि बड़े शहरों में तरह–तरह के मेले लगते थे, जिनमें बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते थे। प्रतिवर्ष विभिन्न सूफी संतों की मजारों पर उर्सों का आयोजन किसी त्यौहार से कम नहीं होता था। इन सबके अतिरिक्त बादशाह की वर्षगाँठ, शाही परिवार में विवाहोत्सव आदि भी धूमधाम से मनाया जाता था।

धार्मिक स्थिति

मुगल सम्राट इस्लाम धर्म के अनुयायी थे। किंतु वे सभी धर्मों का आदर करते थे। बादशाह अकबर और जहाँगीर ने दूसरे धर्मों को जानने समझने तथा उसकी अच्छी बातों को सीखने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने हिन्दू साधु, पारसी व जैन मुनि, ईसाई पादरी तथा मुस्लिम मौलवियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। उनसे स्वयं बातचीत की बल्कि उनकी आपस में बातचीत भी करायी जिससे कि वे एक दूसरे के धर्म को जानें। उसने अलग–अलग धर्मों के ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया ताकि सभी लोग सभी धर्मो की अच्छी बातों को समझ सकें। यही प्रवृत्ति समाज के आम लोगों में भी फैली और वे भी एक दूसरे के धर्म को जानने – समझने लगे। इसी काल में तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, मीरा बाई, रहीम, गुरूनानक एवं छत्तीसगढ़ में गोपाल मिश्र जैसे भक्त कवि हुए जिन्होंने सभी धर्मों का आदर करना सिखाया।

मुगलकाल में ही छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ का आगमन हुआ। छत्तीसगढ़ के गाँव–गाँव में कबीर पंथ का प्रचार हुआ, जिससे यहाँ का जन जीवन प्रभावित हुआ। रायपुर बिलासपुर मार्ग पर रायपुर से 55 किलोमीटर दूर स्थित दामाखेड़ा कबीर पंथियों का प्रमुख तीर्थस्थल है। इस समय कल्चुरियों के शासन काल में छत्तीसगढ़ में देवी पूजा (शक्ति पूजा) प्रारंभ हुई जो पूरे राज्य में फैल गई ब्राह्मणों का इसमें विशेष योगदान था वे राजगुरु, ज्योतिषी, तांत्रिक एवं पुरोहित थे। महामाया (रतनपुर) के अतिरिक्त बमलेश्वरी देवी (डोंगरगढ़) और दंतेश्वरी देवी (दंतेवाड़ा) शक्ति पूजा एवं राजीवलोचन (राजिम), दूधाधारी मंदिर, रायपुर श्रद्धा केन्द्र के रूप में स्थापित हुए। गाँवों में मातादेवाला का विशिष्ट महत्व रहा है।

आर्थिक स्थिति

भारतीय समाज पहले की तरह मुगलकाल में भी कृषि प्रधान ही था। लेकिन इस समय यहाँ के किसान परम्परागत फसलों के साथ–साथ कुछ नई फसलें भी उपजाने लगे थे। मुगलकाल से पहले तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर आदि सब्जियाँ नही होती थी। ये सब दक्षिण अमेरिका की सब्जियाँ हैं, जिन्हें भारत में लाने का श्रेय यूरोप के व्यापारियों को जाता है। ये सभी फसलें भारत में मुगल काल में ही प्रचलित होने लगीं थीं।

किसानों की उपज का एक बड़ा हिस्सा लगान के रूप में चला जाता था। अकबर के समय में किसानों से फसल का एक तिहाई भाग लगान के रूप में लिया जाता था लेकिन धीरे–धीरे यह

मात्रा बढ़ती गई। इसके अतिरिक्त जमींदारों द्वारा कई तरह की वसूलियाँ भी की जाती थीं। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति खराब होती गई तथापि जिन क्षेत्रों में उत्पादन अच्छा था वहाँ लोग संपन्न थे।

व्यापार

इस समय खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में कपड़ा उद्योग का विशेष विकास हुआ। ढाका की मलमल, बनारस की जरी का काम, बंगाल, बिहार व गुजरात के सूती वस्त्र, कश्मीर के ऊनी कपड़े विश्व प्रसिद्ध थे।

प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। बाहरी देशों से भी भारत के व्यापारिक संबंध थे। विदेशों के व्यापारी भारत से अधिकतर सूती कपड़े, नील, अफीम तथा काली मिर्च ले जाते थे तथा इन वस्तुओं के बदले में सोना, चाँदी, कच्चा रेशम, मखमल आदि वस्तुएँ भारत लाते थे।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में पूर्तगाल, इंग्लैंड तथा फ्रांस के व्यापारी भारत आए। यूरोप के देशों के ये सभी व्यापारी समुद्री मार्ग से भारत आ रहे थे। सन् 1498 ई. में पुर्तगाल के एक नाविक **वास्को डी गामा** ने यूरोप से भारत तक के समुद्री रास्ते की खोज की थी। भारत के व्यापारियों ने यूरोप के इन व्यापारियों का स्वागत किया, क्योंकि इनके आने से भारत का यूरोपीय बाजारों से सीधा संपर्क स्थापित हो गया।

कला एवं साहित्य

भारतीय कला के इतिहास में मुगलकाल विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इस काल में वास्तुकला, चित्रकला, संगीत और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुआ।

मुगलकाल में भारतीय वास्तुकला (भवन निर्माण कला) में अद्वितीय प्रगति हुई। मुगलकालीन वास्तुकला में पारंपरिक भारतीय कला तथा ईरानी व मध्य एशियाई कला का सुंदर मिश्रण दिखाई

चित्र–8.1 ताजमहल आगरा

देता है। इमारतों का अनुपात, भव्यता तथा सुंदरता और इमारतों के चारों ओर उद्यान इस कला की विशेषता है। ऊँचे चबूतरे पर बनी इमारतों के निर्माण में लाल एवं सफेद संगमरमर के पत्थर, फूल–पत्तों की नक्काशी, इमारतों के पत्थरों में नक्काशीदार जाली, दुहरे गुंबद, अर्द्ध गुम्बद आदि मुगलकालीन इमारतों की विशेषताएँ हैं।

चित्र–8.2 बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

दिल्ली स्थित मुगल बादशाह हुमायूँ का मकबरा फारसी व भारतीय स्थापत्य कला का मिश्रण है। अकबर ने फतेहपुर सीकरी का प्रसिद्ध नगर बसाया तथा आगरा में लाल किला बनवाया। उसने फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा, जामा मस्जिद तथा शेख सलीम चिश्ती का मकबरा बनवाया। आवासीय भवनों में पाँच मंजिलोंवाला स्तंभों पर आधारित खुला हुआ पंच महल एवं व्यक्तिगत विचार–विमर्श के लिए बना दीवाने–ए–खास अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

शाहजहाँ के काल में वास्तु रचना के लिए सफेद संगमरमर का उपयोग किया गया। उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की स्मृति में आगरा में विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण कराया। यह भव्य होने के साथ अत्यंत सुंदर है। संगमरमर की दीवालों पर फूल पत्तों की नक्काशी है जो रत्नजड़ित है। ताजमहल के चारों ओर विस्तृत उद्यान है। शाहजहाँ का शासनकाल सुन्दर इमारतों, मयूर सिंहासन तथा कोहिनूर हीरे के लिए भी याद किया जाता है।

मुगलों ने जलस्रोतों से युक्त कई सुनियोजित बगीचे भी लगवाए। जहाँगीर को बाग लगवाने का शौक था इसमें कश्मीर का निशातबाग, पंजाब का तंजौर बाग और लाहौर का शालीमार बाग प्रसिद्ध है। बहते पानी का उपयोग करना मुगलकाल की विशेषता थी। मुगलों ने जगह–जगह सुन्दर फव्वारे भी बनवाए।

चित्र–8.3 लालकिला दिल्ली

शाहजहाँ ने दिल्ली में जामा मस्जिद और लालकिला बनवाया। आज भी हम अपने राष्ट्रीय उत्सवों के समारोह इसी किले के परिसर में आयोजित करते है। इस किले में दीवान–ए–खास तथा दीवान–ए–आम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। औरंगजेब के समय औरंगाबाद एवं अन्य स्थानों में भी कुछ निर्माण हुए। गोंडवाना एवं छत्तीसगढ़ में भी मध्यकालीन कला का विकसित एवं समन्वित रूप दिखाई देता है। गढ़ा मंडला एवं रतनपुर इसमें प्रमुख रहे हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मुगलकाल में शासन का सर्वोच्च.............................होता था ?
2. मुगलकाल में छत्तीसगढ़ में.................................वंश का शासन था।
3. ....मुगल काल के लोगों का मुख्य व्यवसाय था।
4. दिल्ली के लाल किला का निर्माण....................................ने कराया था।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सत्रहवीं शताब्दी में किस उद्योग का विशेष विकास हुआ ?
2. बहते पानी का उपयोग करना किस काल की विशेषता थी ?
3. बादशाह अकबर की राजधानी कहाँ थी ?
4. सफेद संगमरमर का प्रयोग किसके काल में किया गया ?
5. मुगल सम्राट व्यक्तिगत विचार–विमर्श किस स्थान पर करते थे ?
6. प्रसिद्ध शालीमार बाग कहाँ है ?
7. मुगलकालीन समाज कितने वर्गों में बँटा था ?
8. मुगलकालीन वेशभूषा कैसी थी ?
9. मुगलकानीन व्यवसाय क्या–क्या था ?
10. मुगलकाल में कौन–कौन–से त्यौहार बनाये जाते थे ?
11. मुगलकाल में छत्तीसगढ़ में सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का वर्णन कीजिए।
12. मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ लिखिए।

योग्यता विस्तार–

मुगलकाल में निर्मित इमारतों के चित्र इकट्ठा कीजिए और इनको बनवाने वाले शासकों के नाम एवं तिथि का उल्लेख कीजिए।

LF1FPX

छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय, बिलासपुर

नागरिक–शास्त्र

LREP6H

1 देश और राज्य

भारत व अन्य देश

आप जानते हैं कि हमारा देश काफी विशाल है। यह देश कई राज्यों में विभाजित हैं। यह देश कई दूसरे देशों से घिरा है। इस पाठ में हम अपने देश और उसके राज्य के बारे में जानेंगे।

नीचे के मानचित्र–1 को ध्यान से देखें। अब एक रंगीन पेंसिल लेकर उसे इस मानचित्र में भारत की बाहरी सीमा पर फिराएँ। इस सीमा रेखा के बाहर के इलाके दूसरे देशों की सीमा से लगे हैं। ध्यान रहे भारत और दूसरे देशों के बीच ऐसी (-——-——-——) सीमा रेखा बनी होती है।

भारत और आसपास के देश

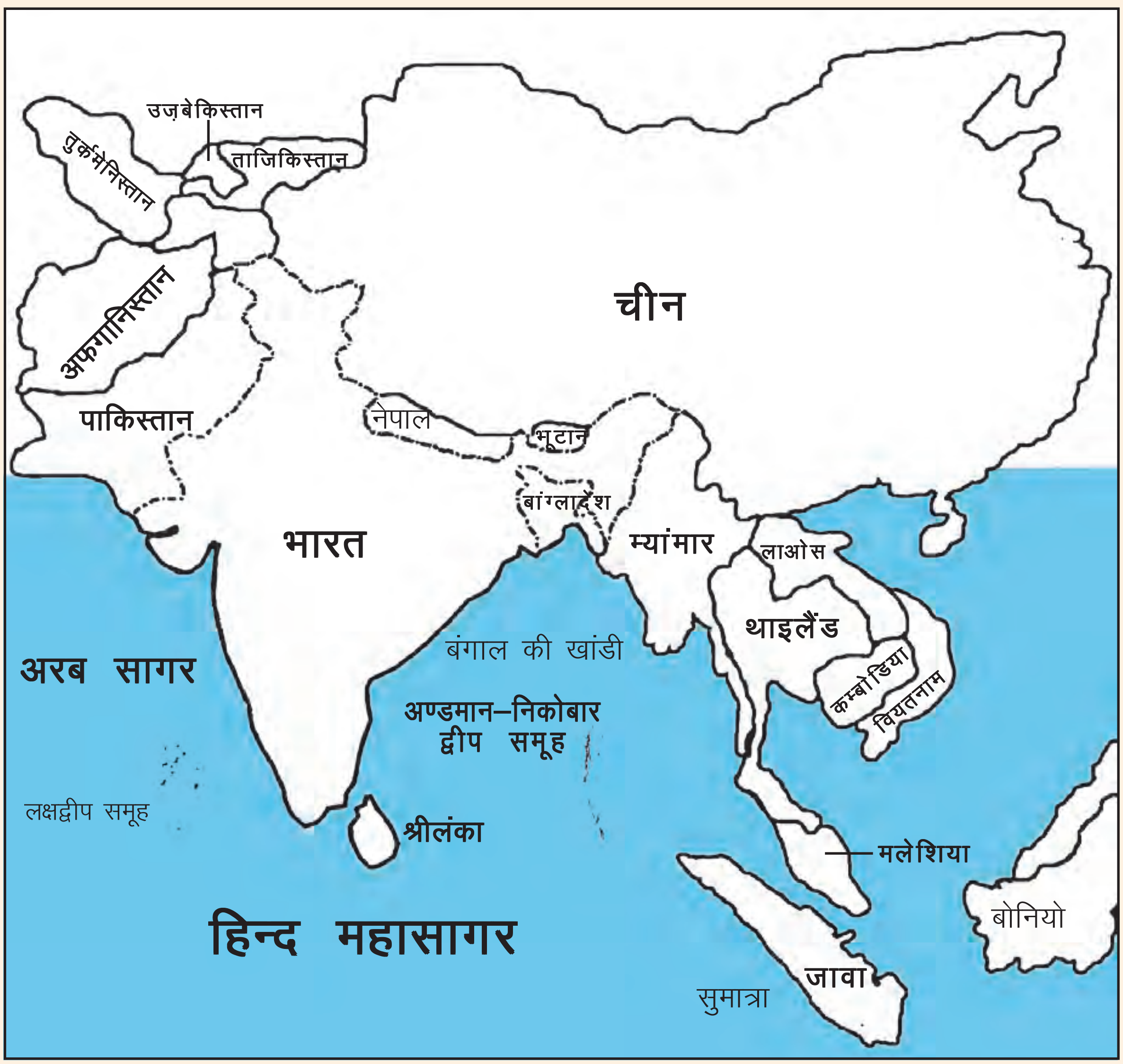

मानचित्र–1.1

शिक्षक गतिविधि – शिक्षक छात्रों को भारत का राजनैतिक मानचित्र दिखाकर सीमा चिन्ह (·——·——·——) का ज्ञान कराएँ।

मानचित्र–1 को देखकर भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखें :–

1———————— 2 ———————— 3 ————————— 4 ————————

5 ——————— 6 ——————— 7 ——————————

इन देशों को मानचित्र में अलग–अलग रंगों से रँगें। रंग भरते समय यह ध्यान रहे कि उस देश की सीमा के बाहर रंग न जाए और दो पड़ोसी देश एक ही रंग में न हों –

आप कहीं भूटान को तो नहीं भूल गए। वह भारत से अलग एक देश है। इसे पहचानें।

आपने कक्षा 6 में कई देशों के बारे में पढ़ा था। वे कौन–कौन–से देश थे ? उनके बारे में आपको कुछ याद हो तो अपने साथियों को बताएँ।

आप जानते हैं कि इंडोनेशिया की मुद्रा (रुपया) हमारे भारत की मुद्रा से अलग है ? ठीक उसी तरह हर देश का झंडा भी अलग–अलग होता है।

भारत के राज्य

अब हम देखते हैं कि भारत जैसे विशाल देश को छोटे–छोटे राज्यों में कैसे बाँटा गया है। आप छत्तीसगढ़ राज्य में रहते हैं वैसे ही भारत में कई अन्य राज्य भी हैं जैसे उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, केरल, राजस्थान, पंजाब, असम आदि। भारत में कुल मिलाकर 29 राज्य और 7 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

मानचित्र–1.2 को ध्यान से देखें। इसमें कितने राज्य क्षेत्रों को दिखाया गया है ? गिनें। छत्तीसगढ़ के अलावा किन्हीं 5 राज्यों के नाम नीचे लिखें।

विभिन्न देशों के झंडे

भारत

इंडोनेशिया

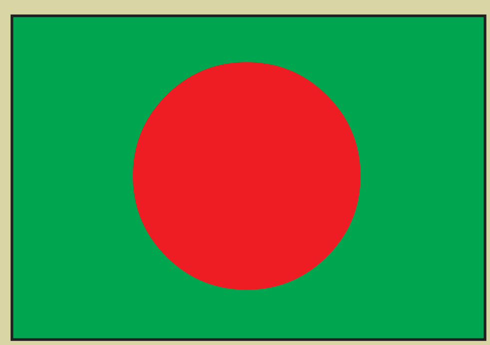
बांग्लादेश

1 ____________________

2 ____________________

3 ____________________

4 ____________________

5 ____________________

मानचित्र–1.2

जिन राज्यों के नाम आपने यहाँ लिखे हैं उनकी सीमा पर अपनी उँगली फेरें। इस सीमा के अंदर जो भी गाँव/शहर होंगे वे उस राज्य के गाँव/शहर कहलाएँगे। कहीं आपने राज्यों के नामों में बांग्लादेश या नेपाल तो नहीं लिख लिया है? ये भारत के राज्य नहीं हैं। ये भारत की सीमा से बाहर हैं और स्वतंत्र देश हैं।

समुद्र में एक तरफ अंडमान–निकोबार द्वीप समूह हैं। ये भी भारत के ही हिस्से हैं। उन्हें भी रंग लें।

इन्हीं बातों को समझने के लिए अब हम मानचित्र–1.1 एवं मानचित्र–1.2 को एक साथ देखेंगे। मानचित्र–1.1 में भारत और उसके आसपास के देशों को दिखाया गया है, जबकि मानचित्र–1.2 में भारत के अंदर के राज्यों को दिखाया गया है।

पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश को पहचानें। इन दोनों में से आप किसे भारत का राज्य कहेंगे और किसे भारत से अलग देश? समझाएँ।

मानचित्र–1.2 देखकर क्या आप छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे हुए पड़ोसी राज्यों को पहचान सकते हैं? उनके नाम लिखें।

1 ________ 2 ________ 3 ________ 4 ________ 5 ________

मानचित्र–1.2 में अब आप राजस्थान राज्य को पहचानें और उसकी सीमा से लगे हुए किन्हीं पांच राज्यों के नाम लिखें।

1________2________3________4________5________

नीचे दी गई सूची में से असम राज्य से लगे हुए राज्यों के नाम चुनकर अपनी कापी में लिखें।

1 नागालैण्ड 2. केरल 3. मणिपुर 4. अरुणाचल प्रदेश 5. बिहार 6. मेघालय 7. त्रिपुरा 8. हिमाचल प्रदेश

असम राज्य की सीमा से लगे हुए देशों के नाम यहाँ लिखें। **(मानचित्र 1.1 एवं 1.2 को देखकर)**

1 ——————— 2 ———————— 3 ———————— 4————————

केन्द्र शासित प्रदेश

भारत में कुछ ऐसे इलाके भी हैं जिन्हें केन्द्र शासित प्रदेश कहते हैं। यहाँ पर केन्द्र सरकार का शासन चलता है। ऐसे इलाके हैं— दिल्ली, चंडीगढ़, दमन, दीव, दादरा और नगर हवेली, पांडिचेरी, लक्षद्वीप, अंडमान—निकोबार, लद्दाख, जम्मू, काश्मीर। इन जगहों को आप शिक्षक की मदद से एटलस में पहचानें।

LRNK85

अब तक तो आप भारत के सभी राज्यों को पहचान गए होंगे। आइए, अब एक मजेदार पहेली सुलझाएँ भारत देश का नक्शा बनाएँ। भारत जोड़ो नक्शे में भारत देश के अलग—अलग राज्य अलग—अलग जगहों पर बने हैं। इन्हें पहचान कर नाम लिखें और मानचित्र को दिये गये अभ्यास में पूर्ण करें।

मानचित्र — 1.1 और 1.2 का उपयोग करते हुए नीचे दिए गए नामों के सामने भारत के राज्य लिखें— जैसे — 1. भारत — देश, 2. राजस्थान — भारत का राज्य

1. छत्तीसगढ़	—	....	4. नेपाल	—	....
2. केरल	—	....	5. असम	—	....
3. भूटान	—	....	6. ओडिशा	—	....

छत्तीसगढ़ राज्य से खो—खो टीम की यात्रा—

16 नवम्बर से जम्मू—कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में स्कूली छात्राओं की खो—खो की राष्ट्रीय प्रतियोगिता शुरू होनेवाली है। सभी राज्यों की तरह छत्तीसगढ़ राज्य की टीम का भी चयन हो चुका है। इस टीम में भिलाई के सरकारी स्कूल क्रमांक—4 की सातवीं की छात्रा शारदा और सोनू भी शामिल हैं। इनकी टीम 12 नवम्बर को छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस ट्रेन से रवाना होने वाली है।

1. खो—खो की राष्ट्रीय प्रतियोगिता कहाँ हो रही है ?
2. अगर यह प्रतियोगिता छत्तीसगढ़ राज्य स्तर की होती तो उसमें कहाँ—कहाँ की टीमें हिस्सा लेतीं? बहनजी से चर्चा करें।
3. क्या इस प्रतियोगिता में बांग्लादेश की टीम भाग ले सकती है? कारण सहित बताएँ।

मानचित्र—1.3 में आप भिलाई से जम्मू तक का रेल मार्ग देख सकते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य की टीम जिस ट्रेन से जाएगी वह बिलासपुर से शुरू होती है। यह रेलगाड़ी (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस) किन—किन प्रमुख स्टेशनों से होकर जाती है वह भी इस मानचित्र में दिखाया गया है। शहरों को (▪▪▪▪) चिन्हों से बताया गया है। इनके नाम पढ़ें। छत्तीसगढ़ राज्य की टीम को जम्मू पहुँचने में

45 घंटे से भी ज्यादा समय लगेंगे। आप राज्यों से तो परिचित हो गए हैं। इस यात्रा के दौरान यह रेलगाड़ी किन–किन राज्यों से होकर गुजरेगी उनके नाम यहाँ लिखें।

1. छत्तीसगढ़ 2...

3. .... 4...

5. .... 6...

7. जम्मू कश्मीर

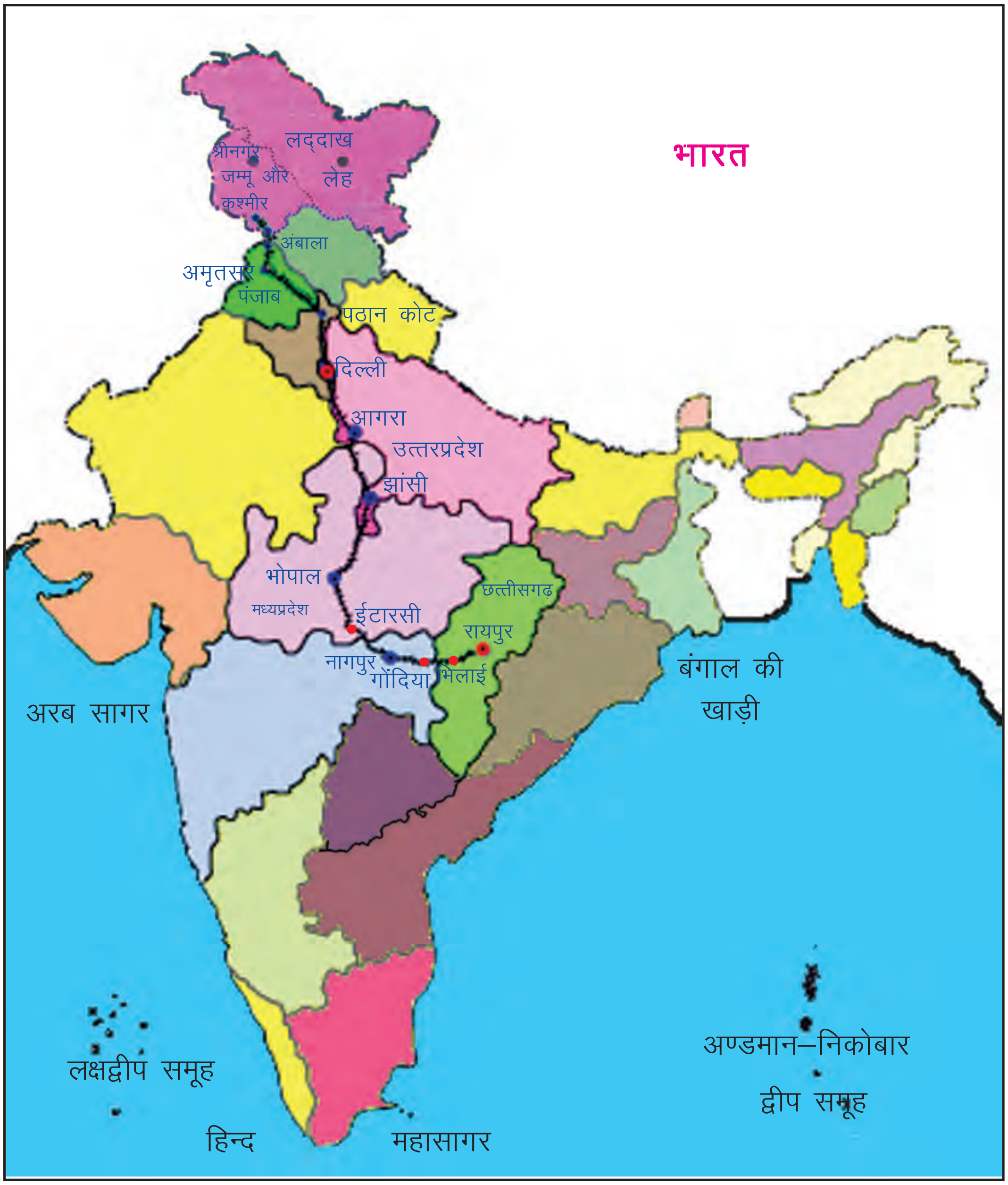

मानचित्र 1.3 भिलाई से जम्मू तक रेलमार्ग

मानचित्र 1.3 को देखकर बताएँ कि इस यात्रा में कौन–कौन–से मुख्य स्टेशन आएँगे और वे किन राज्यों में स्थित हैं? यह जानकारी नीचे की तालिका में भरें।

क्र.	स्टेशन के नाम	राज्य के नाम
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....
6.	....	....

छत्तीसगढ़ राज्य की खो–खो टीम भिलाई से 12 नवम्बर को रवाना हुई। टीम के साथ प्रशिक्षिका सीमा बहन जी भी थीं। सभी लड़कियों में उत्साह दिखाई दे रहा था। सोनू ने कहा कश्मीर में बर्फ से ढँके पहाड़ देखने को मिलेंगे। झीलों में नाव चलाने में खूब अच्छा लगेगा शारदा कहने लगी– "मैं अपने माता–पिता के साथ पहले भी हिमाचल प्रदेश घूम चुकी हूँ। हम लोग कुल्लू मनाली गए थे। जब हम लोग वहाँ गए थे तब वहाँ बर्फ–ही–बर्फ थी। जब बर्फ गिरती थी तब वह रुई की तरह लगती थी।"

जब गाड़ी गोंदिया पहुँची तो किसी ने कहा, यह महाराष्ट्र का पहला बड़ा स्टेशन है। इसके बाद नागपुर स्टेशन आएगा। नागपुर स्टेशन आने पर अचानक 'संतरे ले लो–संतरे,' जैसी कई आवाजें एक साथ आने लगीं। लड़कियों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि संतरेवाले 10 रुपये में 20 संतरे दे रहे हैं ! जयश्री ने हैरान होकर पूछा, यहाँ संतरे इतने सस्ते कैसे मिल रहे हैं ! उनके पास बैठे एक यात्री ने बताया कि नागपुर में संतरे अधिक पैदा होते हैं इसलिए सस्ते मिलते हैं।

नागपुर में उसी डिब्बे में महाराष्ट्र राज्य की खो–खो टीम की लड़कियाँ भी आकर बैठीं। वे आपस में मराठी में बातें कर रहीं थीं। सोनू के पूछने पर शारदा ने बताया कि जैसे हम छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी बोलते हैं वैसे ही ये लड़कियाँ मराठी बोल रही हैं।

नागपुर में करीब आधे घंटे रुकने के बाद गाड़ी आगे चली। गाड़ी चलने के कुछ देर बाद सभी लड़कियाँ सो गईं। सुबह जब नींद खुली तो गाड़ी होशंगाबाद के पास नदी पर बने पुल से गुजर रही थी। लड़कियों को पुल के ऊपर से चल रही गाड़ी से नर्मदा नदी देखना बहुत अच्छा लगा।

कुछ देर में गाड़ी भोपाल पहुँची। बहुत से लोग वहाँ उतर गए और बहुत सारे नए लोग चढ़े। सभी लड़कियों ने वहाँ चाय पी और नाश्ता किया। सीमा बहनजी ने बताया कि भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है उसी तरह जैसे रायपुर छत्तीसगढ़ की राजधानी है।

भोपाल से गाड़ी आगे चली और झाँसी पहुँची। यहाँ सभी ने दोपहर का खाना खाया। सोनू ने पूछा–"झाँसी तो मध्यप्रदेश में आता होगा?" एक यात्री ने बताया कि झाँसी उत्तरप्रदेश का भाग है।

अब तक छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस कितने राज्यों से गुजर चुकी थी?

कुछ घंटों बाद गाड़ी आगरा पहुँची। सीमा बहनजी ने बताया कि आगरा शहर संगमरमर पत्थर से बने ताजमहल के लिए पूरे संसार में प्रसिद्ध है।

उसी दिन शाम होते–होते गाड़ी नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गई। छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र की टीमें यहाँ उतरीं। यहाँ से वे रात में चलने वाली झेलम एक्सप्रेस से जम्मू के लिए रवाना हुईं। नई दिल्ली से ही उस गाड़ी में एक नई टीम चढ़ी, यह दिल्ली की टीम थी।

झेलम एक्सप्रेस पानीपत, कुरुक्षेत्र, अंबाला, लुधियाना, जालंधर, आदि शहरों से गुजरते हुए दूसरे दिन जम्मूतवी पहुँची।

जम्मूतवी से अलग–अलग राज्यों की टीमें श्रीनगर जानेवाली बसों में बैठीं। ये बसें जम्मू से पटनीटॉप, बरोठ, ऊधमपुर, बनिहाल आदि स्थानों से होते हुए श्रीनगर पहुँचीं। श्रीनगर जम्मू कश्मीर राज्य की राजधानी है।

अगले दिन प्रतियोगिता शुरू करने की घोषणा जम्मू–कश्मीर के राज्यपाल द्वारा की गई। प्रतियोगिता प्रारंभ हो गई। प्रतियोगिता का पहला मैच छत्तीसगढ़ और उत्तरप्रदेश के बीच हुआ। उसमें छत्तीसगढ़ की टीम जीत गई। अगला मैच छत्तीसगढ़ और जम्मू–कश्मीर के बीच था। इसमें भी छत्तीसगढ़ की टीम बाजी मार गई। छत्तीसगढ़ की टीम लगातार 5 मैच जीतकर प्रतियोगिता के फायनल में पहुँची। फायनल मैच तमिलनाडु से था जिसमें छत्तीसगढ़ की टीम विजयी हुई। सभी राज्यों की टीमों ने छत्तीसगढ़ की टीम को बहुत बधाइयाँ दीं।

प्रतियोगिता समाप्त हो जाने के बाद कई टीमों की लड़कियाँ एक साथ घूमने निकलीं। उन्होंने श्रीनगर की डल झील में शिकारे (नाव) पर सैर की और फोटो खिंचवाई। वहाँ शालीमार बाग और निशात बाग भी देखे।

बीना ने सीमा बहनजी से पूछा– "सभी राज्यों में एक जैसे ही रुपये पैसे चलते हैं।" बहनजी ने कहा–तुम्हें यह बात कैसे सूझी? हम कोई दूसरे देश तो नहीं आए हैं। जैसे छत्तीसगढ़ भारत का एक राज्य है वैसे ही जम्मू–कश्मीर भी भारत का एक राज्य है। तुम किसी भी नोट को देखो। उस पर एक तरफ तुम्हें भारत की कई भाषाएँ लिखी नजर आएँगी। उनमें से जम्मू कश्मीर की भाषा भी एक है।

किसी भी नोट या सिक्के पर यह पहचान कैसे की जाती है कि यह भारत देश का है? कक्षा में चर्चा करें।

डल झील देखने के बाद सभी लड़कियाँ जम्मू–कश्मीर की दूसरी जगहों पर भी घूमने गईं।

जम्मू–कश्मीर की कुछ जगहों को देखने के बाद लड़कियों ने श्रीनगर से जम्मू की बस पकड़ी। जम्मू से उन्होंने रात में दिल्ली आने के लिए फिर से झेलम एक्सप्रेस पकड़ी। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने एक दिन दिल्ली की प्रमुख जगहों को देखा। दूसरे दिन छत्तीसगढ़ की टीम छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस से भिलाई वापस लौट आई।

आपने भारत और उसके पड़ोसी देशों को पहचाना। भारत में कई राज्य है। आप मानचित्र के द्वारा देश के अलग–अलग राज्यों से परिचित हुए। इनमें से छत्तीसगढ़ भी एक राज्य है। कहानी के माध्यम से कई राज्यों के बारे में अध्ययन किया। अगले पाठ में हम राज्यों की सरकारों के बारे में पढ़ेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

LRXG9S

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. भारत में..............................राज्य हैं।
2. छत्तीसगढ़ की राजधानी..............................है।
3. भिलाई........................के लिए प्रसिद्ध है।
4. झाँसी..............................राज्य में आता है।
5. पांडिचेरी..............................प्रदेश है।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. भारत की सीमा से लगे देशों के नाम लिखिए ?
2. केन्द्रशासित प्रदेशों के नाम लिखिए ?
3. देश और राज्य में क्या अंतर है ?
4. श्रीनगर में कौन–कौन–से प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं ?
5. छत्तीसगढ़ के दर्शनीय स्थलों के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।

गतिविधि–

मानचित्र देखकर भारत के राज्यों को पहचान कर नाम लिखें।

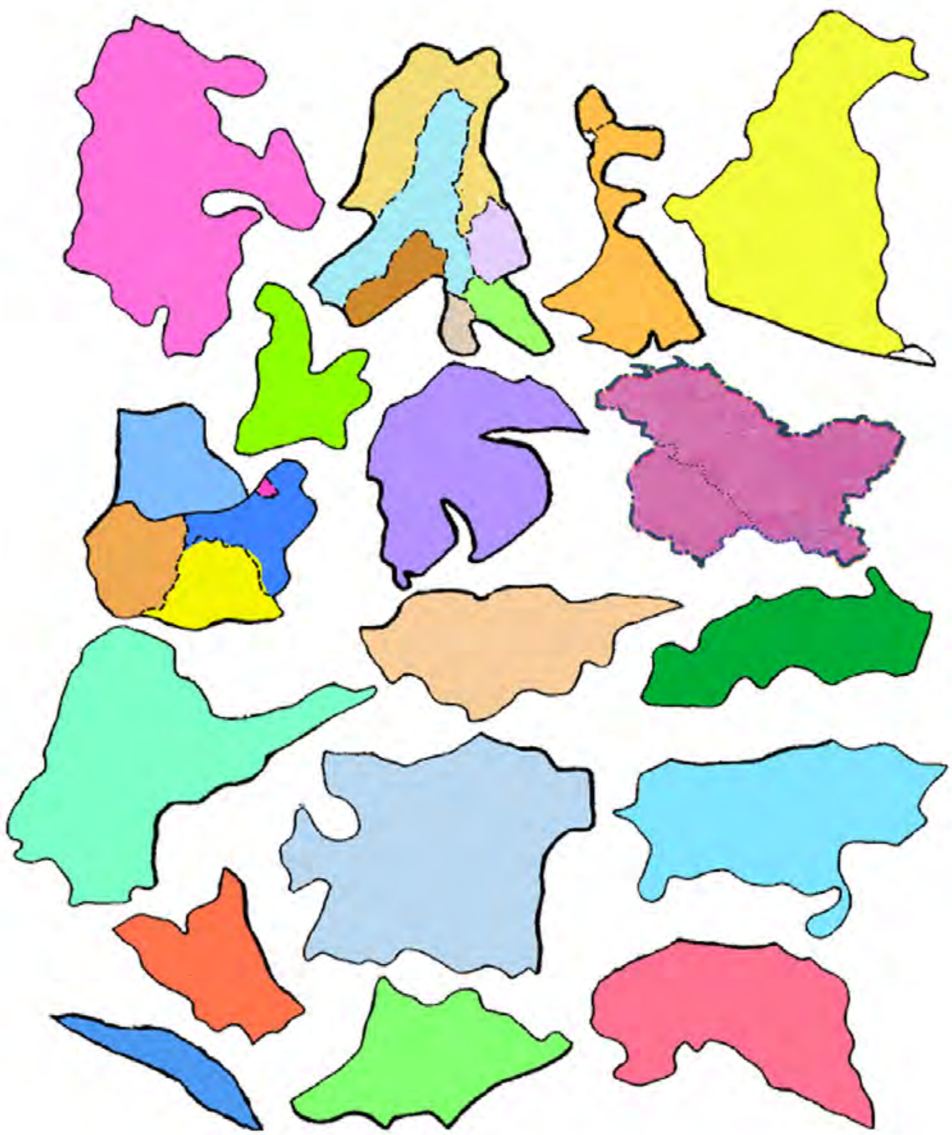

LS7CBF

2 राज्य की सरकार
भाग–एक

1. आप सरकार के बारे में क्या जानते हैं?
2. आपके क्षेत्र से सरकार में कौन–कौन लोग शामिल हैं? उनकी सूची बनाएँ।
3. सरकार कैसे बनती है? शिक्षक की मदद से आपस में चर्चा करें।

हमारे देश में दो प्रकार की सरकारें हैं। एक केन्द्र की सरकार और दूसरी राज्यों की सरकार। जैसे छत्तीसगढ़ राज्य में एक सरकार है, उसी तरह ओडिशा व मध्यप्रदेश राज्यों की भी अपनी–अपनी, अलग–अलग सरकारें हैं। वे अपने–अपने राज्यों के लिए कानून बनाती हैं। केन्द्र सरकार जो कानून बनाती है वह पूरे भारत देश में लागू होता है।

राज्य की सरकार बनाने के लिए चुनाव किस तरह होते हैं? सरकारें कैसे बनती हैं? इसे जानने के लिए आइए एक कहानी पढ़ें।

एक विधायक की कहानी

इस कहानी में पूरब प्रदेश नाम का एक राज्य और उसके विधानसभा क्षेत्र गोपालपुर का वर्णन किया गया है। कहानी में राज्य, विधानसभा क्षेत्र, पार्टी व लोगों के नाम सब काल्पनिक हैं। लेकिन विधायक चुनने का तरीका व चुनाव संबंधी नियम वास्तविक हैं।

पूरब प्रदेश में कुल 70 विधानसभा क्षेत्र हैं जिनमें से एक है– गोपालपुर। पूरब प्रदेश में अभी कुछ ही दिनों पहले विधानसभा के चुनाव हुए थे। इस चुनाव में कई राजनैतिक दलों ने भाग लिया था। इन दलों में भारत दल व जनता मिशन मुख्य दल थे। गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र से भी यही दो मुख्य पार्टियाँ चुनाव लड़ रही थीं। यहाँ से भारत दल के रामप्रसाद और जनता मिशन दल से श्रीमती पल्लवी बाई चुनाव लड़ रही थीं।

1. पूरब प्रदेश को कितने चुनाव क्षेत्रों में बाँटा गया था?
2. श्रीमती पल्लवी बाई किस राजनैतिक दल से चुनाव लड़ रही थीं?
3. रामप्रसाद किस राजनैतिक दल से चुनाव लड़ रहे थे?

चुनावों में कई उम्मीदवार चुनाव लड़ते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि वोट देने वाले कैसे तय करते होंगे कि किसे वोट देना है और किसे नहीं। यही जानने के लिए आइए इस कहानी को आगे पढ़ें।

गोपालपुर में चुनाव प्रचार

चुनाव 20 जनवरी को होने वाले थे, लेकिन लोगों ने 15–20 दिन पहले से ही जीप, मोटर सायकल, टैक्सी में लाउडस्पीकर लगाकर व आम सभाओं के साथ चुनाव–प्रचार शुरू कर दिया था। प्रत्येक दल के उम्मीदवार व उसके सहयोगियों द्वारा आश्वासन दिए जा रहे थे कि वे गरीबी दूर करने के उपाय करेंगे, जमीन के पट्टे दिलवाएँगे, गाँव–गाँव में बिजली, पीने का पानी, स्कूल,

चित्र–2.1 चुनाव प्रचार

अस्पताल की सुविधा उपलब्ध कराएँगे, लोगों को रोजगार दिलाएँगे। सभी उम्मीदवारों ने अपने–अपने नाम के बैनर, पोस्टर व बिल्ले बनवाए थे। कई बच्चे अलग–अलग दलों के बिल्ले लगाकर घूम रहे थे जिन पर उम्मीदवारों के फोटो छपे थे।

पल्लवी बाई की आमसभा

11 तारीख को गोपालपुर के गोल मैदान में जनता मिशन दल की उम्मीदवार पल्लवी बाई की आम सभा थी। सभा में जनता मिशन दल के दूसरे बड़े नेता भी थे। सभा में एक पर्चा बाँटा गया जिसमें पल्लवी बाई का फोटो व उनकी पार्टी का चुनाव चिह्न भी छपा हुआ था। पर्चे में लिखा था कि गोपालपुर में पल्लवी बाई ने कौन–कौन–से काम करवाए हैं और अगर पूरब प्रदेश में जनता मिशन दल की सरकार बनती है तो कौन–कौन–से नए काम करवाए जाएँगे। कुछ नेताओं के बोलने के बाद सभा में पल्लवी बाई के बोलने की बारी आई। पल्लवी बाई ने अपने भाषण में कहा कि पिछली बार उन्होंने सिंचाई के लिए एक छोटा बाँध बनवाया था, कई स्कूलों के लिए अतिरिक्त पक्के कमरे बनवाए थे तथा कई गाँवों को मुख्य सड़क से जोड़ने के लिए पहुँच सड़कें बनवाई थीं। उन्होंने कहा कि यदि आप लोग मुझे जिताएँगे और मेरे दल की सरकार बनेगी तो इस क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार स्कूल, अस्पताल, पीने का पानी, आदि सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जाएँगी। साथ ही, गोपालपुर में कई बड़े कारखाने भी लगवाए जाएँगे। इससे इस क्षेत्र के बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा और लोग बड़े शहरों की तरफ पलायन नहीं करेंगे। पल्लवी बाई के भाषण के बाद आमसभा समाप्त हो गई।

चाय की एक दुकान पर कुछ लोग आपस में बातें कर रहे थे। एक आदमी कह रहा था– "इस बार 'भारत दल' तो जाएगा क्योंकि सिवाय महँगाई बढ़ाने के इस पार्टी की सरकार ने और कुछ

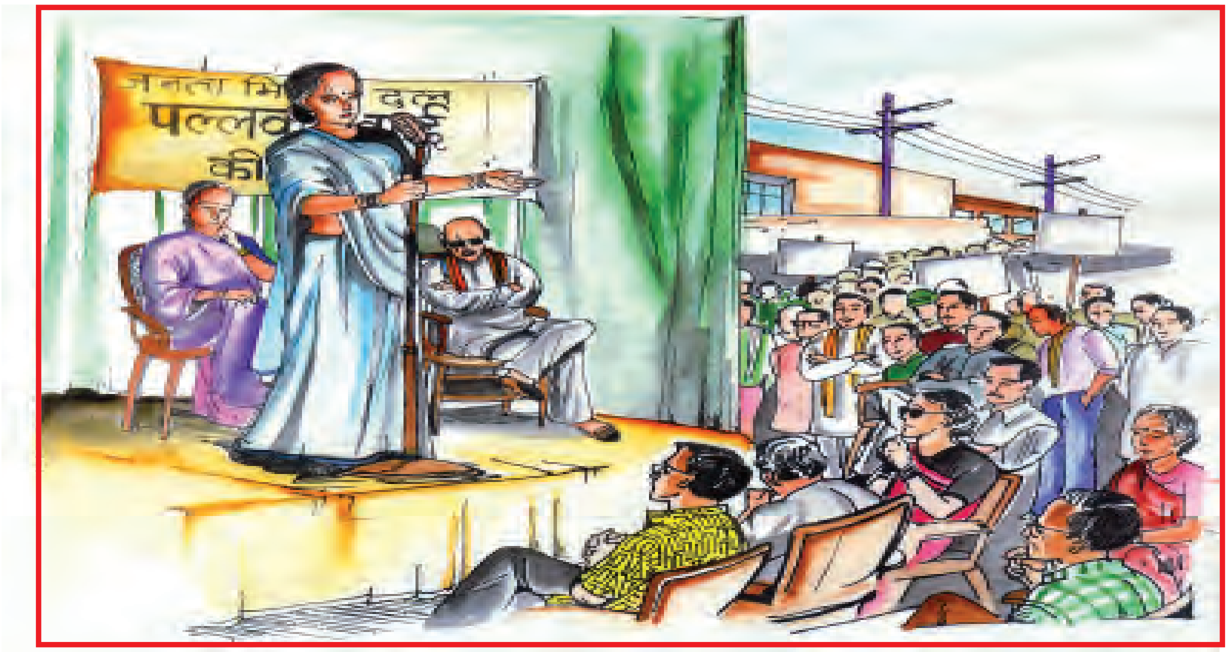

चित्र–2.2 पल्लवी बाई की आम सभा

भी नहीं किया है।" एक दूसरे व्यक्ति ने कहा, "जनता मिशन दल ने कौन–से तीर मारे हैं।" तो तीसरे ने कहा, महँगाई सिर्फ पूरब प्रदेश में ही नही बढ़ी है, पूरे देश में बढ़ी है। किसी और ने कहा, "महँगाई बढ़ी, लेकिन मजदूरी उतनी ही है।" एक और व्यक्ति ने कहा, "सूखा पड़ने पर पिछली सरकार ने कोई उपाए नहीं किए थे।"

तभी चाय की दुकान पर एक नया व्यक्ति आया। वह बहुत उत्सुकता से बताने लगा कि फूलबस्ती में भारत दल के लोग कंबल बाँटते पकड़े गए हैं। ‘‘अरे तो क्या हुआ, जनता मिशन दल वालों ने भी तो गाजरगली में साड़ियाँ बाँटी थीं।’’ किसी और ने जबाब दिया।

इस प्रकार चुनाव प्रचार चला और 18 तारीख की शाम को चुनाव प्रचार का शोरगुल शांत हो गया।

कहानी के अनुसार–

1. पूरब प्रदेश राज्य में कितने विधानसभा क्षेत्र हैं?
2. रामप्रसाद किस विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे थे?
3. चुनाव प्रचार क्यों किया जाता है?
4. चुनाव प्रचार के दौरान लोग पर्चे व पोस्टर आदि किसलिए बाँटते हैं?
5. चुनाव प्रचार में कंबल, साड़ियाँ, पैसे आदि बाँटना क्यों उचित नहीं है ? शिक्षक की मदद से आपस में चर्चा करें।
6. मतदान के दिन से एक दिन पहले ही चुनाव प्रचार क्यों बंद कर दिया जाता है? शिक्षक से चर्चा करें।

विधानसभा क्षेत्र

आपने कक्षा 6वीं में पढ़ा था कि ग्राम पंचायत के चुनावों के लिए हर ग्राम पंचायत को कई वार्डों में बाँटा जाता है तथा हर वार्ड से एक पंच का चुनाव होता है। पंचायत के वार्ड़ों की तरह ही विधानसभा के लिए पूरे राज्य को अलग–अलग क्षेत्रों में बाँटा जाता है।

पंचायत के वार्ड में तो केवल 50 से 100 मतदाता होते हैं परंतु एक विधानसभा क्षेत्र में एक लाख या उससे भी अधिक मतदाता होते हैं। ये लोग कई गाँवों और कस्बों में रहते हैं। बड़े–बड़े शहर तो कई किलोमीटर तक फैले होते हैं। उनमें कई लाख लोग रहते हैं। इसलिए बड़े शहरों में एक से अधिक विधानसभा चुनाव क्षेत्र होते हैं। जैसे रायपुर में चार विधान सभा क्षेत्र हैं। हर विधान सभा चुनाव क्षेत्र से एक विधायक चुना जाता है। पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में 90 विधानसभा क्षेत्र हैं।

छत्तीसगढ़ के विधानसभा क्षेत्र (विधानसभा क्रमांक एवं जिला)

क्रमांक	विधानसभा क्रमांक	विधानसभा का नाम	जिले का नाम
1	1	भरतपुर – सोनहत	कोरिया
2	2	मनेन्द्रगढ	कोरिया
3	3	बैंकुठपुर	कोरिया
4	4	प्रेमनगर	सूरजपुर
5	5	भटगांव	सूरजपुर
6	6	प्रतापपुर	बलरामपुर, सूरजपुर
7	7	रामानुजगंज	बलरामपुर
8	8	सामरी	बलरामपुर
9	9	लुण्ड्रा	सरगुजा
10	10	अम्बिकापुर	सरगुजा
11	11	सीतापुर	सरगुजा
12	12	जशपुर	जशपुर
13	13	कुनकुरी	जशपुर
14	14	पत्थलगांव	जशपुर
15	15	लैलुंगा	रायगढ़
16	16	रायगढ	रायगढ़

17	17	सारंगढ	रायगढ़
18	18	खरसिया	रायगढ़
19	19	धर्मजयगढ	रायगढ़
20	20	रामपुर	कोरबा
21	21	कोरबा	कोरबा
22	22	कटघोरा	कोरबा
23	23	पाली – तानाखार	कोरबा
24	24	मरवाही	गौरेला–मारवाही–पेन्ड्रा
25	25	कोटा	बिलासपुर
26	26	लोरमी	मुंगेली
27	27	मुंगेली	मुंगेली
28	28	तखतपुर	बिलासपुर
29	29	बिल्हा	बिलासपुर, मुंगेली
30	30	बिलासपुर	बिलासपुर
31	31	बेलतरा	बिलासपुर
32	32	मस्तुरी	बिलासपुर
33	33	अकलतरा	जांजगीर–चाम्पा
34	34	जांजगीर – चांपा	जांजगीर–चाम्पा
35	35	सक्ती	जांजगीर–चाम्पा
36	36	चन्द्रपुर	जांजगीर–चाम्पा
37	37	जैजेपुर	जांजगीर–चाम्पा
38	38	पामगढ	जांजगीर–चाम्पा
39	39	सराईपाली	महासमुंद
40	40	बसना	महासमुंद
41	41	खल्लारी	महासमुंद

42	42	महासमुन्द	महासमुंद
43	43	बिलाईगढ़	बलौदाबाजार – भाटापारा
44	44	कसडोल	बलौदाबाजार – भाटापारा
45	45	बलौदा बाजार	बलौदाबाजार – भाटापारा,रायपुर
46	46	भाटापारा	बलौदाबाजार – भाटापारा
47	47	धरसींवा	रायपुर
48	48	रायपुर ग्रामीण	रायपुर
49	49	रायपुर नगर पश्चिम	रायपुर
50	50	रायपुर नगर उत्तर	रायपुर
51	51	रायपुर नगर दक्षिण	रायपुर
52	52	आरंग	रायपुर
53	53	अभनपुर	रायपुर
54	54	राजिम	गरियाबंद
55	55	बिन्द्रानवागढ	गरियाबंद
56	56	सिहावा	धमतरी
57	57	कुरूद	धमतरी
58	58	धमतरी	धमतरी
59	59	संजारी बालोद	बालोद
60	60	डौण्डीलोहारा	बालोद
61	61	गुण्डरदेही	बालोद
62	62	पाटन	दुर्ग
63	63	दुर्ग ग्रामीण	दुर्ग
64	64	दुर्ग शहर	दुर्ग
65	65	भिलाई नगर	दुर्ग
66	66	वैशाली नगर	दुर्ग

67	67	अहिवारा	दुर्ग
68	68	साजा	दुर्ग, बेमेतरा
69	69	बेमेतरा	दुर्ग, बेमेतरा
70	70	नवागढ़	बेमेतरा
71	71	पंडरिया	कबीरधाम
72	72	कवर्धा	कबीरधाम
73	73	खैरागढ	राजनांदगांव
74	74	डोंगरगढ़	राजनांदगांव
75	75	राजनांदगांव	राजनांदगांव
76	76	डोंगरगांव	राजनांदगांव
77	77	खुज्जी	राजनांदगांव
78	78	मोहला – मानपुर	राजनांदगांव
79	79	अंतागढ़	उत्तर बस्तर कांकेर
80	80	भानुप्रतापपुर	उत्तर बस्तर कांकेर
81	81	कांकेर	उत्तर बस्तर कांकेर
82	82	केशकाल	कोंडागांव
83	83	कोण्डागांव	कोंडागांव
84	84	नारायणपुर	कोंडागांव, नारायणपुर, बस्तर (जगदलपुर)
85	85	बस्तर	बस्तर (जगदलपुर)
86	86	जगदलपुर	बस्तर (जगदलपुर),सुकमा
87	87	चित्रकोट	बस्तर (जगदलपुर),सुकमा
88	88	दन्तेवाडा	दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा
89	89	बीजापुर	बीजापुर
90	90	कोन्टा	सुकमा

नोट- अंकों के आधार पर विधानसभा क्षेत्र के नाम देखें

30 बिलासपुर
48 रायपुर ग्रामीण
49 रायपुर नगर पश्चिम
50 रायपुर नगर उत्तर
51 रायपुर नगर दक्षिण
64 दुर्ग शहर
65 भिलाई नगर
66 वैशाली नगर

मानचित्र 2.1 छत्तीसगढ़ के विधानसभा क्षेत्र

1. आपके विधानसभा क्षेत्र के विधायक कौन हैं और वे किस पार्टी (दल) के हैं?
2. छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री किस विधानसभा क्षेत्र के विधायक हैं?
3. आपके विधानसभा क्षेत्र के पश्चिम में कौन–सा विधानसभा क्षेत्र है?

प्रतिनिधि

हमारे देश में जिस तरीके से केंद्र व राज्य सरकारों को बनाया जाता है, उसे प्रतिनिधि सरकार कहते हैं। हर राज्य में इतने सारे लोग हैं कि वे सब एक जगह मिलकर कानून नहीं बना सकते, न ही कोई जरूरी निर्णय ले सकते हैं। तब कुछ लोगों को सरकार के काम–काज में शामिल करने के लिए यह तरीका सोचा गया कि राज्य के लोग अपने–अपने क्षेत्रों से अपने प्रतिनिधियों को चुन लें।

राज्य के अलग–अलग विधानसभा क्षेत्रों के लोगों के प्रतिनिधि विधायक होते हैं। उनकी यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने क्षेत्र के लोगों की राय जानें, लोगों की समस्याओं को सुनें और उसे हल करने का प्रयास करें तथा सरकार तक पहुँचाएँ।

1. सही विकल्प चुनकर उत्तर बताइए –
   प्रतिनिधि का अर्थ है –
   अ लोगों द्वारा किसी क्षेत्र से चुना गया व्यक्ति।
   ब. सरकार द्वारा नियुक्त किया गया व्यक्ति।
   स. उस क्षेत्र का जाना–माना व्यक्ति।
2. पूरब प्रदेश में कितने प्रतिनिधि चुने जाएँगे?
3. गोपालपुर चुनाव क्षेत्र से कितने चुने जाएँगे?
4. प्रतिनिधि चुनना क्यों जरूरी है? कक्षा मे ंचर्चा करें।

राजनैतिक दल

सरकार बनाने व शासन के काम–काज पर असर डालने के लिए लोग खास तरह के संगठन बनाते हैं जिन्हें राजनैतिक दल कहते हैं। ये राजनैतिक दल चुनावों में भाग लेते हैं। राजनैतिक दल आमतौर पर ऐसे लोगों का समूह होता है जो एक ही तरह के विचारों को मानते हैं। ये दल लोगों के जीवन से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए उपाय (नीतियाँ) सुझाते हैं।

उदाहरण के लिए किसी राजनैतिक दल का यह विचार हो सकता है कि देश में गरीबी व बेरोजगारी की समस्याएँ इसलिए हैं कि खाने कमाने के लिए रोजगार के अवसर नहीं हैं और जमीन जैसे साधन सबके पास उपलब्ध नहीं हैं। किसी अन्य राजनैतिक दल का यह विचार हो सकता है कि जनसंख्या बढ़ने के कारण देश में गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याएँ बढ़ी हैं।

हर राजनैतिक दल का एक चुनाव चिह्न व झण्डा होता है, जिससे उस दल की पहचान बनती है। छत्तीसगढ़ में मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी आदि हैं।

1. पूरब प्रदेश में मुख्य राजनैतिक दल कौन–कौन–से हैं?
2. किसी भी राजनैतिक दल की पहचान किससे बनती है?
3. राजनैतिक दलों का मुख्य काम क्या होता है?

उम्मीदवार

चित्र–2.3 इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन

विधानसभा या दूसरे चुनावों में अलग–अलग राजनैतिक दलों के लोग चुनाव लड़ते हैं। ये दल हर चुनाव क्षेत्र में अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं। उम्मीदवार या चुनाव प्रत्याशी उस व्यक्ति को कहते हैं जो चुनाव में खड़ा होता है और जिसे वोट दिए जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति किसी दल में नहीं है, पर चुनाव लड़ना चाहता है तो वह स्वतंत्र रूप से चुनाव में खड़ा हो सकता है। ऐसे उम्मीदवार निर्दलीय कहे जाते हैं। विधानसभा के चुनाव में खड़े होने के लिए उम्मीदवारों को कम–से–कम 25 वर्ष का होना जरूरी है। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह भारत का नागरिक हो।

विधानसभा क्षेत्र में रहनेवाले वे सभी लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक हो, वोट डाल सकते हैं। पहले उन्हें अपना नाम मतदाता सूची (वोट डालने वालों की एक सूची) में दर्ज कराना पड़ता है।

1. चुनाव लड़नेवाले को क्या कहते हैं?
2. उम्मीदवार और प्रतिनिधि में क्या अंतर है?
3. वोट कौन दे सकता है?

गोपालपुर में मतदान

चित्र–2.4 मतदान केन्द्र

20 जनवरी की सुबह वोट डालने का काम शुरू हुआ। मतदान केन्द्रों के सामने लोगों की लंबी कतारें थीं। एक आदमी दरवाजे के पास बैठा था। उसके पास लंबी सूची थी। वोट देनेवाले पहले उसके पास जाते। सूची में जिसका नाम होता उसके बाएँ हाथ की उँगली के नाखून पर वह व्यक्ति एक अमिट स्याही लगाता व हस्ताक्षर करवाता। कमरे के कोने में एक मतदान कक्ष (बूथ) बना था। जहाँ पर एक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन रखी हुई थी। वहाँ मतदाता को वोट डालने के लिए भेजा जाता। मतदाता मशीन में बटन दबाकर वोट देता और बाहर चला जाता।

एक मतदान केन्द्र पर जब वोट डाले जा रहे थे उसी समय एक व्यक्ति के साथ वहाँ के अधिकारी की खूब बहस हो गई। अधिकारी कह रहा था तुम तो वोट डाल चुके हो फिर से क्यों आए हो? वोट देने वाला बार–बार अपने नाखून दिखाता। जब मेरे नाखून पर निशान नहीं हैं तो आप मुझे वोट देने से कैसे रोक सकते हैं? आपने मेरे नाम को सूची में गलती से काटा होगा या कोई और व्यक्ति मेरा वोट डाल गया होगा।

अंत में अधिकारी ने उससे कहा कि वह अपना वोट मतपत्र के द्वारा डालकर लिफाफे में सील बंद करके दे। वोट का लिफाफा अधिकारी ने अपने पास ही रख लिया। शाम 5 बजे गोपालपुर में मतदान समाप्त हो गया।

1. शिक्षक की मदद से अपने स्कूल के पास वाले पंचायत भवन में पंचायत चुनाव के लिए बनी मतदाता सूची देखें और अपने शब्दों में लिखें कि मतदाता सूची में क्या–क्या जानकारी रहती है?
2. एक ही विधानसभा क्षेत्र में कई मतदान केन्द्र क्यों बनाए जाते हैं?
3. इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से वोट कैसे डाला जाता है? अपने शब्दों में समझाओ।
4. जिस व्यक्ति ने वोट डाल दिया उसको पहचानने का क्या तरीका है?
5. फर्जी मतदान क्या होता है? शिक्षक की मदद से कक्षा में चर्चा करें।

वोटों की गिनती व चुनाव परिणाम

दो दिन बाद पूरब प्रदेश के सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों में वोटों की गिनती शुरू हुई। थोड़ी–थोड़ी देर बाद खबर आती कि किस विधान सभा क्षेत्र में कौन–कौन–से उम्मीदवार को कितने वोट मिले हैं।

पूरब प्रदेश राज्य के अधिकांश लोग सभी काम–काज छोड़कर टी.वी. के सामने बैठे थे। जिस दल का उम्मीदवार आगे होता उस दल के समर्थक पटाखे फोड़ते। गोपालपुर में भी जिलाधीश कार्यालय में वोटों की गिनती हो रही थी।

दोपहर तक सभी केन्द्रों के वोटों की गिनती पूरी हो गई। जनता मिशन दल की पल्लवी बाई को 45202 वोट मिले और भारत दल के रामप्रसाद को 40502 वोट मिले। बाकी उम्मीदवारों को 5 हजार से भी कम वोट मिले। इस तरह पल्लवी बाई गोपालपुर से विधायक चुन ली गईं। शाम तक पूरब प्रदेश की सभी विधान सभा सीटों के परिणाम घोषित कर दिए गए। पूरे राज्य की 70 विधानसभा सीटों के लिए जीते विधायकों को उनके दलों के अनुसार गिनें तो इस तरह की तालिका बनी।

चुनाव परिणाम की तालिका

क्र.	राजनैतिक दल	सीटों की संख्या
1	जनता मिशन	38
2.	भारत दल	28
3.	अन्य दल	03
4.	निर्दलीय	01

1. किसी क्षेत्र से जीतनेवाला व्यक्ति किन लोगों का प्रतिनिधि होता है ?
   अ. जिन लोगों ने उनको वोट दिए।
   ब. जिन लोगों ने उसे वोट नहीं दिया।
   स. पूरे क्षेत्र के लोगों का।
2. पूरब प्रदेश राज्य के इस चुनाव में किस दल को सबसे अधिक सीटें मिलीं ?
3. आपके इलाके में विधानसभा के चुनावों के समय वोटों की गिनती कहाँ होती है ?

नेता चुनने के लिए विधायक दल की बैठक

पूरब प्रदेश राज्य में चुनाव परिणामों के आने के बाद जनता मिशन दल के विधायकों की अपना नेता चुनने के लिए बैठक हुई। उन्हें सरकार बनाने के लिए जरूरी आधे से अधिक सीटें मिल गईं थीं। यानि पूरब प्रदेश की विधानसभा में जनता मिशन दल को बहुमत मिल गया था।

पूरब प्रदेश की राजधानी चारूपुर में जनता मिशन के विधायकों की बैठक से पहले जनता मिशन के सभी बड़े नेता विधायकों से मिल रहे थे। वे यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि विधायक किसे अपना नेता बनाना चाहते हैं। दो–तीन नामों पर अधिक चर्चा हो रही थी। रवि प्रसाद, बहोरन भाई व पल्लवी बाई के नाम चर्चा में थे।

तीन बजे बैठक शुरू हुई। शामपुर के विधायक करनलाल द्वारा पल्लवी बाई का नाम विधायक दल के नेता के लिए प्रस्तावित किया गया। पल्लवी बाई के नाम का कई विधायकों ने एक साथ समर्थन किया। जनता मिशन दल के बाहर से आए एक बड़े नेता ने पूछा–"इस पर किसी को आपत्ति तो नहीं है?" अधिकांश विधायकों ने एक साथ कहा–नहीं।" इस तरह पल्लवी बाई को जनता मिशन दल के विधायकों का नेता चुन लिया गया।

1. किसी भी राज्य में सरकार बनाने के लिए किसी दल या दलों के समूह को कम–से–कम कितनी सीटें चाहिए?
2. पूरब प्रदेश राज्य में विधानसभा की कुल 70 सीटें थीं तो आधे से अधिक कितनी सीटें होंगी?

पूरब प्रदेश में जनता मिशन का मंत्रिमंडल बना

केन्द्र सरकार हर राज्य में अपना एक प्रतिनिधि नियुक्त करती है जिसे राज्यपाल कहते हैं।

पल्लवी बाई ने पूरब प्रदेश के राज्यपाल से मिलकर बताया कि उनके दल को आधे से अधिक सीटें मिलीं हैं और जनता मिशन दल के विधायकों ने उन्हें अपना नेता चुना है। इसलिए उन्हें सरकार बनाने के लिए बुलाया जाए।

5 फरवरी को पल्लवी बाई को पूरब प्रदेश राज्य के राज्यपाल ने मुख्यमंत्री नियुक्त किया। पल्लवी बाई ने अपने दल के 12 विधायकों के साथ मंत्रिपद की शपथ ली। इस तरह पूरब प्रदेश में जनता मिशन दल का मंत्रिमंडल बन गया।

1. मुख्यमंत्री कौन बनेगा? यह कैसे तय होता है?
2. मुख्यमंत्री की नियुक्ति कौन करता है?
3. मंत्रिमंडल में और कौन लोग होते हैं?

LSG8D3

राज्य का मंत्रिमंडल सरकार

पूरब प्रदेश राज्य के चुनाव परिणामों की तालिका देखें। इस तालिका में जनता मिशन को 38 सीटें मिली हैं जो पूरब प्रदेश विधानसभा की 70 सीटों में से आधे से कुछ अधिक हैं। किसी राज्य में विधानसभा के चुनाव के बाद जिस दल को आधे से अधिक सीटें मिलती हैं उसे बहुमत दल कहते हैं। जैसे हिमाचल प्रदेश में 68 सीटें हैं तो जिस दल के पास 35 सीटें होंगी, वह दल बहुमत दल कहलायेगा। यदि एक दल के पास सरकार बनाने के लिए आधे से अधिक सीटें न हों तो कई दल आपस में मिल जाते हैं जिससे कि उनकी सीटों की संख्या आधे से अधिक हो जाए और वे सरकार बना सकें।

जिस तरह पूरब प्रदेश में जनता मिशन के विधायकों ने पल्लवी बाई को अपने विधायक दल का नेता चुना था, उसी तरह किसी भी राज्य में आधे से अधिक सीटें जीतनेवाला दल अपने विधायक दल का नेता चुनता है जिसे राज्यपाल, मुख्यमंत्री के रूप में शपथ दिलाते हैं। राज्यपाल, मुख्यमंत्री की सलाह पर अन्य मंत्रियों को नियुक्त करते हैं। मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों को मिलाकर किसी भी राज्य का मंत्रिमंडल बनता है। मुख्यमंत्री का मंत्रिमंडल तब तक काम करता है जब तक उसे विधानसभा में बहुमत हासिल हो। विधानसभा में बहुमत न रहने पर मुख्यमंत्री व अन्य मंत्रियों को अपने पद छोड़ने पड़ते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. मानचित्र क्र. 2.1 को देखकर आप अपने विधानसभा क्षेत्र का नाम एवं क्रमांक लिखें ?
2. मान लीजिए आप किसी विधान सभा में चुनाव लड़ रहे हैं तो आप अपना चुनाव प्रचार कैसे करेंगे?
3. किसी भी राज्य को विधानसभा के चुनाव के लिए अलग–अलग विधानसभा क्षेत्रों में क्यों बाँटा जाता है?
4. छत्तीसगढ़ की विधानसभा में किसी भी दल को बहुमत प्राप्त करने के लिए कितनी सीटों की आवश्यकता होगी?
5. किसी भी विधानसभा क्षेत्र में चुने गए प्रतिनिधि की मुख्य जिम्मेदारी क्या होती है?
6. अगर आप विधायक होते तो अपने क्षेत्र के लिये क्या कार्य करते ?

LSQ4EQ

3 राज्य की सरकार
भाग–दो

LSYZGD

पिछले पाठ में आपने पढ़ा है कि सरकार का गठन किस तरह होता है, सरकार बनाने के लिए विधायक कैसे चुने जाते हैं, सरकार कैसे बनती है, मुख्यमंत्री का चयन कैसा होता है, मुख्यमंत्री को नियुक्त कौन करता है ?

सरकार के मुख्य तीन काम होते हैं– कानून बनाना, कानूनों को लागू करना और न्याय करना। सरकार कानून कैसे बनाती है और उसे किस तरह लागू करती है, इस पाठ में विस्तार से पढ़ेंगे।

1. छत्तीसगढ़ राज्य में रहनेवाले लोगों को कौन–कौन–सी सरकारों के कानून मानने होंगे?
2. क्या छत्तीसगढ़ की सरकार द्वारा बनाया गया कानून ओडिशा में लागू होगा?
3. क्या भारत सरकार द्वारा बनाया गया कानून महाराष्ट्र में लागू होगा?

कानून की आवश्यकता क्यों ?

हमारे देश के लोगों के जीवनयापन के कई तरीके हैं। कोई किसान है, कोई मजदूर है, कोई अमीर है, कोई गरीब है। कोई दुकान चलाता है तो कोई पढ़ाता है। लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने एवं सार्वजनिक सुविधाओं को सहीं ढंग से प्रदान करने के लिए कानून बनाए जाते हैं। साथ ही विकास, शांति, और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए सरकार कानून बनाती है। उदाहरण के लिए परिवहन कानून को लें। परिवहन व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए बस, टैक्सी, टेम्पो, ट्रक आदि चलानेवालों को परमिट दिए जाते हैं ताकि सभी लोगों को कहीं भी आने–जाने की उचित सुविधा उपलब्ध हो। साथ ही सभी बसें, टैक्सी, आदि व्यवस्थित रूप से चलें। इसी प्रकार जब हम किसी से जमीन खरीदते हैं या बेचते हैं तो उसे पटवारी के रिकार्ड में दर्ज कराना पड़ता है। पटवारी के पास जमीन का नक्शा और उस जमीन पर किसका हक है यह रिकार्ड रहता है ।

1. सरकार कानून क्यों बनाती है ?
2. यदि जमीन को पटवारी के रिकार्ड में दर्ज न किया जाए तो क्या होगा? चर्चा कीजिए।
3. यदि वाहन चलानेवालों को परमिट लेने का कानून न हो तो क्या होगा?

पूरब प्रदेश में जनता मिशन दल की सरकार बन गई थी। यह सरकार 5 सालों तक चली। इन 5 सालों में विधानसभा की कई बैठकें हुईं। इन बैठकों में राज्य की कई समस्याओं पर चर्चा हुई। कई मसले तय किए गए। जैसे किस दर पर कार, जीप, बस आदि से रोड टैक्स लेना है। किसानों को सिंचाई के लिए बिजली किस दर पर दी जाए। जिनके पास रहने को घर नहीं है, उन्हें उसके लिए जमीन दी जाए, लगान माफ किया जाये कि नहीं, इस तरह सभी विषयों पर विधानसभा में चर्चा हुई।

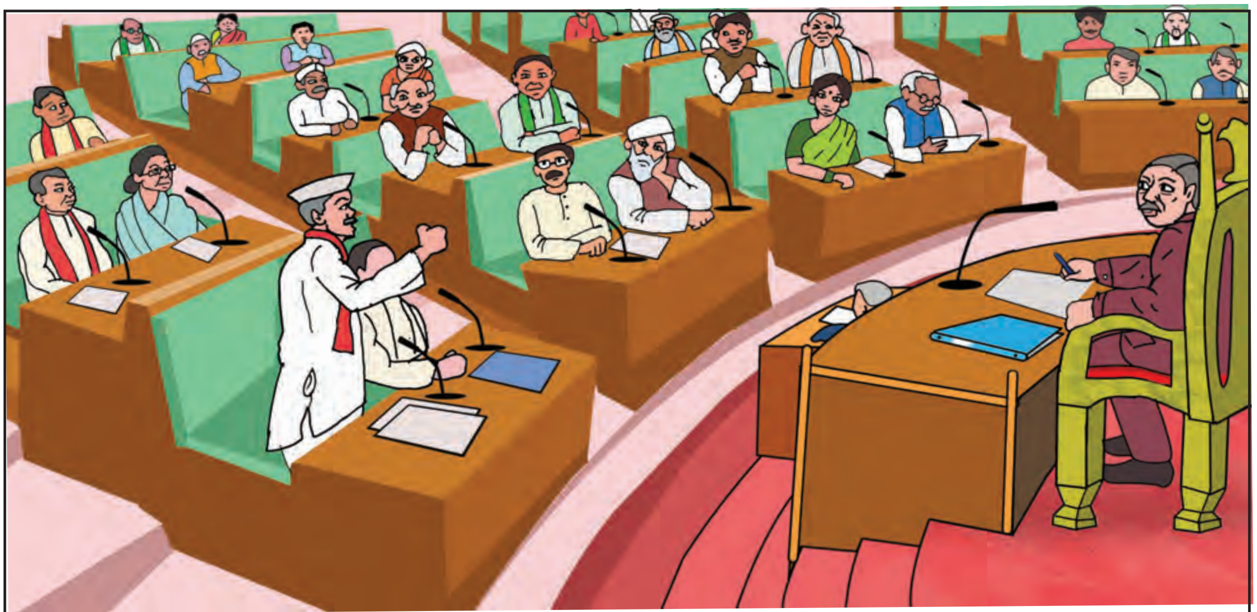

चित्र–3.1 विधानसभा में विधायकों की बहस

ऐसे कई मसले होते है जिसमें विधायकों द्वारा मंत्रियों से प्रश्न पूछे जाते हैं। किसी विधायक ने कहा महँगाई बढ़ गई है उसे कम करने के लिए आप क्या कर रहे हैं तो वित्तमंत्री को जवाब देना पड़ता है। कभी शिक्षा से संबंधित बातों को शिक्षा मंत्री से पूछा जाता हैं? तो कभी शहरी विकास मंत्री से शहर के विकास से संबंधित प्रश्न। विधायक कभी मंत्रियों के जवाब से संतुष्ट होते हैं तो कभी असंतुष्ट। कई बार मंत्रियों की खूब आलोचना भी होती है।

न्यूनतम मजदूरी पर कानून बना

पूरब प्रदेश राज्य की विधानसभा में कानून कैसे बने, इसे जानने के लिए आइए विधानसभा में एक कानून पर होने वाली चर्चा एवं बहस को देखें :–

सबसे पहले मंत्रिमंडल ने तय किया कि मजदूरों की स्थिति को सुधारने के लिए एक प्रस्ताव पेश किया जाए। इसलिए श्रम मंत्री ने विधानसभा में न्यूनतम मजदूरी का बिल पेश किया। पहले दिन प्रस्तावित विधेयक की प्रतियाँ बाँटी गईं।

प्रस्तावित कानून को विधेयक या बिल भी कहते हैं।

विधेयक पेश करते हुए श्रम मंत्री ने कहा, ''पिछले कुछ सालों में उत्पादन बहुत बढ़ गया है। लेकिन मजदूरों की मजदूरी नहीं बढ़ी है। कई मजदूर संगठनों ने मजदूरी बढ़ाने के लिए आवाज उठाई है। कई बार हड़तालें भी हुई हैं। इससे उत्पादन पर बहुत बुरा असर पड़ता है। वास्तव में मजदूरों की माँगें जायज हैं। सरकार को जनहित में सोचना चाहिए। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने यह प्रस्ताव (बिल) रखा है। इसमें उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों की कम–से–कम मजदूरी जो वर्तमान में छ.ग. में औसतन मजदूरी दर लगभग 380.20 रुपए प्रतिदिन है। अभी 70 रुपए प्रतिदिन है, उसे बढ़ाकर 100 रुपए किया जाना है। खेतिहर मजदूरों की मजदूरी 50 रुपए प्रतिदिन से बढ़ाकर 70 रुपए किया जाना है। आप लोगों के पास विधेयक की प्रति है। कृपया आप उसे ध्यान से पढ़ें।''

कुछ दिन बाद इस प्रस्ताव पर चर्चा हुई। सभी ने बिल बड़े ध्यान से पढ़ा था। हर बिन्दु पर विस्तार से विचार हुआ। कोई बिल के पक्ष में बोलता तो कोई विपक्ष में।

विधेयक पर बहस

जनता मिशन दल के विधायकों ने बिल का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि हमारे राज्य में अधिकांश खेतिहर मजदूर हैं। जब तक उनकी हालत नहीं सुधरेगी हमारा राज्य आगे नहीं बढ़ सकेगा। फिर कुछ और विधायकों ने भी समर्थन किया। भारत दल के विधायक इस बिल के विरुद्ध थे। भारत दल की एक महिला विधायक ने कहा–''मैं इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं करूँगी, क्योंकि समान कार्य के लिए समान मजदूरी स्त्री और पुरुषों को मिलनी चाहिए। इसका नियम तो बना है, किन्तु इसका पालन नहीं किया जाता। महिलाओं को आज भी पुरुषों से कम मजदूरी दी जाती है।''

जनता मिशन दल के एक विधायक ने खड़े होकर कहा– ''सरकार यह ध्यान देगी कि मजदूरों को नए दर से मजदूरी दी जाए। महिला और पुरुषों को समान मजदूरी मिले इसके लिए इस बिल में खास प्रावधान किए गए हैं।'' आखिर में विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि इस बिल पर काफी चर्चा हो गई है। अगले दिन इस पर मतदान होगा।

जनता मिशन दल के 38 विधायक एवं अन्य दलों के 2 विधायकों ने बिल का समर्थन किया। लेकिन भारत दल एवं कुछ अन्य दलों ने बिल का विरोध किया। इस बिल के पक्ष में 40 और विपक्ष में 29 मत पड़े। विधानसभा में बिल पास हो गया। इसके बाद बिल को राज्यपाल के हस्ताक्षर के लिए भेज दिया गया। उनके हस्ताक्षर के बाद यह बिल कानून बन गया और सरकारी राजपत्र के द्वारा इसे पूरे राज्य में प्रसारित कर दिया गया।

चित्र–3.2 विधेयक पर मतदान

राजपत्र (गजट) में छपकर यह कानून जिलाधीश जैसे सरकारी अधिकारियों के पास पहुँचा। अब यह देखना उनकी जिम्मेदारी होगी कि प्रत्येक मजदूर को बढ़ी हुई दर पर मजदूरी मिले जितनी विधानसभा में तय की गई है।

1. पूरब प्रदेश विधानसभा में बिल को पास करने के लिए कम–से–कम कितने मतों की आवश्यकता होगी?
2. किसी भी बिल को बहुमत से पास करना क्यों जरूरी है? शिक्षक से चर्चा करें।

कानून बनाने का तरीका

इस तरह हमने देखा कि विधानसभा में कुछ विषयों पर जैसे (कानून, व्यवस्था, शिक्षा) कानून बनाए जाते हैं। कानून बनाने से पहले उस विषय पर एक बिल, जिसे विधेयक (कानून का प्रस्ताव) कहा जाता है, विधानसभा में पेश किया जाता है। उस पर खूब बहस व चर्चा होती है। कुछ मुद्दों पर विधेयक में फेर–बदल भी किया जाता है। विधानसभा में उपस्थित विधायकों में से आधे से अधिक विधायक जब किसी विधेयक के पक्ष में हों तभी वह विधेयक पास हो सकता है।

न्यूनतम मजदूरी के कानून का पालन न होना

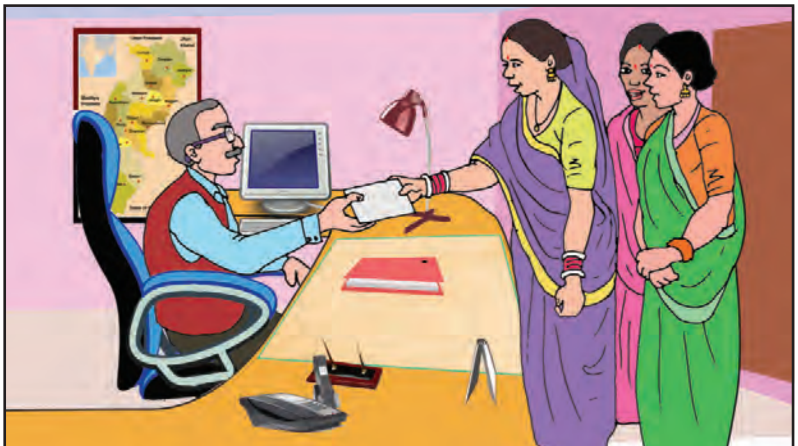
चित्र–3.3 कलेक्टर से शिकायत करती हुए महिलाएं

गोपालपुर के लोग न्यूनतम मजदूरी का कानून बनने से खुश थे। वे यह जानते थे कि उनको अब बढ़ी हुई दर से 380.20 रुपये मजदूरी मिलेगी। कुछ दिनों बाद वहाँ खरंजा निर्माण कार्य शुरू हुआ। कई महिलाएँ भी इसमें काम कर रही थीं। लेकिन काम करनेवालों को केवल 40 रुपए ही दिया जा रहा था। महिला मजदूरों ने स्थानीय अधिकारी एवं कलेक्टर के पास शिकायत की। कलेक्टर ने जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को जाँच करने एवं सही मजदूरी दिलाने का निर्देश दिया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने जाँच की और पाया कि मजदूरी कम दी जा रही थी। उन्होंने काम कराने वाले को बुलाकर डाँटा व पूरी मजदूरी देने को कहा।

आओ चर्चा करें

1. खरंजा निर्माण का काम करानेवाले व्यक्ति द्वारा कम मजदूरी देना सही था या गलत? चर्चा करें ।
2. आपके इलाके में मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी मिलती है या नहीं। चर्चा करें।
3. गोपालपुर की मजदूर महिलाओं ने किससे शिकायत की और क्या शिकायत की?
4. यदि किसी काम में लगे मजदूरों को कम मजदूरी मिले तो उन्हें क्या करना चाहिए?
5. चित्र 3.3 को देखने से क्या–क्या जानकारियाँ मिलती है?

कानून लागू करना

कानून बनाने का काम विधायिका (विधानसभा) द्वारा किया जाता है जबकि कानून को लागू कराने का काम मंत्रिमंडल द्वारा किया जाता है। मंत्रिमंडल के सहयोग के लिए अधिकारी व कर्मचारी होते हैं जिनकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है। जैसे कलेक्टर, तहसीलदार, पुलिस, पटवारी आदि। इन सबको राज्य सरकार वेतन देती है और उन्हें शासन के आदेशों का पालन करना होता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

   1. केन्द्र सरकार का एक प्रतिनिधि प्रत्येक राज्य में होता है जिसे –––––– कहते हैं।
   2. विधानसभा द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन करवाने का काम –––––– का है।
   3. जिस दल को –––––– मिलता है उसी दल की सरकार बनती है।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

   1. आप पर किन किन सरकारों के कानून लागू होते हैं।
      (अ) केन्द्र सरकार व छत्तीसगढ़ सरकार। (ब) छत्तीसगढ़ सरकार।
      (स) मध्यप्रदेश सरकार।
   2. राजनैतिक दल किसे कहते हैं?
   3. चुनाव प्रक्रिया के बारे में 3 मुख्य बातें लिखिए।
   4. मुख्यमंत्री कैसे बनते हैं?
   5. पंच और विधायक के चुनाव में क्या अंतर है?
   6. पूरब प्रदेश में न्यूनतम मजदूरी का कानून कैसे बना? अपने शब्दों में लिखें।
   7. नीचे विधानसभा और मुख्यमंत्री के कामों की सूची दी गई है। इनके कामों को अलग कीजिए और तालिका बनाइए–
      राज्य के लिए कानून बनाना, मंत्रियों में विभाग बाँटना, मंत्रियों से काम–काज पर प्रश्न पूछना, बजट पारित कराना, मंत्रिमंडल की बैठक की अध्यक्षता करना।

LT8VI1

3. इनके बारे में दो–दो वाक्य लिखें :–

   उम्मीदवार, पार्टी, विधायक, बिल, कानून, मंत्रिमंडल

गतिविधि–

शिक्षक की सहायता से एक नाटक खेलें जिसमें किसी बड़ी समस्या को दूर करने के लिए कानून बनाना हो।

LTHRJN

4 उद्योग एक परिचय

हमारा देश कृषि प्रधान है। यहाँ कृषि पर आधारित अनेक उद्योग धंधे विकसित हैं। फसल उगाना कृषि कार्य है और उन उत्पादित फसलों से अन्य किस्म की वस्तुएँ बनाना उद्योग का कार्य है। उद्योग–धंधे मानव, मशीन तथा विद्युत से संचालित किए जाते हैं।

नीचे दी गई वस्तुओं में से खेती से प्राप्त एवं मशीनों से प्राप्त वस्तुओं की अलग–अलग सूची बनाइए–

शक्कर, डबल रोटी, गेहूँ, गन्ना, सेब, कपड़ा, कपास, लकड़ी, आलू, बाँस, बाल्टी, टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर, रेलगाड़ी, आम, शहतूत, पोहा, कागज, प्लास्टिक के सामान।

खेती से प्राप्त वस्तुएँ	मशीनों से प्राप्त वस्तुएँ

कच्चा माल

उद्योगों में कच्चे माल की प्रमुख आवश्यकता होती है जैसे– कपड़े के लिए कपास, शक्कर के लिए गन्ना, कागज के लिए लकड़ी आदि।

उद्योग में कई वस्तुएँ तैयार होती हैं उन्हें तैयार करने के लिए जिन वस्तुओं का उपयोग होता है उन्हें कच्चा माल कहते हैं।

चित्र 4.1 दस्तकारों के अलग–अलग काम

उद्योग में उत्पादन कई तरह से होता है। कहीं व्यक्तियों के द्वारा तो कहीं मशीनों के द्वारा। मिट्टी के बर्तन, बीड़ी, टेबल, कुर्सी, दोना–पत्तल, रेशम, कढ़ाई–बुनाई, सूपा–टोकरी इत्यादि बनाने का कार्य मानव शक्ति से किए जाते हैं तथा प्लास्टिक का सामान और खिलौने आदि मशीनों के द्वारा बनाए जाते हैं। लोगों के द्वारा बनाई जाने वाली सामानों को दस्तकारी के काम कहते हैं। आइए हम कुछ ऐसे ही दस्तकारों के बारे में पढ़ेंगे ये दस्तकार कहाँ काम करते हैं। उत्पादन करने का तरीका क्या है? सामान को कैसे बेचते हैं और उनके कार्यों में क्या परिवर्तन आ रहे हैं? कुम्हार (कुम्भकार) भी एक दस्तकार है जो नदी के किनारे से मिट्टी लाता है, छानता है, गूँथता है और एक दो दिन में जब मिट्टी तैयार हो जाती है तब वह घूमते हुए चाक पर मिट्टी से मटके और अन्य बर्तन बनाता है। इन बर्तनों के अलावा भी कुम्भकार मिट्टी से कलात्मक और सजावट की वस्तुएँ भी बनाता है।

चित्र 4.2 चाक पर बर्तन बनाते हुए

ये वस्तुएँ काँप मिट्टी से बनाई जाती हैं जो कि मुलायम व चिकनी होती है। यह मिट्टी सभी जगह नहीं मिलती। छत्तीसगढ़ राज्य में महानदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे इस प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं। जहाँ कुम्भकारों के समूह एक साथ निवास करते हैं।

मिट्टी से बनी हुई वस्तुओं की सूची बनाइए।

अब तो बर्तन बनाने के लायक मिट्टी भी दूर–दूर तक नहीं मिलती क्योंकि आजकल नदियों के किनारे अधिकांश मात्रा में प्लास्टिक और कचरे मिलने के कारण अच्छी मिट्टी नहीं मिल पा रही है। गाँव में जहाँ सरकारी जमीन है अब कुम्भकार वहाँ से मिट्टी खोदकर लाते हैं अथवा जमीन के मालिकों से प्रति ट्रेक्टर गाड़ी की दर से मिट्टी खरीदते हैं। यह मिट्टी नदी किनारे की मिट्टी की तरह बर्तन बनाने में उपयोगी तो नहीं होती परन्तु काम चल जाता है।

चित्र–4.3 नंदी बैल–खिलौना व अन्य सजावटी सामान

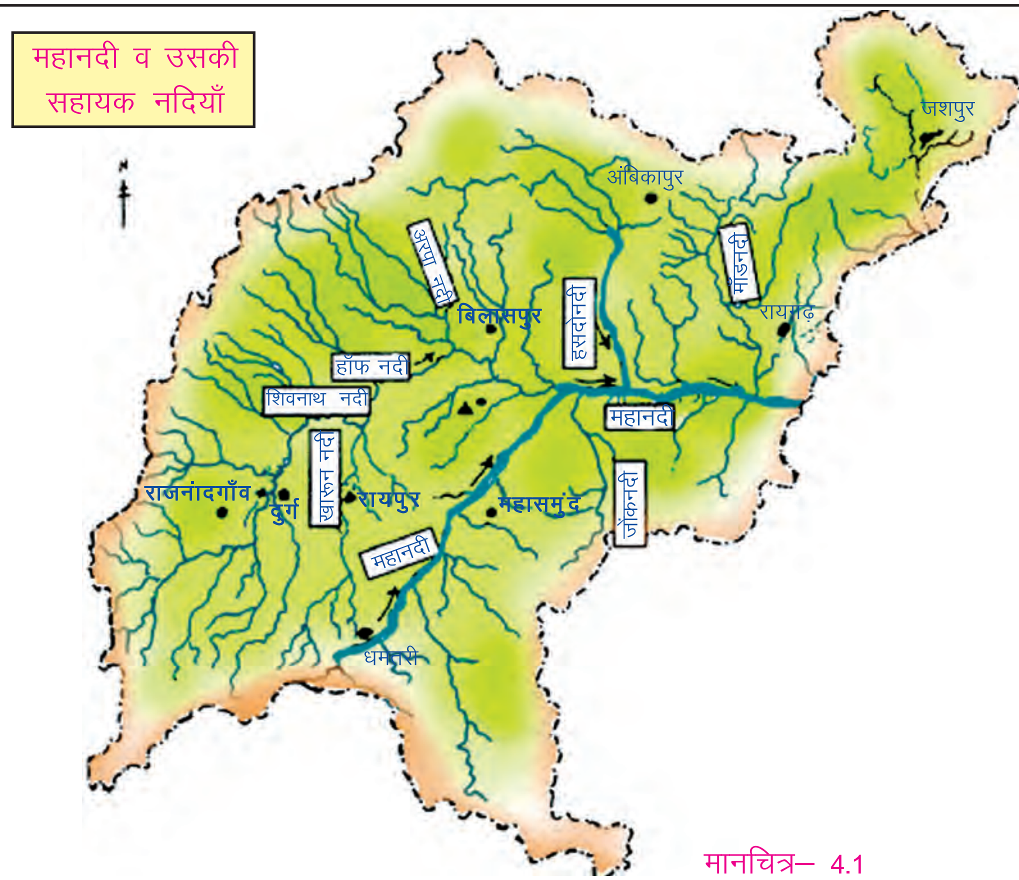

मानचित्र– 4.1

1. कुंभकार के लिए कच्चा माल क्या है? वह इसे कैसे प्राप्त करता है ?
2. कुंभकार को कच्चा माल प्राप्त करने के लिए क्या–क्या समस्याएँ आ रही हैं ?
3. मानचित्र 4.1 में महानदी व उसकी सहायक नदियों के नाम ढूँढ़ें।

चित्र– 4.4 भट्टी में पकता हुआ सामान

चित्र–4.5 बस्तर के बने हुए मिट्टी के सामान

पता करें–

1. अपने आसपास के गाँवों में जाकर देखिए कि कहाँ–कहाँ मिट्टी का सामान बनता है। इन बर्तनों के अलावा और कौन–कौन–सी वस्तुएँ बनाई जाती हैं और उन्हें कहाँ बेचा जाता है? (सूची बनाइए)

छत्तीसगढ़ में अन्य दस्तकार –

ऐसे ही एक अन्य दस्तकार जो ठेकेदार व्यापरियों से कच्चा माल लेकर चीजें बनाते हैं और उन्हीं को अपना तैयार माल बेचते हैं। यह प्रथा रेशम उद्योग में देखी जा सकती है। अपने राज्य में भी रेशम उद्योग काफी फैला हुआ है। यहाँ के तैयार रेशमी कपड़ों को कोसा के नाम से जाना जाता है तथा इससे संबंधित उद्योग कोसा उद्योग के नाम से मशहूर है।

शहतूत, अर्जुन, साजा और साल के पेड़ों पर रेशम के कीड़े पलते हैं या लोगों द्वारा पाले जाते हैं। कीड़े की इल्लियाँ शहतूत के पत्तों को खाकर अपने चारों ओर अपनी लार से धागा के रूप में एक खोल तैयार करती है। इस खोल को कोसा फल या 'कोकून' कहते हैं। इसी कोकून से रेशम के धागे तैयार किए जाते हैं। कोसा के कपड़े बनाने के लिए बुनकर को छोटा व्यापारी कोसा फल और तने का धागा देता है।

चित्र – 4.6 कोकून (कोसा–फल)

चित्र –4.7 व्यापारी के घर बुनकरों की भीड़

बुनकर व उसके परिवार कटे–फटे कोसा फल को छांटकर अलग कर अच्छे कोसा फल के ऊपर पट्टा (पेसट) लपेटते हैं ताकि कोसा फल को उबालते समय वह फटने न पाए। उसके बाद कोसा फलों को एक मिट्टी के घड़े में 1 लीटर पानी में 100 ग्राम कपड़ा धोने का सोडा मिलाकर चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता है। इसे दो तीन घंटे उबालने के बाद उबले कोसा फल को साफ पानी से इतना धोया जाता है कि कोसा फल की ऊपरी सतह में लगा हुआ चिपचिपा पदार्थ पूरी तरह से

चित्र–4.8 कोकून को उबालना

निकल जाए जिससे कोसा फल आसानी से धागा निकालने लायक बन जाए।

इसके बाद कण्डे की राख पर कपड़ा फैलाकर उस पर उबले हुए कोसा फल को सुखाने के लिए रख दिया जाता है। कुछ समय बाद उन फलों को एक गीले कपड़े में लपेटकर रखा जाता है। फिर कोसा फलों से धागा निकालने का काम शुरू होता है। कोसा फलों को एक प्लेट में रखा जाता है। उन फलों में से एक –एक कर धागा निकालते हैं। बुनकर व उसके परिवार के लोग अपनी जांघ पर रखकर रगड़कर नटवा पर धागा लपेटते हैं।

धागा निकालने का काम आम तौर पर महिलाएँ ही करती हैं। नटवा में धागे लपेटने के बाद चरखे के पास बैठकर बॉबीन में धागा चढ़ाया जाता है।

चित्र–4.9 नटवा

चित्र–4.10 आधुनिक चरखा

उसके बाद ताना पर धागा बाँधने का काम शुरू किया जाता है। ये धागे 35 से 37 मीटर तक लंबे होते हैं और सीधे लंबाई में बाँधे जाते हैं। इसमें लगभग 3840 मीटर लम्बे धागे होते हैं जिसे बाँधने में एक दिन से अधिक का समय लग जाता है।

बुनाई के समय एक दूसरा धागा चौड़े भाग में लगता है। इसे बाना कहते हैं। ताने और बाने की सहायता से ही कपड़े की बुनाई होती है। पहले ताना और बाना दोनों में कोसा धागे का ही उपयोग होता था लेकिन अब कोसे के कपड़े की मांग अधिक हो जाने के कारण ताने का धागा बाहर से मंगाना पड़ता है। इस तरह के धागे को कोरिया धागा कहते हैं क्योंकि यह चीन या कोरिया देश से मंगाया जाता है। बुनकरों को यह धागा व्यापारियों के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

चित्र–4.11 हैंडलूम (हाथ–करधा) का चित्र

एक थान कपड़ा बुनने में 6 से 8 दिन का समय लग जाता है। अगर कभी ज्यादा डिजाइन डालनी होती है तो और भी ज्यादा समय लग जाता है। इस तरह हमने देखा कि कोसा के कपड़े संबंधित सभी काम बुनकर परिवार के लोगों द्वारा किया जाता है। इसके लिए उन्हें अलग से मजदूर रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

कक्षा में चर्चा करें –

कोसा उद्योग में कच्चा माल किसका है, औजार किसके हैं, कपड़ा तैयार करने में श्रम किसका लगा, बुना कपड़ा क्या कहलाता है ?

छोटे व्यापारी बुनकरों से बुने हुए कपड़ा लेते हैं तथा उनका हिसाब–किताब रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें नई डिजाइनें बताई जाती है तथा आगे के आर्डर के मुताबित उन्हें कोसा फल कोरियाई धागा दिया जाता है। छोटा व्यापारी बड़े व्यापारी को आर्डर के अनुसार कपड़े उपलब्ध कराता है।

इसी प्रकार बड़े शहरों के बाजारों में कोसा कपड़े ऊँचे दामों में बिकते हैं। बड़े व्यापारी कई शहरों एवं विदेशों में अपने माल की बिक्री के लिए बाजार खोजते हैं एवं डिजाइनरों की व्यवस्था भी करते हैं।

छत्तीसगढ़ में अन्य दस्तकार –

कुम्भकार व बुनकर के अलावा अन्य दस्तकार हैं जैसे जुलाहा, कपड़े पर छपाई करने वाला रंगरेज, बाँस की टोकरियाँ एवं अन्य चीजें बनाने वाले बसोड़, बर्तन बनाने वाले कसेर, लोहे का सामान बनाने वाले लोहार, रजाई, गद्दे बनाने वाले पिंजारे आदि। वस्तुओं का उत्पादन दस्तकारों द्वारा भी किया जाता है। वे अपने घर पर अपने स्वयं के औजारों का उपयोग कर वस्तुएँ बनाते हैं। इसके लिए काम का समय भी वे स्वयं तय करते हैं। उसके इस कार्य में उसके घर परिवार के अन्य सदस्य सहयोग करते हैं। इन्हें इस काम की पारंपरिक कला का ज्ञान है। दस्तकार स्वयं अपने पैसों से कच्चा माल खरीदते हैं और सामान बनाकर बेचने की व्यवस्था करते हैं। फायदा या नुकसान दस्तकार को स्वयं उठाना पड़ता है।

वैसे तो सही कीमत वस्तुओं को स्वयं बेचने से ही प्राप्त होती है। लेकिन इनको अपने सामानों की सही कीमत प्राप्त नहीं होती है। उनकी तुलना में व्यापारी इन्हें कम कीमत में खरीदता है। कुछ छोटे व्यापारी (बिचौलिये) भी वहाँ से सामान खरीदकर बड़े व्यापारी को बेचते हैं। इसी तरह सामान उपयोग करने वाले तक पहुँचता है।

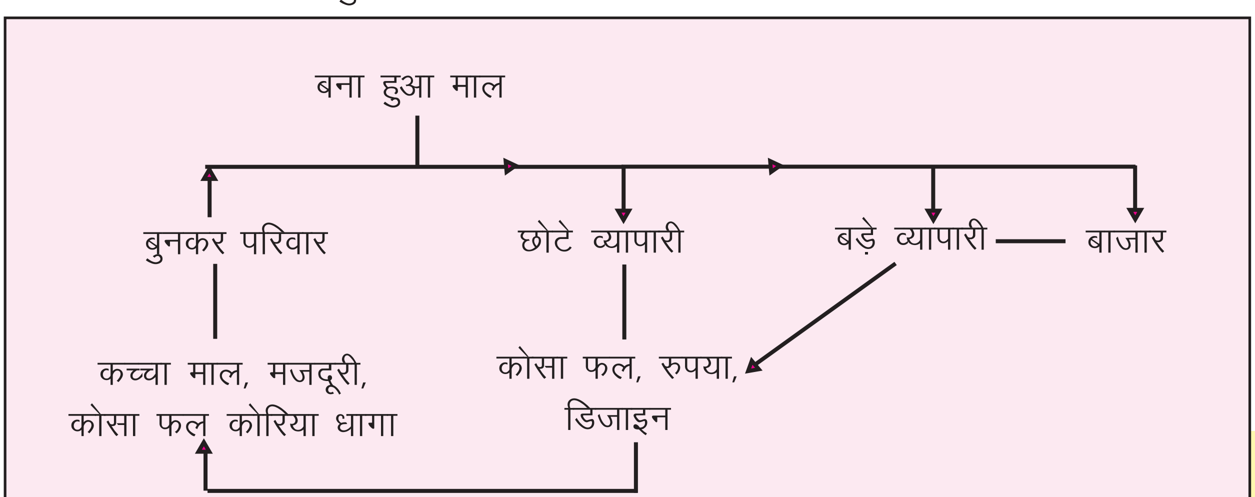

दस्तकारों के काम में परिवर्तन लाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने राजस्थान की कुछ कुंभकारों से कलाकृतियाँ बनाने का प्रशिक्षण दिलवाया इससे यहां के स्थानीय लोग सजावटी समान भी बनाने लगे हैं एवं इनकी मांग शहरों में भी हो रही है। इसे टेराकोटा उद्योग कहा जाता है जैसे हण्डी, पोरा बैल, कलात्मक एवं सजावटी सामान, लैम्प, गमला, घण्टी, मुखौटे आदि बना लेते हैं जो जगार उत्सव व अन्य हाट बाजारों में खूब बिकते हैं। सरकार ने कुम्भकारों को मशीन से चलने वाले चॉक दिए हैं ताकि उत्पादन अधिक हो सके।

ठेकेदारी से उत्पादन के अन्य कार्य

ठेकेदारी प्रथा में बाँस से टोकरी बनाना, बीड़ी बनाना, दोना पत्तल बनाना, कपड़ा बुनना आदि कई अन्य काम भी किए जाते हैं। ऐसे उद्योगों में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। इन उद्योगों में सभी काम घर पर किए जाते हैं और पूरा परिवार मिलकर काम करता है। अक्सर व्यापारी या ठेकेदार उन्हें अग्रिम राशि देते हैं या कच्चा माल देते हैं। उन्हें तैयार वस्तु के लिए मजदूरी मिलती है। लेकिन इस व्यवस्था की सबसे बड़ी कमी यह है कि इस काम में लगे परिवारों को अपनी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

इसके विपरीत ठेकेदारी प्रथा में बड़े व्यापारी के लिए दो तरह से सुविधा है– एक, उसे कपड़ा बनाने या किसी भी काम के लिए कोई व्यवस्था अपने कारखाने के अंदर नहीं करनी पड़ती तथा किसी किस्म के औजार आदि भी नहीं देने पड़ते। दूसरा, कारखाने में रखे गए मजदूरों को फैक्ट्री कानून के नियमों के अनुसार वेतन एवं सुविधाएँ मिलने का हक बनता है। जबकि इस तरह, ठेकेदारी प्रथा के अंदर, काम करवाने में बड़े व्यापारी इन्हें अपना मजदूर मानने के लिए तैयार नहीं होते हैं और फैक्ट्री कानून से बच जाते हैं। इस कारण मेहनत करनेवाले दस्तकारों को कानून के तहत जो सुविधाएँ मिलनी चाहिए उससे वे वंचित रह जाते हैं।

यदि आपके परिवार में किसी भी प्रकार के उत्पादन का काम होता है तो उस काम को कैसे किया जा रहा है? उसका बाजार कहाँ है? अपने साथियों को बताएँ।

1. क्या आप दस्तकारों के कामों की विशेषताओं से अपने आसपास के दस्तकारों और उनके द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं को पहचान सकते हैं ? सूची बनाइए।
2. दस्तकारों के नाम व उनके द्वारा तैयार की जाने वाली वस्तुओं की सूची बनाइए।
3. स्वयं सामान बेचना और व्यापारी को सामान बेचने में क्या अंतर है ?
4. दूर–दूर तक सामान बेचने का क्या कोई और तरीका हो सकता है? चर्चा कीजिए।
5. छोटे व्यापारी बुनकर परिवारों को क्या–क्या देते हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।
6. छोटे व्यापारियों को बुनकरों से क्या प्राप्त होता है?
7. बुनकर अपने द्वारा बुने हुए कपड़ों को स्वतंत्र रूप से क्यों नहीं बेच सकता ?

बाजार व्यवस्था :–

किसी भी वस्तु का उत्पादन करने तथा उसे बेचने के लिए उचित बाजार की व्यवस्था करना भी उद्योग का एक प्रमुख अंग है। इस प्रकार उद्योग को संचालित करने के लिए कच्चा माल जुटाना, सामान तैयार करना तथा बाजार में बेचना आवश्यक है। दस्तकार अपना कुछ सामान स्वतंत्र रूप से बाजारों में घूमकर भी बेचते हैं। इनका सामान आस–पास के इलाकों में ही बिकता है। छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे इलाके भी हैं जो मिट्‌टी से बने इन सामानों के लिए प्रसिद्ध है। जैसे कोण्डागाँव जिले में कोण्डागाँव, रायपुर जिले में रायपुर नगर के पास खारून नदी के किनारे रायपुरा ग्राम तथा महासमुंद में बरोण्डा बाजार एवं इनके अतिरिक्त बिलासपुर, जांजगीर चांपा, रायगढ़ आदि जिलों के गाँव में भी मिट्‌टी के सामान बनाए जाते हैं। वैसे ही जांजगीर चांपा जिले में कोसा उद्योग अधिक विकसित है। बस्तर, दंतेवाड़ा जगदलपुर, कांकेर, धमतरी, रायपुर, कबीरधाम, जांजगीर चांपा, बिलासपुर सरगुजा जिलों के जंगलों में उपलब्ध साल, बेर और सेंधा के वृक्षों पर कोसा कीड़े की प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

बाजार से बहुत सी वस्तुएँ खरीदते हैं जैसे–चावल,दाल, सब्जियाँ,पुस्तक,कॉपी,पेन,मंजन, बिस्किट,दूध आदि। आइए अब हम बाजार व्यवस्था को जानें–कुछ स्थानों पर साप्ताहिक बाजार , कुछ स्थानों पर स्थायी बाजार और कुछ स्थानों पर बड़े–बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स होते हैं। साप्ताहिक बाजार किसी एक निश्चित दिन व निश्चित स्थान पर लगती है जहाँ पर बहुत सी वस्तुएँ अपेक्षाकृत सस्ते दामों पर मिल जाती है साप्ताहिक दुकानदारों को घर के लोग ही मदद करते हैं। वैसे बाजारों में खरीददारों के पास अच्छी वस्तुओं को चुनने के अवसर अधिक मिलते हैं, हमारी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ एक ही जगह में मिल जाती है। दस्तकार अपना कुछ सामान स्वतंत्र रूप से इन बाजारों में बेचते हैं जैसे आपने मिट्‌टी के दस्तकारों के बारे में पढ़ा।

स्थायी बाजार प्रायः शहरी क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं जहाँ प्रत्येक वस्तु का बाजार प्रतिदिन लगा होता है। हमारे गाँव–मुहल्ले में भी जो दुकानें होती हैं वे भी स्थायी होती हैं। शॉपिंग मॉल और शांपिंग काम्प्लेक्स बड़े –बड़े शहरों में देखने को मिलते हैं। प्रायः ये बहुमंजिला वातानुकूलित (A.C) दुकानें होती हैं। अलग–अलग मंजिलों पर अलग–अलग वस्तुएँ मिलती हैं।

बड़ी–बड़ी दुकानों व शॉपिंग मॉल में ब्रांडेड सामान मिलते हैं, ब्रांड किसी उत्पाद पर किसी विशेष नाम या चिन्ह की मोहर लगाना जैसे– हिंदुस्तान प्राईवेट लिमिटेड, गुडलैंड, बाटा, एच.एम.टी., फेयरएण्ड लवली, बोरोप्लस आदि।

गाँव मुहल्ले की दुकान

साप्ताहिक बाजार

शॉपिंग मॉल

चित्र–4.12

हमने कोसा उद्योग के बारे में पढ़ा है यहाँ हम कोसा से बनी वस्तुओं को विभिन्न बाजारों से होते हुए उपभोक्ता तक कैसे पहुँचता है। इसका अध्ययन करेंगे :–

कोसा के फल को छोटे व्यापारी खरीदते हैं और उसे बुनकर को धागा बनाने के लिए देते हैं। उनसे धागा बड़े व्यापारी खरीद कर वस्त्र बनुवाते हैं। बने वस्त्रों को थोक बाजार में भेजते है वहाँ से फुटकर बाजार पहुँचता है और अन्त में कोसा वस्त्र उपभोक्ता तक पहुँच जाता है।

थोक बाजार – प्रत्येक शहर में थोक बाजार का एक क्षेत्र होता है जहाँ वस्तुएँ पहले पहुँचती हैं तथा यहीं से वे अन्य व्यापारियों तक पहुँचती हैं। फुटकर खुदरा व्यापारी – अंतिम व्यापारी जो वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है।

हमारे छत्तीसगढ़ में बने कोसे कपड़े की मांग स्थानीय बाजारों के अतिरिक्त प्रादेशिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। चेन्नई ,बंग्लुरू, नागपुर,भोपाल आदि स्थानों में छत्तीसगढ़ के कोसा कपड़े की दुकानें हैं। इसी तरह भारत के बाहर जर्मनी,फ्रांस चाइना, मलेशिया जैसे लगभग 38 देशों से इन कपड़ों का व्यापार किया जाता है।

अभ्यास के प्रश्न

LTRMLB

1. खाली स्थान को भरिए –

1. भारत .... प्रधान देश है।
2. उद्योग धंधे मानव, मशीन तथा .... से संचालित होता है।
3. कुंभकार के लिए कच्चा माल .... है।
4. मिट्टी से बने सजावटी सामान को .... कहते हैं।
5. मिट्टी का घड़ा, सुराही बनाना .... कहलाता है।
6. ताना पर लगने वाला धागा .... धागा कहलाता है।
7. रेशम के कीड़े .... के पेड़ पर पाले जाते हैं।
8. कोकून को उबालने से पहले इस पर .... लपेटा जाता है।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कच्चा माल किसे कहते हैं?
2. दस्तकारी किसे कहते हैं?
3. बाजार किसे कहते हैं?
4. नदी के किनारे की चिकनी मिट्टी से ही बर्तन व अन्य सामान क्यों बनाए जाते हैं?

5. मिट्टी के बर्तन को बेचने के लिए क्या तरीके अपनाए जाते हैं?

6. कुंभकार के काम में किस–किस तरह के परिवर्तन आए हैं? अपने शब्दों में समझाइए।

7. बुनकर परिवार को कोसा फल कहाँ से प्राप्त होता है?

8. बुनकर कोसे का कपड़ा किस प्रकार बनाता है?

9. छोटा व्यपारी क्या–क्या काम करता है?

10. यदि कोसा उद्योग से छोटा व्यापारी हट जाए तो बुनकरों के काम की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

परियोजना – किसी एक दस्तकार के बारे में इन बिन्दुओं पर विस्तार से लिखिए।

1. क्या बनाता है?
2. कच्चा माल क्या है?
3. कैसे बनाता है?
4. सामान कहाँ बेचता है?

5 छत्तीसगढ़ के छोटे एवं बड़े उद्योग

पिछले पाठ में आपने उद्योग के बारे में विस्तार से अध्ययन किया है। कुटीर उद्योग के अन्तर्गत आपने दस्तकारी एवं ठेकेदारी के काम में मिट्टी के काम व कोसा उद्योग के बारे में पढ़ा। आइए इस पाठ में हम कुटीर उद्योग से बड़े उद्योग अर्थात लघु एवं वृहत् उद्योग के बारे में पढ़ेंगे। उत्पादन का काम कारखानों में किस तरह से होता है, इसका भी अध्ययन करेंगे।

LU1IHY

लघु उद्योग

कुटीर उद्योग का बड़ा रूप लघु उद्योग कहलाता है इस उद्योग में कम पूँजी और कम मशीनों की आवश्यकता होती है। इन उद्योगों में प्रयुक्त मशीनें छोटी किन्तु विद्युत चलित होती हैं। कच्चा माल अन्य प्रदेशों से भी मंगाया जाता है तथा निर्मित माल की बिक्री स्थानीय एवं दूर–दूर के बाजारों में की जाती है। इन उद्योगों में चावल मिल, पोहा मिल, दाल मिल, ब्रेड, बिस्किट बनाना, आरा मिल, स्टील के बर्तन बनाने के कारखाने, लोहे के कारखाने (अलमारी, कुर्सी, पाइप, हथौड़ा) जूते–चप्पल, चमड़े की अन्य वस्तुएँ, तांबे व कांसे के बर्तन आदि बनाए जाते हैं।

घर पर कार्य करने और कारखाने में काम करने में क्या–क्या अंतर हो सकते हैं ? चर्चा करें।

छोटे कारखानों में किस प्रकार काम होता है यह जानने के लिए हम चावल मिल के बारे में विस्तार से जानेंगे, जैसा कि आप जानते हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य में अधिक मात्रा में धान की पैदावार होती है, इसलिए इसे धान का कटोरा भी कहते हैं। यहाँ पहले धान से चावल निकालने का काम मूसल एवं ढेकी से कूटकर होता था। इस प्रक्रिया में काफी समय और मेहनत लगती थी क्योंकि इसमें सारा काम हाथ से किया जाता था।

आगे चलकर कई गाँवों में धनकुट्टी (हॉलर) मशीनें लग गई जिससे धान से चावल निकालने का काम आसान हो गया। इन मशीनों से कम समय में अधिक से अधिक चावल निकाला जा सकता है। आजकल धनकुट्टी (हॉलर) मशीनों के अलावा चॉवल मिल (राईस मिल) में और अधिक मात्रा में धान से चावल निकालने का काम होने लगा है। अपने राज्य में कुरूद, महासमुंद, तिल्दा–नेवरा, नवापारा, राजिम, आंरग, भाटापारा, धमतरी, बेमेतरा, सूरजपुर, गरियाबंद, कोण्डागांव, जांजगीर–चांपा आदि जगहों पर बड़ी संख्या में चावल मिलें हैं।

LUAEPL

(1) गाँव के लोग धान से चावल निकालने के लिए कहाँ जाते हैं हॉलर या राईस मिल?

(2) आपके आस–पास गाँव या शहर में धान से चावल निकालने का काम किस तरह से किया जाता है ?

किसान धान कहाँ बेचता है ?

किसान अपना धान बेचने के लिए अपने पास के सहकारी समिति में ही लाते हैं जिसमें सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही समिति द्वारा धान खरीदा जाता है, समर्थन मूल्य का निर्धारण सरकार द्वारा हर वर्ष निर्धारित किया जाता है। इन समितियों के अलावा किसान अपने धान को मंडी में भी बेचते हैं। मंडी थोक बिक्री का बड़ा बाजार (जैसे– सब्जी मंडी, फल मंडी, धान मंडी) है। मंडी में किसान धान तब बेचता है जब सहकारी समिति उनका पूरा धान नहीं लेती है और उनका धान बेहतर किस्म का होता है। किसान जो धान सहकारी समितियों या मंडियों को बेचते हैं, वह एफ.सी.आई. के गोदामों में जमा होता है, फिर वहाँ से उससे चावल निकालने के लिए राईस मिल में भेजा जाता है।

एफ.सी.आई. Food Corporation Of India भारतीय खाद्य निगम

चित्र–5.1 समिति में धान ले जाते हुए किसान

1. किसान अपना धान कहाँ– कहाँ बेचते हैं ? सूची बनाइए ?
2. सहकारी समिति एवं मंडी में क्या अंतर है?
3. चावल मिल में धान कहाँ – से आता है?

चावल मिल (राईस मिल)

धान से चावल निकालने की प्रक्रियाः–चावल निकालने की प्रक्रिया के चार भाग होते हैं

1.सफाई – इस भाग में धान की सफाई की जाती है। धान जैसे ही कृषि मंडी या एफ.सी.आई. से मिल में आता है वहीं से धान की सफाई का कार्य शुरू होता है। इसमें ऐलीवेटर मशीन द्वारा धान में से कंकड, कचरा, धूल, मिट्टी,रेतकण आदि छन्नी द्वारा अलग किए जाते हैं। इस काम के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती है।

ऐलीवेटर वह मशीन है जिसके माध्यम से धान की सफाई होती है ऐलीवेटर को आप इस तरह से समझ सकते हैं जैसे किसी बडी इमारत में एक मंजिल से दूसरी मंजिल में लिप्ट के माध्यम से जाते हैं उसी प्रकार धान भी ऐलीवेटर मशीन के जरिये एक छन्नी से दूसरे छन्नी तक पहुँचता है।

चित्र– 5.2 ढेकी

2.चावल निकालना – जिस प्रकार ढेकी को बार – बार ऊपर नीचे करने से आपसी रगड़ के कारण धान से चावल का छिलका अलग हो जाता है,उसी तरह मशीन के इस भाग में रबर के दो पहिए होते हैं जैसे ही धान दोनों पहिए के बीच से गुजरता है तो रगड़ से उसका छिलका अलग हो जाता है।

ढेकी धान से चावल निकालने का एक उपकरण है। आज भी गाँवों में ढेकी से ही धान को कूटकर चावल निकाला जाता है।

3.भूसा को अलग करना :– जिस तरह सूपा से अनाज के कचरे को अलग किया जाता है उसी तरह यहाँ पर चावल से भूसे को अलग किया जाता है। इस मशीन को सेपरेटर कहते हैं।

4.पॉलिश करना :– इस भाग पर चावल में पॉलिश की जाती है। इस प्रक्रिया में चावल तीन हिस्सों में बटता जाता है। तीसरी ढेरी में साबूत चावल, दूसरी ढेरी में दो टुकड़ेवाले चावल (खंडा) पहले ढेरी में चावल के छोटे–छोटे कण (नक्की या कनकी) के रूप में जमा होते हैं। इसी भाग में चावल की पॉलिश के दौरान चावल का ऊपरी परत कोढ़ा के रूप में एक जगह इकट्ठा होता है।

चावल तैयार करने की मशीन

अरवा और उसना चावल निकालने की मशीन एक ही होती है उसना चावल निकालने के लिए हँडियानुमा मशीन की हंडियों को पानी से आधा भरा जाता है। पानी गरम करते है फिर उसमें धान को डाला जाता है। इसमें धान लगभग 8–10 घंटे तक रहता है।इसके बाद हंडियों में लगे पाईप से पानी को बहा दिया जाता है। इस धान को फर्श पर सुखाकर अरवा मिल मशीन में डालकर धान से चावल निकाला जाता है। हमारे छत्तीसगढ़ से इस चावल को ओडिशा, बिहार, बंगाल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में भेजा जाता है।

चित्र– 5.3 उसना मिल में धान को उबालते हुए

शिक्षक की मदद से पता करें कि अरवा और उसना चावल मिल में क्या अंतर है?

चित्र–5.4 उसना चावल मिल के पीछे से निकलता हुआ पानी

1. चावल मिल में साल भर काम क्यों नहीं चलता ? चर्चा करें।

धान से निकले अन्य पदार्थों की उपयोगिता –

धान से निकले पदार्थ	उपयोगिता
साबूत चावल	भोजन
खंडा	भोजन
कनकी	मुर्गी के लिए दाने
कोढ़ा	खाद्य तेल
भूसा	पोहा पालिश, ईंट पकाना

मजदूरों की संख्या एवं स्थिति :–

इस मिल में काम करने वाले मजदूरों कि संख्या लगभग 15–20 होती है। इस मिल में दो तरह के मजदूर रखे जाते हैं। एक नियमित या स्थायी कर्मचारी होते हैं। उन्हें वेतन के अलावा और कोई सुविधा नहीं मिलती है । दूसरे अस्थाई या अनियमित मजदूर होते हैं, जिन्हें प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी मिलती है।

अक्टूबर से फरवरी तक मिल लगातार चलती है, मार्च से जून तक नियमित काम नही होता है जबकि बरसात में तो मिल बिल्कुल ही बंद रहती है।

वृहत् उद्योग :–

जब कोई उद्योग उत्पादन के साधनों का अधिक मात्रा में प्रयोग करते हुए अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करते हैं तो उसे वृहत् उद्योग कहा जाता है। इसमें अधिक पूँजी, कुशल श्रमिक, उच्च तकनीक एवं विद्युत चलित यंत्रों की आवश्यकता होती है। इस उद्योग के अन्तर्गत लोहा इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग, तांबा उद्योग, जूट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, कागज उद्योग आदि शामिल हैं। आइए, हम इस पाठ में वृहत् उद्योग के अन्तर्गत आने वाले सीमेंट उद्योग के बारे में पढ़ेंगे।

सीमेंट उद्योगः–

आधारभूत उद्योगों में सीमेंट उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग है। इस उद्योग की स्थापना के लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल के रूप में चूना पत्थर व कोयले की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही बड़ी मात्रा में पूँजी भी आवश्यक है। सीमेंट को मानव निर्मित पत्थर कहते हैं। यह शुष्क होने पर पत्थर की भांति कठोर हो जाता है। सीमेंट भारी पदार्थ होने के साथ–साथ नमी के प्रभाव से शीघ्र ही अनुपयोगी हो जाता है। अतएव इसके लिए द्रुतगामी परिवहन साधन एवं बाजार का निकट होना आवश्यक है। कारखाने में काम करने हेतु बड़े पैमाने पर सस्ते एवं कुशल श्रमिक तथा प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

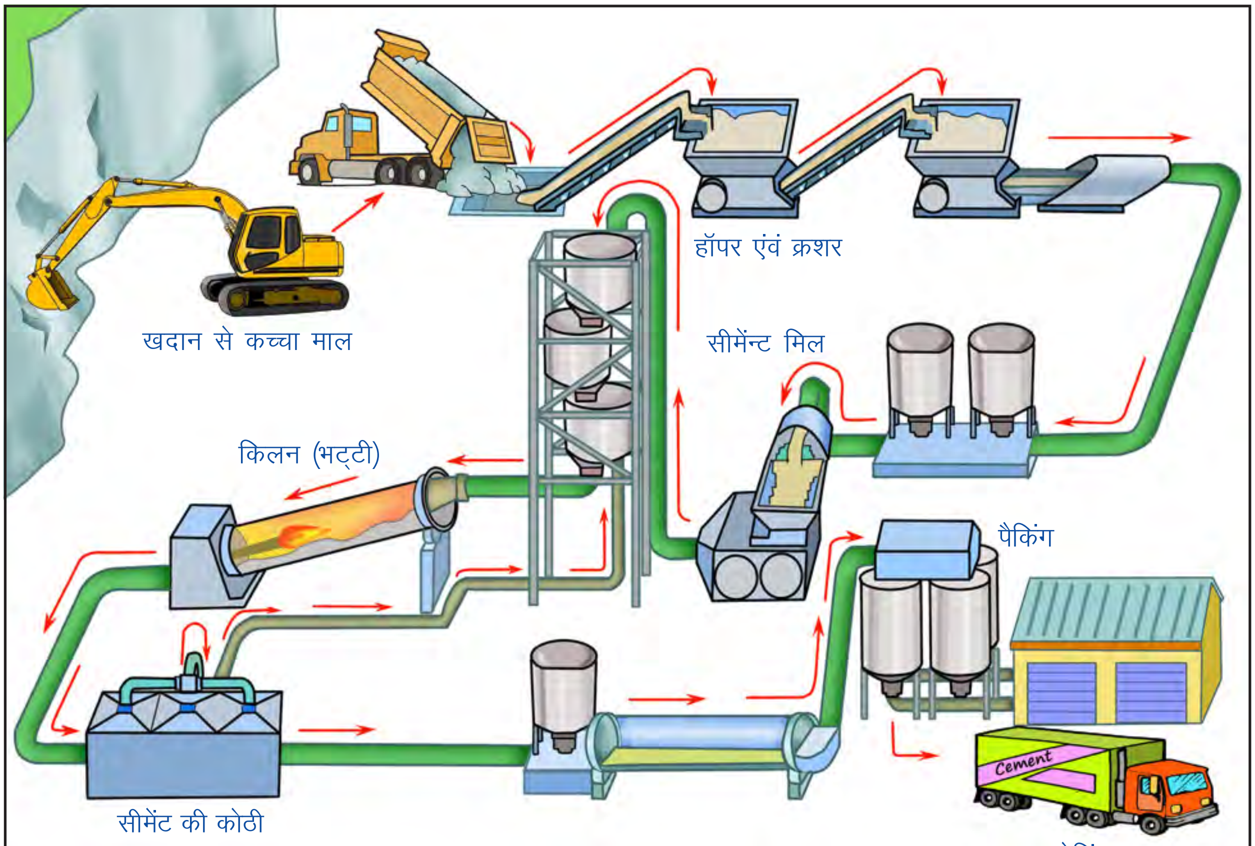

चित्र – 5.5 सीमेंट बनाने की पूर्ण प्रक्रिया

समस्त प्रकार के निमार्ण कार्य जैसे – आवासीय गृह, भवन, पुल, सड़क, रेल्वे स्लीपर, नहरें, बाँध, विद्युत योजनाओं आदि में इसका प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। वर्तमान में चीन, जापान एवं अमेरिका के पश्चात् भारत विश्व का चौथा बड़ा सीमेंट उत्पादक देश है।

चित्र–5.6 सीमेंट का कारखाना

राज्य के प्रमुख सीमेंट कारखाने निम्नलिखित हैं – सेन्चुरी सीमेंट–बैकुण्ठपुर (रामपुर), जे.के. सीमेंट लिमिटेड तिल्दा नेवरा रायपुर, लाफार्ज सीमेंट जांजगीर, मोदी सीमेंट रायगढ़ जय बंजरग सीमेंट बस्तर, ऐसोसिएटेड सीमेंट कम्पनी लिमिटेड जामुल दुर्ग आदि ।

कारखाने से होने वाले प्रदूषण – प्रदूषण का अर्थ किसी वस्तु, पदार्थ या तत्व के प्राकृतिक गुणों का ह्रास होना है औद्योगिक विकास के फलस्वरूप हमारा जीवन सुखमय एवं आरामदायक हो गया है। वहीं उसके दुष्परिणाम भी सामने आए हैं। औद्योगिक गतिविधियों का सबसे बड़ा दुष्परिणाम पर्यावरण का ह्रास है। कारखानों से विशाल मात्रा में जहरीले गैसें निकलती हैं जो कि वायु को प्रदूषित करती हैं। ये कई प्रकार की बीमारियों के भी जन्मदाता हैं। इससे पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है।

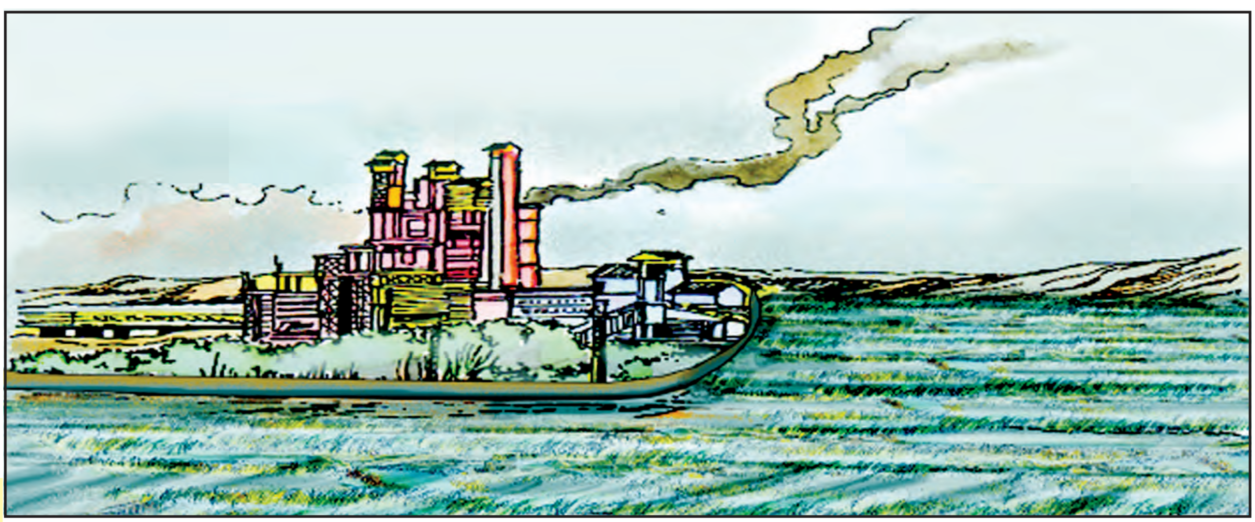

चित्र 5.7 कारखानों से प्रदूषण

पहले इन कारखानों के बाहर काफी प्रदूषण होता था। आसपास के गाँवों में सीमेंट की धूल पहुँचकर जमीन को खराब कर देती थी। इससे पास के गाँवों में रहनेवाले लोगों का स्वास्थ्य भी खराब हो जाता था। इस कारण गाँववालों ने आंदोलन किया और आवाज उठाई। तब सरकार ने प्रदूषण रोकने के लिए कड़े नियम बनाए। इस दबाब के कारण कारखानों में प्रदूषण को नियंत्रित करने की मशीनें लगाई गईं जो हमने इस कारखाने में भी देखी। इन मशीनों के लगने से इस समस्या का कुछ हद तक समाधान हुआ है। हालाँकि सरकार के इस प्रकार के नियम होने के बाद भी कई बड़े कारखानों में इस प्रकार की समस्याएँ बनी हुई हैं। खदानों में तो यह समस्या है जिससे खदानों के आसपास के गाँववाले परेशान हैं।

औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप विशाल पैमाने पर जंगल कटते जा रहे हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हुई है। कारखानों में चलने वाली विशालकाय मशीनों के शोर से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है। तीव्र शोर से मनुष्य में अनेक मानसिक एवं शारीरिक विकृतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। कारखानों से निकले कचरा एवं गंदा पानी को नदी नालों में बहा दिया जाता है। फलतः आज अधिकांश नदियों का जल प्रदूषित हो गया है। इनमें विद्यमान जीव जन्तु तेजी से नष्ट होते जा रहे हैं।

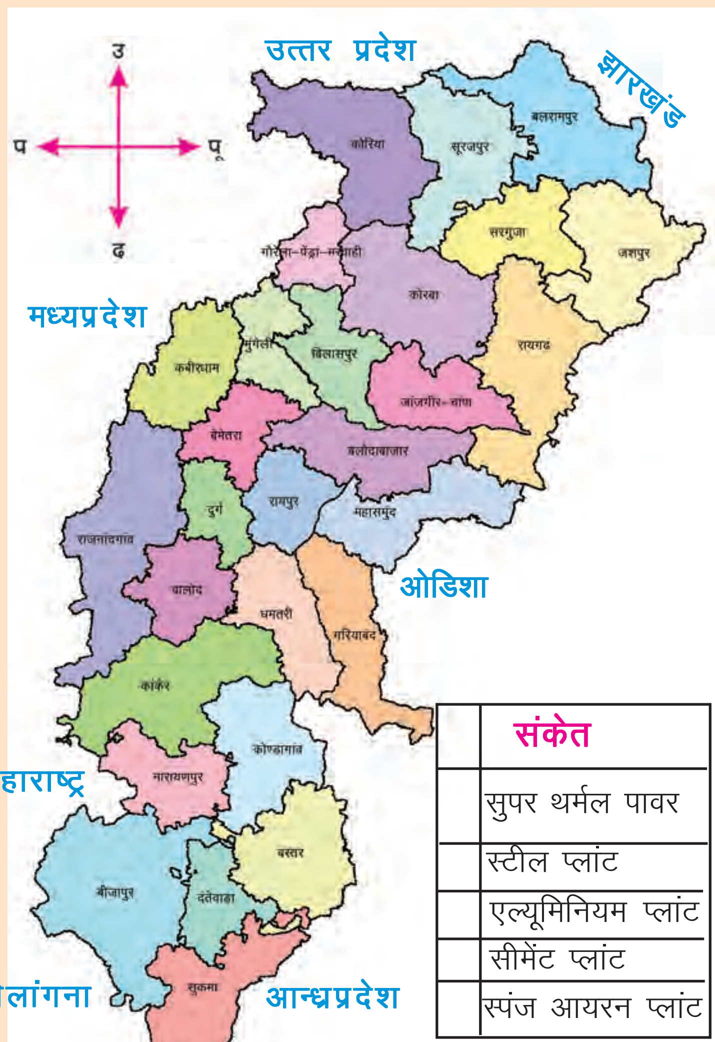

मानचित्र 5.1

प्रदूषण को दूर करने के उपाय –

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया जाना अनिवार्य है, हम न केवल पौधे लगायें, बल्कि बढ़ने तक उसकी देखभाल करें। वृक्षों की कटाई पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

कारखानों में चिमनियाँ ऊँची होनी चाहिए इनमें धुँआ छोड़ने वाले ईधनों का प्रयोग कम से कम किया जाना चाहिए। कारखानों में प्रयुक्त होने वाली मशीनों में ध्वनि अवरोधक लगाया जाना चाहिए।

औद्योगिक कचरों एवं गंदा पानी को नदियों, नालों में बहाने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। कारखानों को आबादी वाले क्षेत्रों से दूर स्थापित किया जाना चाहिए।

पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए जन–चेतना जागृत करना अनिवार्य है, इसके लिए जन साधारण को पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले खतरों एवं इनको दूर करने के उपायों से अवगत कराया जाना चाहिए ।

1. सीमेंट कारखानों से प्रदूषण रोकने के लिए गाँव वालों ने क्या किया?
2. कारखानों में प्रदूषण रोकने के लिए क्या–क्या उपाय किए जाने चाहिए? चर्चा करें।

प्रबंधन –

किसी भी कारखाने में उत्पादन से बाजार तक की पूरी प्रक्रिया के लिए प्रबंधन की आवश्यकता होती है प्रबंधन में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अलग–अलग कार्य किया जाता है। कारखाने के मालिक के द्वारा पूँजी लगायी जाती है जिसके द्वारा कच्चा माल खरीदना, मशीन लगाना उसके संचालन के लिए कर्मचारी की व्यवस्था, वस्तु बनने के बाद उसकी पेकिंग करना, वस्तुओं को थोक बाजार तक पहुँचाने के लिए परिवहन की व्यवस्था करना कारखाने के उत्पादन और बिक्री पर पूर्ण नियंत्रण करना प्रबंधन का कार्य होता है।

छत्तीसगढ़ के बड़े उद्योगों की सूची बनाइए–

क्र.	जिला	उद्योग
1		
2		
3		
4		
5		

यहाँ आकार आधारित उद्योग के उदाहरण दिए गए हैं। खाली स्थान में इसी प्रकार के उद्योगों के नाम लिखिए –

क्रमांक	आकार आधारित उद्योग	उदाहरण	उद्योगों के नाम
1.	कुटीर उद्योग (छोटे उद्योग)	मिट्टी का समान	(1) ....(2).......(3).......
2.	मध्यम उद्योग (लघु उद्योग)	कोसा, साबुन	(1) ....(2).......(3).......
3.	बड़े पैमाने का उद्योग (वृहद्/बड़े उद्योग)	सीमेंट ,लौहा	(1) ....(2).......(3).......

कच्चे माल के आधार पर उद्योगों के उदाहरण हैं। खाली स्थान पर इसी प्रकार के उद्योगों के नाम लिखिए

क्रमांक	कच्चा माल आधारित उद्योग	उदाहरण	उद्योगों के नाम
1.	वन आधारित		
	(अ) कृषि	औषधी, आचार	..................,................
	(ब) वनोपज	कागज, माचिस	..................,................
	(स) चारागाह	ऊन	..................,................
2.	खनिज आधारित	लोहा, ताँबा	..................,................

अभ्यास के प्रश्न

M6NN66

1. खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. बड़े–बड़े पत्थरों को दूसरे मशीनों में डालने का कार्य .... के द्वारा होता है।
2. छोटे–बड़े पत्थरों को पीसने का कार्य .... में होता है।
3 . जहाँ पत्थर पाउडर को पकाया जाता है, उसे .... कहते हैं।

2. केवल गलत वाक्यों को सुधारकर लिखें–

(क) सभी कारखानों के मजदूर 4–5 घंटों से ज्यादा काम नहीं करते हैं।

(ख) सीमेंट कारखाने का कच्चा माल दूसरे कारखानों से आता है।

(ग) सीमेंट कारखानों में अब प्रदूषण की समस्या कम हो गई।

3. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. शिक्षक की सहायता से नक्शे में दिखाए गए छत्तीसगढ़ के अन्य सीमेंट कारखानों की सूची बनाइए।
2. सीमेंट बनाने की प्रक्रिया को अपने शब्दों में लिखें।
3. दस्तकारों द्वारा घर पर उत्पादन करने और कारखाने में उत्पादन करने में क्या अंतर है ?
4. बड़े कारखानों में काम बाँटकर किया जाता है। क्या आपने सीमेंट कारखाने में यह बात देखी ?

परियोजना :–

1. सीमेंट की उपयोगिता संबंधित परियोजना कार्य कीजिए।
2. इसी तरह चावल बोरी का भी पता करें उसमें क्या लिखा होता हैं। उसका क्या अर्थ होता हैं और यह क्यों लिखा जाता है ?

6 सामान्य चेतना

मानव अधिकार

H6XJ7T

समाचार पत्र पढ़ते–पढ़ते सरोज की निगाहें एक समाचार पर अटक गईं– "मानव अधिकार दिवस पर आज अनेक कार्यक्रम" उसने दिनांक देखा, 10 दिसम्बर। उसने पूरा समाचार पढ़ा। किसी का भाषण था तो कहीं निबन्ध, कहानी या चित्रकला प्रतियोगिता। सरोज अपनी दीदी के पास पहुँची और उनसे मानव अधिकार के बारे में बताने को कहा। दीदी उसे बताने लगीं।

दुनिया में सभी लोगों को जन्म से ही कुछ अधिकार प्राप्त हैं जिन्हें आज हम मानव अधिकार कहते हैं। ये अधिकार सभी के हित और सुख–चैन के लिए होते है। जब हम एक–दूसरे के इन अधिकारों का ध्यान रखते हैं तो हर व्यक्ति सुख, शान्ति और खुशी का अनुभव करता है।

मानव अधिकार

	आवास सुरक्षा भोजन स्वास्थ्य विवाह एवं संतान अभिव्यक्ति, गरिमा उचित पारिश्रमिक अपने हितों की रक्षा शांति, लोकतंत्र	शिक्षा संस्कृति समानता स्वतंत्रता स्नेह एवं सद्भाव सामुदायिक सहभागिता नागरिकता/राष्ट्रीयता निष्पक्ष सुनवाई और बचाव	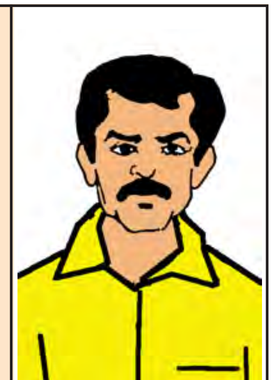

इन अधिकारों को ध्यान से देखें एवं समझें।

दिए गए चार्ट को ध्यान से पढ़िए। इसमें मानव अधिकार दिए गए हैं जो सभी के लिए समान हैं।

जरा सोचो, यदि तुम्हारे परिवार में ऐसा हो तो क्या हो –

1. सदस्य आपस में झगड़ते हों,
2. कोई सदस्य भूखा रहे और कोई भरपेट खाता हो,
3. कुछ सदस्य अस्वस्थ रहते हों,
4. आपस में बातचीत करने पर प्रतिबंध हो,
5. सदस्य अशिक्षित हों,
6. घर में सुविधाएँ न हों,
7. सदस्यों के साथ भेदभाव किया जाता हो,
8. सदस्य आपस में सहयोग न करते हों,
9. आपस में असुरक्षित अनुभव करते हों।

दीदी ने बताना जारी रखा– हमारी दुनिया भी एक विशाल परिवार है। इसमें रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति इस परिवार का सदस्य है। इसमें हर सदस्य को समान अधिकार प्राप्त हैं। चाहे वह किसी भी रंग, जाति, धर्म या देश का हो। चाहे स्त्री हो या पुरुष, अमीर हो या गरीब, बच्चा हो या बड़ा।

दीदी ने पूछा– बताओ ये बातें सत्य हैं या असत्य।

1. लड़कियाँ कमजोर और लड़के ताकतवर होते हैं इसलिए लड़कियों से लड़के श्रेष्ठ हैं।
2. गरीबों के बच्चों को अमीरों के बच्चों की तरह शिक्षा पाने का अधिकार नहीं है।
3. निर्धन को भी मकान चाहिए।
4. विश्व में शांति होनी चाहिए।
5. मालिक मनमाना वेतन दे सकता है।
6. सारी दुनिया के लोगों में प्रेम होना चाहिए।
7. बच्चों से नौकरों जैसे काम ले सकते हैं।
8. धर्म के नाम पर दंगा नहीं करना चाहिए।

सरोज ने भी दीदी की बातों के सही–सही उत्तर दिए। उसने दीदी को बताया कि समाचार पत्रों के कुछ समाचार उसे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। वह इन समाचारों की बात कर रही थी।

मासूम बच्चे की बलि चढ़ाई।

दो समूहों में भड़के दंगे में कई घायल।

पुलिस हिरासत में मौत।

आतंकवादियों के हमले में कई यात्री मरे।

दहेज लोभियों ने बहू को जलाया।

अबोध बालक का अपहरण, फिरौती की माँग।

जेल में कैदियों के साथ दुर्व्यवहार।

तीन मतदान केंद्रों पर जबरन कब्जा।

फोन पर गंदी बातें।

क्षेत्र में गुंडे का आतंक।

दीदी ने सरोज को बताया कि ये सभी मानव अधिकार के हनन के मामले हैं। इस प्रकार की घटनाओं से लोगों को अत्यधिक कष्ट होता है, यहाँ तक कि कई जानें भी चली जाती हैं।

सरोज से अब रहा न गया, उसने मुट्ठी भींचते हुए कहा – 'दीदी, क्या हम ऐसे गलत काम रोक नहीं सकते ?

दीदी ने कहा कि सारी दुनिया में ऐसी अमानवीय घटनाओं को रोकने के प्रयास हो रहे हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के भयंकर नरसंहार के बाद भविष्य में ऐसी घटनाएँ न होने देने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 दिसम्बर 1948 को मानव अधिकारों की सार्वजनिक घोषणा की। इसलिए इस दिन को अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस घोषणा की प्रस्तावना में सभी सदस्य देशों ने अपने इस संकल्प की घोषणा की है–

"वे अपनी आगे आनेवाली पीढ़ियों को युद्ध के दुष्कर परिणामों से बचाएँगे, मूलभूत मानव

अधिकारों में अपनी आस्था व्यक्त करेंगे और व्यापक स्वतंत्रता के लिए जीवन–स्तर में सुधार लाने के उद्देश्यों सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करेंगे।''

इस घोषणा पत्र में महिलाओं एवं पुरुषों के समान अधिकारों की बात कही गई है। इसमें यह साफ तौर पर कहा गया है कि –

''सभी व्यक्ति जन्म से स्वतंत्र हैं और अपनी गरिमा एवं अधिकारों के मामले में बराबर हैं। इन अधिकारों और स्वतंत्रता को प्राप्त करने में लोगों के बीच नस्ल, वर्ग, लिंग, भाषा, धर्म, राजनीति, उत्पत्ति, सम्पत्ति अथवा अन्य विचारधारा, राष्ट्रीयता अथवा सामाजिक उत्पत्ति, सम्पत्ति अथवा अन्य स्तरों के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।''

सन् 1976 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा लागू प्रतिज्ञा–पत्रों में जिन मानव अधिकारों को प्रोत्साहित एवं संरक्षित किया गया है, उनमें से प्रमुख हैं :–

न्यायपूर्ण एवं उचित परिस्थितियों में काम का अधिकार।

सामाजिक संरक्षण, उचित जीवन स्तर और शारीरिक एवं मानसिक सुख के लिए उपलब्ध किए जा सकने वाले उच्चतम स्तरों का अधिकार।

शिक्षा और सांस्कृतिक स्वतंत्रता एवं वैज्ञानिक प्रगति से मिले लाभों का उपभोग लेने का अधिकार।

सन् 1993 में विएना के मानव अधिकारों पर आयोजित विश्व सम्मेलन में 171 देशों ने आतंकवादी गतिविधियों को मानव अधिकारों पर 'चोट' स्वीकार किया। लोकतंत्र को एक मानव अधिकार माना।

सरोज ने दीदी से पूछा – 'दीदी, क्या हमें अपने अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के पास जाना पड़ता है ?

दीदी उसके भोलेपन पर मुस्कराईं और बोलीं– 'नहीं मेरी नन्हीं परी, हमारे देश में भी अक्टूबर, 1993 में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग और उसके बाद राज्यों में भी मानव अधिकार आयोग स्थापित हो चुके हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में भी 16 अप्रेल 2001 को मानव अधिकार आयोग का गठन किया गया है जिसका मुख्यालय रायपुर में है।

दीदी की बातें सरोज को बहुत अच्छी लगीं और उसने संकल्प लिया कि वह मानव अधिकारों के लिए अपने साथियों को भी जागृत करेगी।

बाल विवाह

गर्मी की छुट्टियों में बबलू अपने दादा–दादी के पास गाँव आया है। गाँव में उसकी दोस्ती पास में ही रहनेवाले एक लड़के रवि से हो गई। एक दिन वह शाम को रवि के घर गया और बोला, "कहीं से बाजा बजने की आवाज आ रही है।" चलो देखें, क्या हो रहा है। रवि बबलू से कहा "वहाँ चाचाजी भी गए हुए हैं। मंगलू

काका के यहाँ से निमंत्रण आया था। आज मंगलू काका की लड़की गीता की सगाई होने वाली है।" दोनों जल्दी ही मंगलू काका के घर पहुँच गए।

बबलू – रवि, गीता तो बहुत छोटी उम्र की लग रही है, अभी मुश्किल से 6वीं–7वीं में पढ़ती होगी।

रवि – हाँ, सातवीं कक्षा मे पढ़ रही है।

बबलू – तब तो उसकी उम्र 13–14 साल की होगी और इतनी छोटी उम्र में शादी क्यों कर रहे हैं?

(चाचाजी का प्रवेश)

चाचा जी – क्यों बबलू, रवि तुम दोनों यहाँ क्यों बैठे हो ?

बबलू – चाचा जी! हम यह जानना चाहते हैं कि गीता तो छोटी लग रही है, क्या इस उम्र में उसकी सगाई या शादी होनी चाहिए?

चाचा जी – नहीं। कम उम्र में शादी नहीं करनी चाहिए और कोई ऐसा करता है तो उस लड़की के माता–पिता को पुलिस पकड़कर सजा दिलवाती है।

रवि – पुलिस क्यों सजा दिलवाएगी? अरे भाई शादी विवाह माँ–बाप की मर्जी से होता है। इसमें भला पुलिस क्या कर सकती है ?

बबलू – हाँ, चाचा जी। आप भी तो यहीं आमंत्रित है, जानकारी प्राप्त कर समाधान निकालिए न।

चाचा जी – चलो मंगलू के पास चलकर चर्चा करते हैं।

कम उम्र में विवाह करना दंडनीय अपराध क्यों है? गाँवों में कम उम्र में विवाह होने के क्या कारण हैं? शिक्षक से चर्चा करें।

मंगलू काका – अरे बबलू बेटा, तुम शहर से कब आए? तुम्हारे माता–पिता सकुशल तो हैं?

बबलू – हाँ काका जी! मैं कल ही आया हूँ, घर में सभी कुशल हैं।

चाचा जी – हाँ भाई! मंगलू! आप यह तो बताइए कि गीता की शादी इतनी छोटी उम्र में क्यों कर रहे हैं।

मंगलू काका – मेरी भी शादी तो बचपन में हुई थी; अतः मैं भी अपनी बिटिया की शादी बचपन में ही करना चाहता हूँ। पास ही के गाँव में एक अच्छा रिश्ता मिल गया है। लड़का चार भाइयों में सबसे बड़ा है। मैं घर के काम–काज के लिए उसे अपने पास ही रखूँगा। वह मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा।

चाचा जी – क्या आप जानते हैं कि बाल–विवाह के क्या दुष्परिणाम होते हैं ?

मंगलू काका – मैं तो अनपढ़ हूँ, तुम पढ़े–लिखे हो, देश दुनिया देखे हो। बाल–विवाह से होनेवाले दुष्परिणामों को समझा सकते हो।

चाचा जी – आप तो अपने गाँव के गोबर्धन की बहू को जानते ही होंगे। गोबर्धन ने अपने लड़के की शादी छोटी उम्र में कर दी थी। उसकी बहू भी कम उम्र की थी। ससुराल में आने पर कम उम्र में ही पारिवारिक एवं घरेलू काम का बोझ अधिक हो गया जाने के कारण वह शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो गई । गोबर्धन अपनी बहू की बीमारी से हमेशा परेशान रहता है। इसीलिए कहता हूँ कि कभी भी बच्चों की शादी छोटी उम्र में नहीं करनी चाहिये। कम उम्र में शादी होने के कई और दुष्परिणाम होते हैं।

बाल विवाह से होने वाले दुष्परिणाम

1. आगे की पढ़ाई में रुकावटें आना ।
2. मानसिक विकास न हो पाना ।
3. शारीरिक परिपक्वता के पूर्व ही माँ बनने का बोझ उठाना।
4. शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होना। प्रसूति के समय माँ/शिशु की मृत्यु हो जाना।
5. अशिक्षा, बेरोजगारी के कारण गरीबी व कुंठा का शिकार होना।

मंगलू काका – तुमने मेरी आँखें खोल दी। मैं अपनी लड़की को इस मुसीबत में नहीं डालूँगा। आप ही बताइए कि बच्चों की शादी किस उम्र में करनी चाहिए।

चाचाजी – संविधान के अनुसार 18 वर्ष से अधिक उम्र की लड़की तथा 21 वर्ष से अधिक उम्र के लड़के ही विवाह योग्य माने गए हैं। इससे कम उम्र में विवाह करना दंडनीय अपराध है।

अब तो स्त्रियों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ कई समाज सेवी संगठन आवाज उठाने लगे हैं। महिलाओं की सुरक्षा, संरक्षण आदि की सुविधा जिला, तहसील एवं विकास खंड स्तर पर उपलब्ध करा रहे हैं। परंतु इन सभी सुविधाओं का लाभ तभी लिया जा सकता है जब लड़की पढ़ी–लिखी हो और वह अपने अधिकारों से भली–भाँति परिचित हो ।

1. बाल–विवाह एक सामाजिक बुराई है। इसे दूर करने के लिए आप क्या प्रयास करेंगे। शिक्षक से चर्चा करें।
2. वर्तमान समय में बालिका शिक्षा के विकास के लिए शासन द्वारा क्या–क्या प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें।

उसी समय मंगलू के नए रिस्तेदार आ गए। मंगलू ने हाथ जोड़ते हुए अपने रिश्तेदार से कहा, "मैं आपके यहाँ अपनी लड़की की शादी अभी नहीं कर सकता। जब मेरी लड़की पढ़–लिखकर बड़ी हो जाएगी और उसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो जाएगी तभी मैं अपनी लड़की की शादी आपके यहाँ करूँगा। नये रिश्तेदार भी मंगलू की बातों से सहमत हो गये।

रवि और बबलू चाचा जी के प्रयास से बहुत खुश हुए। गाँववालों ने भी उनके इस प्रयास की सराहना की तथा धन्यवाद दिया।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थान को भरिए –

1. विवाह के लिए लड़के को ——— वर्ष और लड़की को ——— वर्ष का होना अनिवार्य है।
2. कम उम्र में विवाह करना कानूनन ——— है।
3. बाल विवाह से ——— बेरोजगारी और कुंठा बढ़ती है।
4. संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 10 दिसम्बर सन् ———— को मानव अधिकारों की घोषणा की गई।

2. कॉलम 1 व 2 का सही मिलान कीजिए –

1		2
1. जीवन का अधिकार	–	1. दलित व्यक्ति को पूजा स्थल में प्रवेश।
2. स्वतंत्रता का अधिकार	–	2. पुलिस की हिरासत में मृत्यु।
3. समानता का अधिकार (स्थान पर)	–	3. बच्चों को स्कूल भेजना।
4. स्वास्थ्य का अधिकार देना	–	4. किसी व्यक्ति को राज्य से निकालना।
5. शिक्षा का अधिकार	–	5. बच्चों को पोलियो की खुराक न पिलाना।

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मानव अधिकार क्या है ?
2. कोई 5 मानव अधिकार लिखिए।
3. हमें दुनिया के किसी भी व्यक्ति से भेदभाव क्यों नहीं करना चाहिए ?
4. बाल अधिकार क्या–क्या हैं?
5. बाल विवाह किसे कहते हैं?
6. बाल विवाह के क्या–क्या दुष्परिणाम होते हैं?
7. लड़का और लड़की की शादी किस उम्र में करनी चाहिए ?
8. बालक एवं बालिका के साथ समान व्यवहार किया जाय इस पर एक परिवार के क्या–क्या कर्त्तव्य होनी चाहिए?
9. अपने मुहल्ले अथवा गाँवों में पता करें कि महिलाएँ कौन–कौन–से कार्य कर रही हैं जिसके कारण वे आत्मनिर्भर बनें?
10. आपका विवाह यदि कम उम्र में कर दिया जाय तो क्या होगा?

H77F9G

4. योग्यता विस्तार–

अगर आपकी बहन कक्षा–9 में पढ़ती है उसकी उम्र 15 वर्ष है। अगर उसकी शादी तय हो जाए तो आप क्या करेंगे।

7 समाज और महिलाओं की भूमिका

लड़का या लड़की होना किसी की भी एक महत्वपूर्ण पहचान और उनकी अस्मिता होती है। जिस समय में हम बड़े हो रहे होते हैं, हमें सिखाया जाता है कि लड़के तथा लड़कियों का कैसा व्यवहार स्वीकार करने योग्य है? उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं? हम प्रायः यही सोचते हुए बड़े होते हैं कि ये बातें सब जगह बिल्कुल एक –सी है। लेकिन क्या सभी समाजों में लड़के और लड़कियों के प्रति एक जैसा ही नजरिया है? इस अध्याय में हम इसी प्रश्न का उत्तर जानने की कोशिश करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि लड़के एवं लड़कियों को दी जाने वाली अलग – अलग भूमिका उन्हें भविष्य में स्त्री तथा पुरूष की भूमिका के लिए कैसे तैयार करती है।

H7GBB4

हम यह अहसास करते हैं कि समाज,लड़के एवं लड़कियों में स्पष्ट अंतर करता है। यह बहुत कम आयु से ही शुरू हो जाता है। उदाहरण के लिए –उन्हें खेलने के लिए भिन्न खिलौने दिए जाते हैं। प्रायः लड़कों को खेलने के लिए कारें तथा लड़कियों को गुड़िया दी जाती है। दोनों ही खिलौने,खेलने में बड़े आनंददायक हो सकते हैं, फिर लड़कियों को गुड़िया तथा लड़कों को कार ही क्यों दी जाती है ? खिलौने बच्चों को यह बताने का माध्यम बन जाते हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री एवं पुरूष बनेंगे, तो उनका भविष्य अलग–अलग होगा। अगर हम विचार करें तो यह अंतर प्रायः नित्य की छोटी–छोटी बातों में मानकर रखा जाता है। लड़कियों को धीमी आवाज में बात करनी चाहिए एवं लड़कों को रौब से–ये सब बच्चों को यह बताने के तरीके हैं कि जब वे बड़े होंगे तो उनकी विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी। बाद के जीवन में इसका प्रभाव हमारे अध्ययन के विषयों या व्यवसाय के चुनाव पर भी पड़ता है।

हमारे समाज में पुरूषों एवं महिलाओं की भूमिकाओं तथा उनके काम के महत्व को समान नहीं समझा जाता है। पुरूषों और महिलाओं की हैसियत एक जैसी नहीं होती है। आओ देखें कि पुरूषों एवं स्त्रियों के द्वारा किए जाने वाले कामों में यह असमानता कैसे है ?

इन्हें करके देखें –

• आप अपने पड़ोस की किसी गली या पार्क का चित्र बनाइए। उसमें छोटे बच्चों द्वारा की जा सकने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को दिखाइए। यह कार्य आप अकेले या समूह में भी कर सकते हैं।

• अब आपके द्वारा बनाए गए चित्र में लड़के और लड़कियों की संख्या की गणना कर यह बताइए कि आपने किस कारण इस प्रकार की संख्या रखा।

• आपके पड़ोस में,सड़क पर,पार्कों तथा बाजारों में देर शाम या रात के समय क्यों स्त्रियाँ एवं लड़कियाँ कम दिखाई देती हैं ?

• क्या लड़के एवं लड़कियाँ अलग– अलग कामों में लगे हैं ? विचार करके इसका कारण बताइए ? यदि आप लड़के एवं लड़कियों के स्थान परस्पर बदल देंगे,अर्थात् लड़कियों के स्थान पर लड़कों तथा लड़कों के स्थान पर लड़कियों को रखेंगे तो क्या होगा ?

घरेलू काम का मूल्य

सारी दुनिया में घर के काम की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं की ही होती है जैसे – बच्चों,बुजुर्गो एवं बीमारों की देखभाल करना, परिवार का ध्यान रखना । फिर भी, जैसा हमने देखा, घर के अंदर किए जाने वाले कार्यों को महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता है। ऐसा मान लिया जाता है कि वे तो महिलाओं के स्वाभाविक कार्य हैं, इसीलिए इन कार्यों के लिए उन्हें पैसा देने की कोई आवश्यकता नहीं है। समाज इन कार्यों को अधिक महत्व नहीं देता ।

घर में कार्य करने वालों का जीवन

बहुत –से घरों में विशेषकर शहरों एवं नगरों में लोगों को घरेलू काम के लिए रख लिया जाता है । वे बहुत काम करते हैं –झाड़ू लगाना, सफाई करना, कपड़े तथा बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना आदि। घर का काम करने वाली अधिकाशतः स्त्रियाँ होती हैं। कभी – कभी इन कार्यों को करने के लिए छोटे लड़के अथवा लड़कियों को काम पर रख लिया जाता है। घरेलू काम का अधिक महत्व नहीं है इसलिए इन्हें मजदूरी भी कम दी जाती है। घरेलू काम करने वालों का दिन सुबह पाँच बजे से प्रारम्भ होकर देर रात बारह बजे तक भी चलता है। जी–तोड़ मेहनत करने के बावजूद प्रायः उन्हें नौकरी पर रखने वाले उनसे सम्मानजनक व्यवहार नहीं करते हैं। दिल्ली में घरेलू काम करने वाली एक स्त्री ने अपने अनुभव के बारे में इस तरह बताया–

"मेरी पहली नौकरी एक अमीर परिवार में लगी थी जो तीन –मंजिल वाले भवन में रहता था। मेमसाहब में काम करने वालों के प्रति संवेदना नहीं थी। वह हर काम करवाने के लिए चिल्लाती रहती थी। मेरा काम रसोई का था। दूसरी दो लड़कियाँ सफाई का काम करती थीं।हमारा दिन सुबह पाँच बजे शुरू होता था। नाश्ते में हमें एक प्याला चाय तथा दो रूखी रोटियाँ मिलती थी। हमें तीसरी रोटी कभी नहीं मिली शाम के वक्त जब मैं खाना पकाती थी तो दोनों लड़कियाँ मुझसे एक और रोटी की मांग करती थीं।मैं चुपके से उन्हें एक–एक रोटी दे देती थी और स्वयं भी रोटी ले लेती थी। हमें दिनभर काम करने के बाद बड़ी भूख लगती थी। हमें घर में चप्पल पहनने पर पाबंदी थी, मुझे गुस्सा भी आता था और अपमानित भी महसूस होता था। क्या हम दिनभर काम नहीं करते थे ? क्या हम कुछ सम्मानजनक व्यवहार के हकदार नहीं थे ? "

वास्तव में जिसे हम घरेलू काम कहते हैं, उसमें अनेक कार्य शामिल रहते हैं। इनमें से कुछ कामों में अधिक शारीरिक श्रम लगता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महिलाओं एवं लड़कियों को दूर –दू से पानी लाना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और लड़कियों को जलाऊ लकड़ी के भारी गट्ठर सिर पर ढोने पड़ते हैं। कपड़े धोने ,सफाई करने ,झाड़ू लगाने तथा वजन उठाने के कामों में झुकने,उठाने और सामान लेकर चलने की जरूरत होती है। बहुत – से काम जैसे खाना बनाने आदि में लंबे समय तक गर्म चूल्हे के सामने खड़ा रहना पड़ता है। महिलाएँ जो काम करती हैं,वह शारीरिक, भारी एवं थकाने वाला काम होता है– जबकि हम आमतौर पर सोचते हैं कि पुरूष ही ऐसा काम कर सकते हैं।

1 जरा सोचिए ,अगर आपकी माँ अथवा वे लोग जो घर के काम में लगे हैं,एक दिन के लिए हड़ताल पर चले जाएँ,तो क्या होगा ?

2 लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि आमतौर पर पुरूष या लड़के घर का काम नहीं करते ? आपके विचार में क्या उन्हें घर का काम करना चाहिए ?हाँ तो क्यों और नही ंतो क्यों नहीं अपना तर्क दीजिए।

हम एक और उदाहरण लक्ष्मी का पढ़ते हैं जो माता– पिता के सहयोग से अपने अस्तित्व को सिद्ध करती है। आमतौर पर रेल का इंजन आदमी चलाते हैं। पर झारखंड के एक गरीब आदिवासी परिवार की 27 वर्षीय महिला जिसका नाम लक्ष्मी लकरा है ने इस धारा का रूख बदल दिया है। उत्तरी रेलवे की वह पहली महिला इंजन चालक बन गई है।

लक्ष्मी के माता – पिता पढ़े –लिखे नहीं हैं पर उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए बहुत संघर्ष किया । लक्ष्मी की शिक्षा एक सरकारी स्कूल में हुई । स्कूल में पढ़ने के साथ– साथ लक्ष्मी घर के कामों तथा अन्य जिम्मेदारियों में माता–पिता का हाथ बटाती थी। उसने मन लगाकर और मेहनत से पढ़ाई की तथा स्कूल की पढ़ाई पूरी करके इलैक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा अर्जित किया । फिर वह रेलवे बोर्ड की परीक्षा दी और पहली ही कोशिश में उत्तीर्ण हो गई।

लक्ष्मी कहती है "मुझे चुनौतियों से खेलना बहुत पसंद है और जैसे ही कोई यह कहता है कि अमुक काम लड़कियों के लिए नहीं है,मैं उसे करके रहती हूँ।" लक्ष्मी के जीवन में ऐसा करने के अनेक अवसर आए। एक अवसर तब आया जब वह इलैक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा करना चाहती थी, फिर उसने पॉलीटेक्नीक कॉलेज में मोटर साइकिल चलाई और तब उसने तय किया कि वह इंजन ड्राइवर बनेगी। इसी प्रकार हमारे छत्तीसगढ़ की महिलाएँ भी विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही हैं जैसे –

मनीषा ठाकुर सहायक पुलिस महानिरीक्षक, बस्तर में महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा के लिए काम कर रही है। यंग सांइटिंस्ट अवार्ड द्वारा सम्मानित पूजा अग्निहोत्री,(प्राध्यापक) इंजीनियरिंग कॉलेज –डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन (DRDO) वर्तमान में साइंस के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। लीना यदु, रायपुर की पहली महिला रेसलर एवं कोच।

इन्होंने इन्टरनेशनल टीम का प्रतिनिधित्व किया है। इन्हें छत्तीसगढ़ की पहली दंगल गर्ल कहा जाता है। हिना यास्मीन खान, जिला अभियोजन अधिकारी, पति की नक्सली हमले में शहीद होने के बाद विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए अपने पद के साथ बखूबी न्याय कर रही है। मोना सेन, छत्तीसगढ़ फिल्म अभिनेत्री, मिनी माता सम्मान से सम्मानित, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की ब्रांड एम्बेस्डर रही। वह अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका जीवन संवार रही है। तीजन बाई पंडवानी गायिका, बी.एस.पी (भिलाई इस्पात कारखाना) से सेवा निवृत (मुक्त) होने के बाद बच्चों को पंडवानी गायिकी की कला सिखा रही है और इस दौड़ में देश– विदेश में जाकर अपने देश का नाम रोशन किया है।

चित्र–7.1 तीजन बाई (पंडवानी गायिका)

महिलाओं का काम और समानता

जैसा कि हमने अध्ययन किया, महिलाओं के घरेलू एवं देखभाल के कामों को कम महत्व देना एक व्यक्ति या परिवार का मामला नहीं है। यह महिलाओं एवं पुरूषों के बीच असमानता की एक बड़ी सामाजिक व्यवस्था का ही भाग है। इसलिए इसके समाधान हेतु जो कार्य किए जाते हैं वे केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर नहीं, वरन् शासकीय स्तर पर भी होने चाहिए । हम जानते हैं कि समानता हमारे संविधान का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। संविधान स्पष्ट कहता है कि स्त्री या पुरूष होने के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। परंतु वास्तविकता में लिंगभेद किया जाता है। सरकार इसके कारणों को समझने के लिए तथा इस स्थिति का सकारात्मक निदान ढूंढ़ने के लिए वचनबद्ध है। उदाहरण के लिए,सरकार को यह मालूम है कि बच्चों की देखभाल तथा घर के काम का बोझ महिलाओं पर पड़ता है। स्वाभाविक रूप से इसका असर लड़कियों के स्कूल जाने पर भी पड़ता है। इससे ही यह तय होता है कि क्या महिलाएँ घर के बाहर काम कर सकेंगी और यदि करेंगी तो किस प्रकार का काम या कार्यक्षेत्र चुनेंगी। पूरे देश के कई गाँवों में शासन ने आँगनबाड़ियाँ तथा बालवाड़ियाँ खोली हैं।

चित्र–7.2

यह पोस्टर (चित्र–7.2) बंगाल की महिलाओं के समूह ने बनाया है। इसे आधार बनाकर आप कोई एक अच्छा–सा नारा तैयार कीजिए।

परिवर्तन के लिए सीखना

स्कूल जाना आपके जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है । जैसे –जैसे स्कूलों में प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक संख्या में बच्चे प्रवेश ले रहे हैं, हम सोचने लगे हैं कि सभी बच्चों के लिए स्कूल जाना एक साधारण बात है । आज हमारे लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि कुछ बच्चों के लिए स्कूल जाना और पढ़ना पहुँच के बाहर की बात या अनुचित बात भी मानी जा सकती है,परंतु अतीत में लिखना तथा पढ़ना कुछ लोग ही जानते थे। अधिकांश बच्चे वही काम सीखते थे जो उनके परिवार में होता था या उनके बुजुर्ग करते थे। लड़कियों की स्थिति तो और भी खराब थी।उन समाजों में जहाँ लड़कों को पढ़ना –लिखना सिखाया जाता था, लड़कियों को एक अक्षर तक सीखने की अनुमति नहीं थी। यहाँ तक कि उन परिवारों में भी जहाँ कुम्हारी ,बुनकरी (वस्त्र बुनना) तथा हस्तकला सिखाई जाती थी,यह धारणा थी कि लड़कियों और औरतों का काम केवल सहायता करने तक ही सीमित है। उदाहरण के लिए – कुम्हार के व्यवसाय में महिलाएँ मिट्टी एकत्र करती थीं। तथा बर्तन बनाने के लिए उसे तैयार करती थीं। चूँकि वे चाक नहीं चलाती थीं, इसलिए उन्हें कुम्हार नहीं माना जाता था। समाज के बहुत विरोध के बावजूद लड़कियों की शिक्षा के लिए बहुत सी महिलाओं तथा पुरूषों ने लड़कियों के लिए स्कूल खोलने का प्रयत्न किया । महिलाओं ने पढ़ना लिखना सीखने के लिए संघर्ष किया ।

महिला आंदोलन

वर्तमान में महिलाओं एवं लड़कियों को पढ़ने तथा स्कूल जाने का अधिकार है। अन्य क्षेत्र भी हैं जैसे कानून में सुधार, हिंसा और स्वास्थ्य जहाँ लड़कियों एवं महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है। ये परिर्वतन अपने–आप नहीं आए हैं। औरतों ने व्यक्तिगत स्तर पर और आपस में मिलकर इन परिवर्तनों के लिए संघर्ष किए हैं। इन संघर्षों को महिला आंदोलन कहा जाता है। देश के विभिन्न भागों से कई महिलाएँ तथा कई महिला संगठन इस आंदोलन के हिस्से हैं। कई पुरूष भी महिला आंदोलन का समर्थन करते हैं। इस आंदोलन में जुटे लोगों की मेहनत, निष्ठा तथा उनकी विशेषताएँ इसे एक बहुत ही जीवंत आंदोलन बनाती हैं। इसमें चेतना जागृत करने, भेदभावों का मुकाबला करने तथा न्याय हासिल करने

चित्र–7.3 महिलाओं का काम और समानता

के लिए भिन्न –भिन्न रणनीतियों का उपयोग किया गया है। इनकी कुछ झलकियाँ आप यहाँ भी देख सकते हैं।

अभियान

भेदभाव तथा हिंसा के विरोध में अभियान चलाना महिला आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अभियानों के फलस्वरूप नए कानून भी बने हैं।सन् 2006 में एक कानून बनाया गया है जिससे घर के अंदर शारीरिक तथा मानसिक हिंसा से पीड़ित महिलाओं को कानूनी सुरक्षा दी जा सके।

इसी प्रकार महिला आंदोलन के अभियानों के कारण 1997 में सर्वोच्च न्यायालय ने कार्य के स्थान पर और शैक्षणिक संस्थानों में महिलाओं के साथ होने वाली यौन प्रताड़ना से उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए विशाखा कमेटी गठित किए जाने के दिशा निर्देश जारी किए हैं। दहेज से संबंधित कानून, बालिकाओं के लिए 1090/1091/01123219750 (केन्द्र सरकार) टोल फ्री नंबर दिया है जिससे उन्हें कभी भी सुरक्षा उपलब्ध कराई जा सके।

जागरूकता बढ़ाना

महिला आंदोलन का एक प्रमुख कार्य महिलाओं के अधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाना भी है। गीतों,नुक्कड़– नाटकों एवं जनसभाओं के माध्यम से वे अपने संदेश लोगों के बीच पहुँचाते हैं।

विरोध करना

जब कभी भी महिलाओं के हितों का उल्लंघन होता है जैसे किसी कानून अथवा नीति द्वारा तो महिला आंदोलन ऐसे उल्लंघनों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए रैलियाँ,प्रदर्शन आदि बहुत असरकारक तरीके अपनाते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. नीचे दिए गए कुछ कथनों पर विचार कीजिए और बताइए कि ये सत्य है या असत्य? अपने उत्तर के समर्थन में एक उदाहरण दीजिए।

M7Q7CR

(क) सभी समुदाय या समाजों में लड़कों तथा लड़कियों की भूमिकाओं के बारे में एक जैसे विचार नहीं पाए जाते।

(ख) हमारा समाज बढ़ते हुए लड़के तथा लड़कियों में कोई भेद नहीं करता।

(ग) वे महिलाएँ जो घर पर रहती हैं कोई काम नहीं करतीं।

(ध) महिलाओं के काम पुरुषों के काम की तुलना में कम मूल्यावान समझे जाते हैं।

2. ऐसे विशेष खिलौनों की सूची बनाइए जिनसे लड़के खेलते हैं और ऐसे विशेष खिलौनों की भी सूची बनाइए जिनसे केवल लड़कियाँ खेलती हैं। यदि दोनों सूचियों में कुछ अन्तर है तो सोचिए और बताइए कि ऐसा क्यों है? सोचिए कि क्या इसका कुछ संबंध इस बात से है कि आगे चलकर वयस्क के रूप में बच्चों को क्या भूमिका निभानी होगी ?

3. आपके क्षेत्र में रहने वाली किसी महिला से बातचीत कर उनसे यह जानने की कोशिश कीजिए कि उनके घर में और कौन–कौन रहते हैं?वे क्या करते हैं? वे रोज कितने घंटे काम करती हैं और कितना कमा लेती हैं? इन विवरणों के आधार पर एक छोटी सी कहानी लिखिए।

गतिविधि

1.शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित भारतीय महिलाओं की सूची बनाइए :–

(क) प्रसिद्ध वैज्ञानिक (ख) प्रसिद्ध समाज सेवी (ग) प्रसिद्ध नृत्यांगना

(घ) प्रसिद्ध गायिका (ङ) प्रसिद्ध खिलाड़ी

2. भारत में पदस्थापित रहीं निम्नलिखित महिलाओं के नाम शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से लिखिए :–

(क) मुख्यमंत्री (ख) राज्यपाल (ग) प्रधानमंत्री (घ) राष्ट्रपति

(ङ) सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश (च) लोकसभा अध्यक्ष

3. अपने क्षेत्र में प्रमुख पद पर कार्यरत महिलाओं की सूची बनाइए।

4. सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से एकत्र कीजिए।

8 मीडिया और विज्ञापन

आप सभी रेडियो, टी.वी., समाचार पत्रों पर बहुत से समाचार सुनते पढ़ते होंगे? बारिश में गर्मी में ठंडी में हमें क्या खाना चाहिए क्या पहनना चााहिए ,कैसे स्वस्थ रहें? आदि के बारे में जो रेडियो या टी.वी. को अपने जीवन में शामिल कर लेते हैं उन्हें रेडियो या टी.वी. नितान्त चालू चाहिए होता है। आपको भी रेडियो या टेलीविजन पर कोई कार्यक्रम अच्छा लगता होगा। क्या कभी आपके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि कैसे हमें घर बैठे ही विश्व की खबरों को देखने, सुनने और पढ़ने मिल जाता है? किसी भी संदेश को हम तुरंत विश्व के किसी भी कोने में तुरंत कैसे भेजते हैं ? आप इन सब प्रश्नों के उत्तर खोजिए और मीडिया क्या है, इसे जानिए –

रेडियो,टेलीविजन,अखबार,इंटरनेट और संचार के अन्य साधनों को सामूहिक रूप से मीडिया (संचार माध्यम) कहा जाता है। इन सब को मॉस मीडिया भी कहते हैं।

संचार माध्यम (मीडिया) के रूप

संचार माध्यम (मीडिया) के रूप

- मुद्रण माध्यम: समाचार पत्र–पत्रिकाएँ पुस्तक एवं जर्नल आदि
- वार्तालाप माध्यम: टेलीफोन, मोबाईल फोन, वीडियो फोन आदि
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम: फिल्म, रेडियो,दूरदर्शन ऑडियो–वीडियो कैसेट डिस्क आदि।

चित्र समूह–8.1

प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र)

समाचार पत्रों की शुरूआत कोलकाता में हुई जो कुछ निश्चित क्षेत्रों तक ही सीमित था। समय के साथ –साथ छपाई कला में दक्षता आई और छपाई के बहुत से मशीन आ गए जो रंगीन प्रिंट भी देने लगे हैं। प्रायः शहरों में देखते हैं चाहे बारिश भरी रात हो या ठंड से भरी सुबह हो उनकी सुबह (दिनचर्या) की शुरूआत समाचार पत्रों की बहुत सारी जानकारी के साथ होती है। समाचार पत्रों में केवल सूचनाएँ ही नहीं बल्कि खेल, मनोरंजन, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य, धर्म, हॉलीवुड, वॉलीवुड की खबरें भी होती हैं। विभिन्न विज्ञापनों का समावेश भी समाचार पत्रों में होता है।

शिक्षक की सहायता से उत्तर दीजिए –

(1) भारत का पहला समाचार पत्र कब और कहाँ से प्रारंभ हुआ और किसने किया ?

(2) छत्तीसगढ़ का पहला समाचार पत्र कौन सा है?

(3) पहला हिन्दी समाचार पत्र कौन सा था?

(4) आपके क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित समाचार पत्रों के नाम लिखिए ?

(5) क्या आपके क्षेत्र में कोई अंग्रेजी समाचार पत्र आता है यदि हाँ तो उसका नाम लिखिए?

(6) समाचार पत्र पढ़ने से हमारे किन– किन कौशलों (दक्षताओं) का विकास होता है?

(7) समाचार पत्र का कौन– सा हिस्सा आपको पढ़ने में अच्छा लगता है?

रेडियो :–

रेडियो का उपयोग खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलता है।यह प्रायः लोगों के मनोरंजन का साधन होता है। लोग गाना सुनते हैं,बच्चों एवं कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए भी रेडियो सुनते हैं। आज से लगभग 50वर्ष पूर्व लोग रेडियो बड़े चाव से सुनते थे जिसे आप पुरानी फिल्मों में देख सकते हैं। आज भी लोग प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने के लिए रेडियो को अपने जीवन का हिस्सा बनाए हुए हैं। विविध भारती, ऑल इंडिया रेडियो, एफ.एम आदि आकाशवाणी केन्द्र प्रचलित हैं। क्षेत्रीय बैण्ड इन्हीं आकाशवाणी केन्द्रों का अंग है इसके माध्यम से जिन बोलियों की लिपि नहीं है ऐसी बोलियों के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

1. रेडियो के मोनो को देखकर उस पर लिखे हुए नारा को बताइए और हिन्दी में अर्थ समझाइए ?
2. आपको रेडियो में प्रसारित होने वाले कौन – कौन से कार्यक्रम पंसद है और क्यों?
3. क्या रेडियो हमारे लिए आवश्यक है ?
4. रेडियो में प्रत्येक स्थान पर एक ही जैसा कार्यक्रम क्यों आता है ? शिक्षक की सहायता से पता करें।
5. हम रेडियो के द्वारा किस प्रकार मनोरंजन करते हैं?
6. रेडियो के द्वारा किस –किस प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है? माता–पिता या किसी अन्य की सहायता से जानकारी प्राप्त करें।

टेलीविजन :—

कुछ वर्षों पहले टेलीविजन का मतलब सिर्फ मनोरंजन हुआ करता था। बच्चे हों या बड़े सबको रविवार का इंतजार रहता था। रंगोली, जंगल बुक चंद्रकांता, रामायाण, महाभारत, शक्तिमान आदि कार्यकक्रम का आनंद लेने लोग टी.वी के सामने समय से पहले ही बैठे रहते थे। कुछ घरों में तो टॉकीज जैसा नजारा होता था। पूरे मुहल्ले के लोग इकटठा होकर टी.वी देखते थे। आप अपने दादा–दादी माता–पिता से पूछिए उन्हें किस तरह फिल्म का इंतजार हुआ करता था। चित्र स्पष्ट न आने पर एंटीना को इधर उधर घुमाते रहते और मूक बधिर समाचारों का नकल करते रहते थे। आज सभी के लिए अलग–अलग चैनल है जैसे फिल्म,धार्मिक चैनल, बच्चों का चैनल आदि। समाचार तो 24 घंटे चलता रहता है। लोग अपनी पसंद और स्वयं के लिए उपयोगी चैनल का उपयोग करते हैं। दूरदर्शन में चलित चित्र को देख सकते हैं और आवाज को सुन सकते हैं।

1. अपने माता–पिता से पूछिए उनके समय और आज के टीवी के महत्व में क्या अंतर है।
2. टेलीविजन का कौन सा कार्यक्रम अच्छा लगता है और क्यों ?
3. टेलीविजन के बिना हमारा जीवन कैसा होगा ?
4. रेडियो और टेलीविजन में क्या समानता और अन्तर है?

इसी प्रकार और भी कई मीडिया है उनके विषय में आप अपने शिक्षक से चर्चा करें।

मीडिया का महत्व :—

मीडिया आज समाज निर्माण व पुनर्निर्माण का कार्य कर रहा है। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं। लोग मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए इसका उपयोग लोक परिवर्तन के लिए करते रहे हैं। जब हम अंग्रेजों के गुलाम थे मीडिया ने ही हममें देशभक्ति व उत्साह भरने का कार्य किया था। मीडिया जन जागरूकता लाने का कार्य करता है जैसे आपने देखा है जब भी पोलियों की दवा पिलाने के लिए अभियान हो, एड्स के प्रति जागरूकता लाना हो,लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करना हो, बाल मजदूरी को रोकने का प्रयास करना हो, धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना हो चाहे देश के भ्रष्टाचारियों पर कड़ी नजर रखना हो तो मीड़िया के सभी माध्यम सक्रिय हो जाते हैं। आपने यह तो टी.वी. पर जरूर देखा होगा कि आपकी सुरक्षा के लिए रेल्वे फाटक बंद रहने पर पार न करने की सलाह दी जाती है। हेलमेट का उपयोग करने के लिए कितना अच्छा कहा जाता है "आपका सिर आपकी मर्जी।"

1. मीडिया के अच्छे एवं खराब प्रभाव के बारे में शिक्षक की सहायता से लिखिए ।
2. देश– विदेश की विभिन्न सूचनाएँ किन – किन माध्यमों से प्राप्त होती है ? उन माध्यमों की सूची बनाइए ।

जनसंपर्क :—

जनसंपर्क का सीधा अर्थ है "जनता से संपर्क रखना।" जनसंपर्क एक प्रक्रिया है जो किसी

निश्चित उद्देश्य से व्यक्ति या वस्तु की छबि, महत्व एवं विश्वास को समूह अथवा समाज में स्थापित करने में सहायक होती है। जनसंचार के विभिन्न उपकरणों के माध्यम से समाज या समूह से जीवन्त संबंध बनाने में यह सेतु का कार्य करती है। जनसंपर्क,संचार और संप्रेषण का एक पहलू है जिसमें किसी व्यक्ति या संगठन तथा इस क्षेत्र से संबंधित लोगों के बीच संपर्क स्थापित किया जाता है। इस प्रकार यह सेवा लेने वालों तथा देने वालों के बीच एक सेतु का काम करता है। यह एक द्विपक्षीय कार्यवाही है,जिसमें सूचनाओं तथा विचारों का आदान – प्रदान होता है।

केन्द्र तथा राज्य सरकारों की योजनाओं और उपलब्धियों को प्रसारित करने के लिए जनसंपर्क विभाग स्थापित किया जाता है। छत्तीसगढ़ में जनसंपर्क का मुख्य कार्यालय रायपुर में है और सुविधा के लिए प्रत्येक जिले में जनसंपर्क कार्यालय खोला गया है। किसी भी संगठन या किसी संस्था का जनता के साथ जो संबंध बनता है, उसे जनसंपर्क कहते हैं।

विज्ञापन :–

विज्ञापन लोगों का ध्यान आकर्षित करने का एक तरीका है। आज हम चारों ओर अपने आपको विज्ञापनों से घिरा हुआ पाते हैं। हम इन्हें टेलीविजन पर देखते हैं,रेडियो पर सुनते हैं सडकों पर देखते हैं तथा समाचार पत्र और पत्रिकाओं में पढ़ते हैं। यहाँ तक कि टैक्सियों और रिक्शों पर भी विज्ञापन दिखाई पड़ता है। टेलीविजन ,रेडियो, थिएटर में बीच–बीच में विज्ञापन आते रहते हैं।

आखिर विज्ञापन क्यों करते हैं ? किस तरह हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं ?

किसी उत्पाद या सेवा को बेचने के उद्देश्य से किया जाने वाला जनसंचार विज्ञापन कहलाता है।

इनमें हमें दृश्य और श्रव्य सूचना इस प्रकार दी जाती है कि विज्ञापन करने वाले की इच्छा के प्रति हम अपनी सहमति दें। विज्ञापन वस्तुओं को ऐसे लोगों तक पहुँचाने का कार्य करता है जो यह मान चुके होते हैं कि उन वस्तुओं की उसे कोई जरूरत नहीं है। किसी भी तथ्य को यदि बार–बार लगातार दोहराया जाए तो वह सत्य प्रतीत होने लगता है। विज्ञापन यही कार्य करता है। टेलीविजन का विज्ञापन सबसे अधिक प्रभावी है। जब आप अपना पंसदीदा कार्यक्रम देख रहे हों और इस समय विज्ञापनों को दिखाया जाए तो आप जरूर देखते हैं और उस पर विचार करते हैं।

विज्ञापन लोगों की निजी भावनाओं को पुकारता है। इसीलिए कई बार जब लोग उस विज्ञापित वस्तु को नहीं खरीद पाते हैं तब उन्हें बुरा लगता है। विज्ञापन उत्पादों को बेचने के अलावा यह भी बताते हैं कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए, हमारी महत्वाकांक्षाएँ तथा स्वप्न कैसे हों, हम अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कैसे करें और चुस्त,सफल और सुन्दर होने का तात्पर्य क्या है? लोकतंत्रीय समाज का नागरिक होने के कारण हमें अपने जीवन पर विज्ञापनों से पड़ने वाले सशक्त प्रभाव के बारे में सजग रहना जरूरी है। विज्ञापन क्या करते हैं? इसके बारे में तर्कों के साथ सोचने के पश्चात हम बेहतर निर्णय ले सकेंगे कि हमें अमुक वस्तु खरीदनी है या नहीं।

चित्र –1

चित्र–2

चित्र –3

चित्र समूह–8.2

चित्र 1 का विज्ञापन आपसे क्या बोलता है ?

चित्र 2 के विज्ञापन से आप क्या सीखते है?

चित्र 3 विज्ञापन से आपको क्या सीख मिलती है?

विज्ञापन की रचना–प्रक्रिया

किसी भी व्यापारी के दिमाग में यह स्पष्ट होता है कि उसकी वस्तु का उपयोग कौन करेगा? इसलिए वह उसके अनुसार विज्ञापन की भाषा, चित्र एवं अखबार और ,पत्रिकाओं को चुनता है। विज्ञापनों द्वारा हमारी सोच को बीमार कर दिया जाता है और हम उनकी ओर स्वयं को बचे हुए पाते हैं। मुँह धोने के लिए हजारों किस्म के साबुन और फेसवॉश मिल जाएँगे। मुख की चमक को बनाए रखने के लिए हजारों प्रकार के क्रीम विज्ञापनों द्वारा हमें यह विश्वास दिला दिया जाता है कि यह क्रीम हमें जवान और सुंदर बना देगा। रंग यदि काला है तो वह गोरा हो जाएगा। इन विज्ञापनों में सत्यता लाने के लए बड़े–बड़े खिलाड़ियों और फिल्मी कलाकारों को लिया जाता है। हम इन कलकारों की बातों को सच मानकर अपना पैसा पानी की तरह बहाते हैं। विज्ञापनों में जो दिखाया जाता है वह शत–प्रतिशत सही नहीं होता है।

यदि किसी कामकाजी महिलाओं के लिए कोई विज्ञापन तैयार करना हो तो यह ध्यान रखा जाता है कि व निम्न/मध्य/उच्च वर्ग की है। उनकी शैक्षनिक स्तर साधारण या उच्च है। यदि वस्तु की खरीददार मध्यम श्रेणी की महिलाएँ हैं तो विज्ञापन कुछ इस तरह होगा जिसका था आपको इंतजार............. एक क्रीम जो आपकी त्वाचा को बनाए चमकदार.......आपके पति आपको देखते रह जाए.................।

इसी प्रकार निम्न आय वर्ग की खरीददार हो तो

ये क्रीम सस्ती और श्रेष्ठ है, इसीलिए तो राधा, सरिता, बंसती भी इसे इस्तेमाल करती है।

1. विज्ञापन की उक्त दोनों रचना में किन–किन बातों को ध्यान रखा गया है ।
2. दोनों विज्ञापन में छिपी भावनाओं को शिक्षक की सहायता से समझें जिससे महिलाएँ प्रभावित होकर उक्त क्रीम खरीदने को तैयार होगी।
3. विज्ञापन से हमें सावधान क्यों रहना चाहिए।
4. क्या विज्ञापन किसी वस्तु के विक्रय के लिए आवश्यक है।

गतिविधि :–

1. विभिन्न समाचार पत्रों में छपे विज्ञापनों को एकत्र कर उनमें दिए संदेशों को लिखिए।
2. समाचार पत्रों से सरकार की विभिन्न योजनाओं के विज्ञापनों की कतरनें चार्ट पर चिपकाएँ शिक्षक से उन योजनाओं के लाभ पर चर्चा कीजिए।
3. सड़क सुरक्षा पर विज्ञापन तैयार करें। (शिक्षक की सहायता से)

स्वच्छ भारत अभियान

चित्र समूह–8.3

02 अक्टूबर 2014 गाँधी जयंती के दिन हमारे प्रधानमंत्री ने "भारत छोड़ो आंदोलन" के तर्ज पर स्वच्छ भारत अभियान (क्लीन इंडिया मूवमेंट) की शुरूआत की। भारत के सवा सौ करोड़ लोगों को आन्दोलन का हिस्सा बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने खुद हाथ में झाड़ू थाम लिया और अभियान को राजनीति से दूर रखने का ऐलान कर हर नागरिक से आशा जताई कि वह अपने आस–पास स्वच्छता रखेंगे। सफाई को सरकारी अभियान के बजाए जनता के आन्दोलन के रूप में स्थापित करने का भी उन्होंने प्रयास किया।

1. टेलीविजन पर प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान पर कौन–कौन से विज्ञापन आते हैं ? अपने शब्दों में बताइए।
2. व्यक्ति के जीवन में स्वच्छता क्यों जरूरी हैं ?
3. स्वच्छता के संबंध में स्वंय की भूमिका बताइए।
4. सार्वजनिक स्वच्छता के लिए विद्यालय में आपका योगदान लिखिए ।
5. अपने आस–पास स्वच्छता अभियान के लिए आपका क्या योगदान होगा ?

9 ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग

H88YG2

मीता, उसके भैया और माँ, मीता के स्कूल की गतिविधियों पर चर्चा कर रहे थे। तभी मीता के पिताजी आए। उनके पूछने पर मीता ने उन्हें भी अपने स्कूल की बातें बतायीं। पिताजी ने बताया कि वे एक ऐसे कार्यक्रम में गए थे जहाँ एक परिचर्चा हो रही थी। मीता ने पूछा परिचर्चा क्या होती है? तब पिताजी ने बताया इसमें लोग मिल–जुल कर किसी विषय पर बातचीत कर अपनी राय बताते हैं। आज की परिचर्चा उन लोगों के बारे में थी जो तीसरे जेण्डर या ट्रांस जेण्डर कहलाते हैं। मीता के पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसे लोगों में जन्म के समय के जेण्डर (लड़की या लड़का होना) और बड़े होने के बाद के जेण्डर में अंतर हो सकता है। यह भी उतना ही प्राकृतिक होता है जितना हमारा गोरा, काला या सांवला होना। इसमें किसी का कोई दोष नहीं होता। माँ, भैया और मीता की उत्सुकता को देखकर पिताजी ने आगे बताया कि –

- ✶ ऐसे लोगों का पहनावा, बोलचाल, रहन–सहन का तरीका वे जैसे दिखते हैं उससे अलग हो सकता है।
- ✶ ऐसे लोगों की अक्सर समाज में उपेक्षा की जाती है। लोग उन पर हँसते हैं, उन्हें छेड़ते हैं, परेशान करते हैं और उनके लिए गंदी बातें करते हैं।
- ✶ कभी–कभी इनके माँ–पिताजी या रिश्तेदार भी उन्हें अपनाने से मना कर देते हैं जिससे वे बड़ी कठिनाई से अपना जीवन–यापन करते हैं।
- ✶ कभी–कभी परिवार या दूसरे लोगों के बुरे/गलत व्यवहार के कारण ये आत्महत्या भी कर लेते हैं।

भैया ने दुखी होकर कहा– लोग क्यों नहीं समझते कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के साथ जीने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है। हमें सभी के साथ सामान्य और सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए, हो सके तो उनकी सहायता भी करना चाहिए।

पिताजी ने कहा –

- ➢ वे भी हमारे जैसे ही हैं।
- ➢ वे हमारे जैसा सब कुछ कर सकते हैं।
- ➢ उनकी जरूरतें भी हमारे जैसी ही होती हैं।
- ➢ हमें इनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- ➢ उन्हें भी हमारे जैसे सभी अधिकार हैं।
- ➢ वे भी हमारे जैसे ही प्यार, अपनापन और सम्मान पाने के हकदार हैं।
- ➢ उनके साथ भी हमारा व्यवहार इतना अच्छा होना चाहिए जैसा हम दूसरों के साथ करते हैं और अपने लिए चाहते हैं।

मीता और भैया ने कहा –

पिताजी हम इन बातों का हमेशा ध्यान रखेंगे और अपने साथियों को भी बताएंगें।